पंगु

साहित्य अकादेमी पुरस्कार-2021 सँ पुरस्कृत

पंगु

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

ISBN : 978-93-87675-73-5

दाम : 250/-

द्वितीय संस्करण : 2022, (पहिल संस्करण : 2018)

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल), पिन : 847452
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल

PANGU (पंगु)
A Maithili Novel by Shri. Jagdish Prasad Mandal

समर्पण भाव

अपना-ले सभ जीबै-मरै छी
अपने-ले जीबैक लूरि सीखू
अपने-आन आनमे अपने
सम समदाउन गाएब सीखू।
अपना-ले सभ... ।

सम-समदाउनिक गति सीखिते
दिन, दिन-चरिया बनाएब सीखू।
दिने चरिया चरिये दिनक
दिन-चरिया चलाएब सीखू।
दिन-चरिया... ।

सभ चाहैए आगू दौड़ी
दौड़-दौड़ीक रूप बनाएब सीखू।
दौड़ा-दौड़ी करैत-करैत
कुदि समुद्रक टपान सीखू।
कुदि समुद्रक टपान सीखू।
कुदि... ।

1.

मध्य मिथिलाक सीतापुर गाममे हरिचरणक जन्म भेल। जहिना आन-आनक जन्म गुलाम देशमे–माने अंगरेजी शासित देशमे–होइत आबि रहल छल तहिना हरिचरणक पूर्वजोक जन्म होइत आबि रहल छल आ हरिचरणोक जन्म भेल। ओना, गुलामो देश भौगोलिक दृष्टिमे एक्के रंग नइ होइए, ओइ बीच नीकसँ नीको आ अधलासँ अधलो माटि-पानिक गुण रहिते अछि, जइसँ नीकसँ नीको आ अधलासँ अधलो उर्वर शक्ति रहने नीक-अधला दुनूक पैदाइस होइते अछि।

सीतापुर गाम ने राजस्थान सन अछि जैठाम झाड़ीनुमा गाछ-बिरीछ छोड़ि खाली छीपगरे-सरगर गाछ बिरीछ हएत आ ने साइबेरिया सन ठण्ढ मुल्क जकाँ अछि जैठाम काई-लिचेन सदृश बौना गाछ-बिरीछ छोड़ि दोसर कोनो छीपगर-सरगर गाछे नइ हएत।

सीतापुर ओहन मुल्क अछि जैठाम छोट-सँ-छोट आ पैघ-सँ-पैघो गाछ-बिरीछ सभ दिनसँ होइते आबि रहल अछि। ऐठामक माटि-पानि मीठ-सँ-मीठगर फलो पैदा करैए आ सुकाठ-सँ-सुकाठ लकड़ियो दइते अछि। जे कि घरक साज-सज्जासँ लऽ कऽ गामक शोभा सेहो बढ़ौने अछि। तहिना भूमि सेहो ने दू रंगक होइए। एकटा भेल सुभूमि आ दोसर भेल कुभूमि। सुभूमिक माने भेल जीवित भूमि आ कुभूमिक माने भेल मरुभूमि। जेकरा रेगिस्तान सेहो कहै छिऐ। दुनूक अपन-अपन गुण-धर्म सेहो अछिए। ओना, गुणो आ धर्मो अविभक्त वस्तु छी मुदा ओहो जगह

पेब अपन रूप बदैलते अछि। जहिना मिथिलाक उत्तरवरिया सीमा पर्वत शृंखलासँ भरल अछि जैबीच हिमालय पर्वत सन पर्वतो अछि आ कैलाश सन भूमि सेहो अछिए, तैबीच मानसरोवर सन सरोवरो नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। तहिना दच्छिनी सीमाक नदीक समूहक बीच गंगा सन पवित्र नदी सेहो अछि। जैबीच सुलतानगंज, सिमरिया घाट सन अनेको पवित्र घाट- सेहो अछिए।

सीतापुर गामक सिमान सेहो मिथिलेक सीमाक बीच ने अपन सिमान निर्धारित केने अछि। जहिना गामक नाओं 'सीतापुर' अछि तहिना गामक भौगोलिक बुनाबट सेहो अछिए। जइमे सैंकड़ो रंगक फूल-फलसँ लऽ कऽ सैंकड़ो किस्मक अन्नो-अन्नक आ तरकारियोक उपजा-बारी होइते अछि।

ओना, मिथिलांचलमे अनेको धार सेहो बहिते अछि जेकर पानि पवित्र-सँ-पवित्र आ अपवित्र-सँ-अपवित्र सेहो अछिए। ओना, दुनूक पहुँच गंगामे होइते अछि, जइसँ दुनू एकबट्ट होइत पवित्र बनि संगे-संग बहैत गंगासागरमे पहुँच समुद्रमे विलीन भइये जाइए।

हजार बीघा जमीनक आँट-पेटबला गाम सीतापुरमे जहिना सभ रंगक भूमि अछि–ऊँचगर-सँ-निचगर धरि, तहिना ओइ भूमिक उपज सेहो सभ रंगक अछिए। ओना, सालो भरि बहैबला धार, जेकरा चलन्त धार कहै छिऐ ओ सीतापुरमे एकोटा नहि अछि। तँए कि सीतापुर धार रहित गाम अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। सीतापुरमे दूटा धार अछिए। जइमे उत्थर रहने एकटा धार मात्र बरसाते भरि बहैए, जेकरा चौमसिया धार गौंआसँ लऽ कऽ अनगौंआँ तक कहै छैथ। गौंआँ ऐ दुआरे कहै छथिन जे गाममे रहने अपना-अपना आँखिये देखबो करै छैथ आ ओइसँ जे हानि-लाभ अछि सेहो भोगिते आबि रहल छैथ। आ अनगौंआँ ऐ दुआरे कहै छथिन जे आनो-आनो गाम देने होइत ओ धार बनलो

अछिए आ बहितो अछिए। मुदा दोसर जे धार अछि ओ बरहमसिया चलन्त धार तँ नहि छी, मुदा गहींरगर रहने अखाढ़-सँ-अगहन तक बहैत अछि। तँए ओकरा छह-मसुआ धार सभ कहै छैथ। जहिना खेत-पथार अखाढ़मे अन्नसँ आच्छादित होइए आ अगहनमे उसरन भऽ जाइए तहिना ओ धार पहाड़ी पानिसँ लऽ कऽ धरतीक पानिक बीच अपन धार बना बहिते अछि। बर्फसँ बनल पानि जहिना पवित्र होइए, माने ओइमे सुन्नरताक चमक रहै छै, तेकर विपरीत बर्खाक पानिक बहाब होइए, जे मेघसँ बरिस पाथरक स्थानसँ लऽ कऽ माटिक स्थानकेँ धोइ-पखारि बहैए, जइसँ ओकर रंग मटमैल रहैत अछि। मटमैल एक रूप भेल आ गन्दगीसँ भरल गन्दपन दोसर रूप भेल। मटमैल रहनौं बिना गंदपन रहने गन्दा दोसर रूप भेल। खाएर जे भेल जेतए भेल से भेल तेतए भेल। मुदा सीतापुरक बीच जे धार अछि ओ माटि-पाथरक धोन पानिक अछि, तँए ओकरा गन्दा नहियेँ कहल जा सकैए। गेन्दा फूल जकाँ ओकरो आँखिमे चमक छइहे। जइमे बहाउ धारक अतिरिक्त अनेको रंगक जलस्रोत सेहो अछिए।

मिथिलांचलक बीचक गाम ने सीतापुर छी तँए गामक अनेको विशेषता अखनो सीतापुरमे चलिए रहल अछि। गामो तँ गाम होइते अछि। मुदा ओहूमे ने नकोर, सकोर आ कुकोरक गुण सेहो होइए। ओना, तीनू गुणसँ सम्पन्न गाम सभ सेहो अछि आ फुट-फुट गुणबला गाम सेहो अछिए। तइमे आन-आनसँ भिन्न सीतापुर गाम अछि। जहिना हजार बीघा रकवाबला जमीन छै तहिना अठारह गण्डा पोखैर सेहो छै तहूमे जाइठबला। जहिना अठारह गण्डा जाठिबला पोखैर सीतापुरमे अछि, तहिना दूटा नमहर पनिझाउबला आ दर्जनो छोट-छोट पनिझाउबला पोखैर सेहो अछिए, मुदा ओ सभ जाइठ रहित अछि। ओना तहूमे दुनू नमहरका जे अछि ओकरा लोक दैंतक खुनल पोखैर कहैए आ बाँकी छोट-छोट जे रंग-रंगक अछि तेकरा सभकेँ चभच्चा,

कोचाढ़िसँ लऽ कऽ डोह-डाबर कहैए। भाय! भूमि तँ भूमि छी किने, तहूमे सीतापुर गामक, जे कि मिथिलाक मध्य बसल गाम अछि। ऐठामक भूमिक तँ ई गुण ऐछे जे कुइयाँ-इनारक रूपमे जहिना पतालसँ पानि अनैए तहिना खेत-पथारसँ लऽ कऽ अकास धरिक पानिकेँ सेहो संचित करिते अछि। साए-साए बीघाक दूटा चौरी सेहो अछि। जइमे छह-सात मास तक पानिक जमाव रहैए। जइसँ अन्न, फूल, फल उपैजतो अछि आ ओकर रक्षा सेहो होइत अछि। अन्न-फूल आ फल तँ धरतीक ऊपर होइए। ओहन धरतीपर, जइमे पानि आबि किछु दिन पहुनाइ करैत या तँ अकासमे उड़ि कऽ चलि जाइए वा रसे-रसे पताल दिस सटैक कऽ चलि जाइए वा ऊपरसँ टघैर-टघैर ओही नीचला खेतमे- माने चौरीमे चलि जाइए। ओना, अकाससँ धरतीपर उतैर वएह पानि उड़ि-उड़ि अकासो दिस बढ़ैए आ पतालो दिस ससरैत समुद्रसँ सेहो गड़ाजोड़ी करिते अछि। खाएर जे अपना मन फुरै छै से अपन करैए, अनेरे सीतापुरबलाकेँ एतेक हिसाब लइक कोन काज अछि। हमरा सभकेँ ओतबे से ने मतलब अछि जे नीक-नीक माछ उपजए, नीक-नीक सौरखी, करहर आ बर्री[1] उपजए, तैसंग गाए-महींसकेँ नहाइ-पीबैले आ खेत पटबैले पानि भेटए। बस भऽ गेल जरूरतक पुरती..! लोककेँ अनेरे कोन खगता छै जे धरतीए जकाँ पानियोंक ऊपरमे ओछाइन ओछा कऽ सुतबो करत आ बैस-बैस कऽ ताशो भाँजत। कोन खगता छै जे पचीसीक घर बना पचीसियो खेलत आकि कोजगरा-दिवालीक उत्सवे मनौत। तइले तँ धरती अछिए।

सभ किछु रहितो सीतापुर गामकेँ दुश्मनक डर नइ होइ छै, सेहो बात नहियेँ अछि। कोसी-कमलाक बीचबला गामकेँ तँ एते डर छइहे किने जे जँ कहीं कूदि-फानि कऽ कोसीए आकि कमले चलि औत आ गामक माटिकेँ काटि अपन घर बना गामक बासकेँ उपटा देत, ई डर तँ बनले अछि। तहिना मौसमोक डर तँ बनले अछि किने जे उग्र रूप छोड़ि ओहन मरियले रूप ने बना लिअए जइसँ अकाले पड़ि जाए, जँ से भेल

तखन तँ गाछ-बिरीछक संग माछो-कौछ आ गाइयो-महींस ने पियासे परान तियागए लगत। मुदा तैयो हमरा सभकेँ एतेक आत्मबल तँ अछिए जे ज्ञानबलक संग कर्मबलसँ सेहो हम सभ अपन-अपन आत्मबलक रक्षा करिते छी। तँए, आन-आन गामक अपेक्षा हम सभ अपनाकेँ सबल बुझि निर्भय छीहे। निर्भीक बनि अपन गामक रूप-रंगकेँ सजौनहि छी। सजेनौं किए ने रहब? जइ पानिक गति सभदिना अछि ओ जँ खिसिया कऽ रूसबो करत तँ एक साल रूसत, चाहे दू साल आकि तीन साल रूसत सएह ने, मुदा हमसभ तँ बारह सालक रूसलकेँ बौसैक लूरि रखने छी। ओहिना नहि ने गामक नाओं सीतापुर अछि..!

हजार बीघाक सिमानमे बान्हल सीतापुर गाममे जहिना ऊपर-निच्चाँ खेत बनल अछि, जेकरा लोक उपरारि भीठसँ लऽ कऽ मध्यम नीचरस आ चौरी कहैए, तहिना अनेको रंगक माटियो अछि जे नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला अछि। माने अधिक उर्वर शक्तिबला माटिसँ लऽ कऽ कमसँ कम उर्वर शक्तिबला माटि सेहो अछिए। पचीसोसँ ऊपर रंगक माटि गाममे अछि, जेना- खरिआए, मटियार, उस्सर, बलुआही, चिक्कैन, धुसरी, दोरस, तेरस, गाबीस इत्यादि...।

ओना, उपज माटियोक हिसाबसँ होइए आ जमीनक ऊपर-निच्चाँ आकारक हिसाबसँ सेहो होइते अछि। जइसँ धान, गहुम, मरूआ, मकइ, खेसारी, मौसरी, राहैर, केराउ, बदाम, तीसी, सेरसो इत्यादि पचासो रंगक जजाति उपजैत अछि। तैसंग खैहन, दलिहन, तेलहनक अनेको रंगक जिनिसक उपज सेहो होइत अछि। तेतबे नहि, रंग-रंगक तीमन-तरकारी जेना- अल्लू, कोबी, बैगन, टमाटर, झिमनी, रामझिमनी, सजमैन, कदीमा, घेरा इत्यादि सेहो उपैजते अछि। रंग-बिरंगक मात्र अन्ने-तरकारी नहि, पचासोसँ ऊपर रंगक फलो आ फूलोक उपज सेहो होइत अछि। आम-जामुन, लताम-लीची, सरीफा, आँता, बेल, धात्री इत्यादि वृक्षनुमा

गाछक संग झाड़ीनुमा गाछक फल सेहो उपैजते अछि, जेना- नेबो, दारीम इत्यादि। जहिना नमगर-छरगर फलक वृक्ष अछि तहिना बौना किस्मक फलक गाछ सेहो अछि जेना- सरीफा, अनरनेबा इत्यादि-इत्यादि। तेतबे नहि, अन्न-तीमन-तरकारीक संग अनेको किस्मक साग-पातक उपज सेहो होइत अछि, जेना- गेनहारी, ठढ़िया, पटुआ, घौका, लफ इत्यादि। संग-संग लत्तीनुमा तरकारीक अलाबे जहिना गाछनुमा तरकारीक उपज होइए तहिना फूलोक अछि। चम्पा, शिवलिंग, करबीर, अड़हुल इत्यादि जहिना वृक्षनुमा गाछक फूल होइए, तहिना जूही, चमेली, बेली इत्यादि झाड़ीनुमा गाछक होइए आ तहिना लत्तीनुमाक सेहो अनेको फूल फुलाइते अछि...।

मोटा-मोटी यएह कहि सकै छी जे सीतापुरमे जहिना पचासो रंगक अन्न, पचासो रंगक फल, पचासो रंगक तीमन-तरकारीक संग पचासो रंगक फूलोक उपज होइत अछि।

अन्न, फल, फूल, साग-पात आ तीमने-तरकारी जकाँ सैंकड़ो किस्मक माछ सेहो पोखैर-चौरी आ डबरा-कोचाढ़िमे होइत अछि। जहिना रंग-रंगक अन्न तहिना रंग-रंगक माछो होइए। तहूमे सुअदगर-सँ-सुअदगर माछ, जेना- रोहु, भाकुर, गैंची इत्यादि होइए तहिना मध्यम स्वादक- बुआरी आ भुन्ना माछ सेहो होइते अछि। जहिना तीमन-तरकारी आकि फल-फूल रंग-बिरंगक आकारक होइत अछि तहिना माछो अनेक रंगक आ अनेक आकारक होइत अछि। रोहु, बुआरी, भुन्ना आ भाकुर नमहर आकारक माछ होइत अछि तहिना नैन, सौरा इत्यादि मध्यम आकारक माछ सेहो होइते अछि। आ छोट आकारमे कोतरी, इचना, मारा, डेढ़बा, पोठी इत्यादि अनेक माछ अछि। तैसंग माटि-पानिक बीच बसैबला काँकोर, डोका, घोंघी इत्यादि सेहो होइते अछि।

गाए, महींस, बकरी, भेड़ा, घोड़ा, हाथी, गदहा इत्यादि अनेको

रंगक जानवर सेहो होइत अछि। ओना, जानवरो-जानवरमे गुणो आ उपयोगोक दृष्टिसँ अन्तर सेहो होइए। मुदा पालतू जानवर तँ छीहे। अन्ने-फल आ तरकारीए जकाँ किछु जानवर खाइयोबला होइते अछि। तैसंग दुधारूओ आ सवारियोबला नइ होइए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जहिना एक दिस बकरीक दूधो होइए आ दोसर दिस ओकर मौसु सेहो खाएल जाइत अछि। ओना, आरो जानवर सबहक मौसु खाएल जाइए, मुदा किछु एहेन जे दुधारूए रूपमे अछि, जेना- गाए-महींस इत्यादि। तहिना किछु एहनो अछि जे सवारियेक उपयोगमे अबैए, जेना- घोड़ा, हाथी...। ओना, घोड़ाकेँ मनुखक सवारीक संग चीजो-वौस उघैक काजमे आनले जाइए। तहिना गदहो अछिए, जे मनुखक सवारीमे तँ कम-सम्म उपयोग होइए मुदा वस्तु-जातक लेल बेसी होइए। तहिना गाइयोक अछि, मादा पक्ष जहिना दूधक काजमे अबैए तहिना नर पक्षसँ हरक संग गाड़ियो जोतैक काजमे लगौले जाइए। तैसंग कुत्ता-बिलाइ सेहो अछि जेकर उपयोग ऐछो आ नहियोँ अछि।

जहिना अनेको रंगक घरैया जानवर अछि, माने पोसै-पालैबला जानवर तहिना अनेको रंगक बोनैया जानवर सेहो अछिए। ओना, सीतापुर गाममे हाथी, बाघ, सिंह, भालु सदृश जानवरक बसै-जोकर वन तँ नइ अछि मुदा बोन-झाड़ ऐछे नहि, सेहो केना कहल जाएत। भलेँ ओहन वन नइ हुअए जइमे हाथी, सिंह अपना अधिकारे, अपन पूर्ण स्वतंत्रताक संग सिंहभूमिक बोन जकाँ आकि असामक बोन जकाँ नइ बसि सकए, मुदा तँए कि ओइ बोनैयाकेँ पालल-पोसल नइ जाइए सेहो बात नहियेँ अछि। हँ! एकरा ऐ रूपमे देख सकै छी जे जहिना हाथी बोनोमे बास करैबला अछि, तहिना गृहवासूओ छीहे। तहिना हरीनक सेहो अछि। ओना, जहिना पालतू गाए अछि तहिना बोनैया गाए सेहो अछि मुदा ओइ गाएकेँ 'नील गाए'क नाओंसँ जानल जाइए। नीलो गाइक संख्या कम अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। आन गाममे जेते

हुअए वा नइ हुअए, मुदा सीतापुर गाममे नील गाइक संख्या पोसैबला गाएसँ बेसीए अछि। जँ नइ अछि तँ गामक हजार बीघाक खेतक उपजा केना खा जाइए? जँ ओकरो पकैड़ कऽ दुधारू गाए बनौल जाए तँ अनेरे ने गाममे दूधक बाढ़ि भदवरिया पानिक बाढ़ि जकाँ दूधेसँ भरि जाएत। मुदा केते लोक खेबे करत, तहूमे आब सीतापुरक लोककेँ तेतेक ने मोबाइल, टी.भी, कम्प्यूटर-सभ भऽ गेल अछि जे दुहै-औंटैक छुट्टी छइ। आब तँ बजारेक रेडीमेड दूधक पैकेट आनि आसानीसँ अपन काज चला लइए। एक दिस आँखि मोबाइलपर देने रहैए आ दोसर दिस अन्दाजेसँ बर्तनमे उझैल तीनकेँ तेरह करैए आकि तेरहकेँ तीन करैए आकि की करैए से तँ ओ जानए, मुदा एना नइ करैए सेहो केना नइ कहल जाएत। किए लोक अनका-ले भोरे-भोर झूठ बाजत। खाएर जे अछि से गाममे अछि, गामक बात भेल। अपन गामक कुचिष्टा करब पातकिये लोकक काज भेल। हम ओहन छी नहि, तँए खाली सपनौतीए कहलौं, देखनौती आकि करनौती बनि नहि कहलौं।

सीतापुर गाममे जहिना घरबास अछि तहिना वनबासो अछिए। वनो तँ वन छी, जेकर माने भेल अधिक संख्याक समूह। जहिना वृन्दावन वृन्द लोकक वन छी, जइमे कृष्ण लीला केलैन तहिना रामो जइ वनमे चौदह बरख बितौलैन, जेकरा तत्काल रामवन कहि सकै छी, सेहो तहिना अछिए। गाछ-बिरीछक वन सेहो होइए। जइमे फलो-फूल लगैए आ सुगन्धित वृक्ष रहने सुगन्धक उपयोगमे सेहो अबैए आ इमारती वृक्षसँ घरक साज-सज्जा सेहो बनौले जाइए। तहिना ओहन वृक्षक वन सेहो अछिए जे मीठ-सँ-मीठगर फल दइए। गाछे-बिरीछ जकाँ घरोक वन होइए, किएक तँ ओहो समूह रूपमे रहैए आ ओइमे रहैबला मनुखोक वन तँ कहले जा सकैए। खाएर जे अछि कि नहि अछि मुदा फलदार वृक्षक वन तँ परियाप्त अछिए। एक बेर चतुराबाबू– चतुरानन मिश्र जे भारत सरकारक पूर्व कृषि मंत्री रहैथ, पोलैंड गेला। पौलैंडमे फलक अनेको

किस्मक उपज होइए, पोलैंडक सुप्रीमक संग जखन बैसला आ देशक बड़प्पनक बात उठल तँ पोलैंडक सुप्रीमक विचारक ऊपरमे अपन विचार लदैत चतुराबाबू बजला-

‘हमरा देशक कनौसियो-बरबैर अहाँक देशमे फलक उत्पादन नइ अछि!’

चतुराबाबूक बात सुनि पौलैंडक सुप्रीम अपन नजैर उठौलैन। उठल नजैर देख चतुराबाबू बजला-

‘ओना नहि फरिछाएत। एक फलक एक किस्मक नाओं अहाँ बाजू आ एकटाक नाओं हमहूँ बाजब। अनेरे ने अन्तो-अन्त फरिछा जाएत।’

पौलैंडक सुप्रीम राजी भेला। गिनती शुरू भेल। पहिने ओ अपन एकटा फलक नाओं बजला। तैपर चतुराबाबू कहलखिन-

‘आम।’

फेर ओ दोसर बजला। पुन: चतुराबाबू कहलखिन-

‘आम।’

अहिना जखन सात-आठ बेर ‘आम’ कहलखिन। लगातार आमे-आम सुनि पोलैंडक सुप्रीम चौंकैत पुछलखिन-

‘अहाँ खाली आमे-आम कहै छिऐ, दोसर-तेसर कहाँ कहै छिऐ?’

तैपर चतुराबाबू मुस्की दैत जवाब देलखिन-

‘हमरा ऐठाम गाछोक रंग-रूप, फलोक रंग-रूप आ सुआदो-गुणक हिसाबे आमक एतेक किस्म अछि। तैसंग आमे जकाँ आन-आन जामवन्तो फलक वन अछि।’

हजार बीघाक सीतापुरमे चारि आकारक भूमि अछि। पहिल आकारक जे ऊँचरस भूमि अछि, ओकरा उत्तम कोटि भूमि मानल जाइए। ऊँचरस भूमि प्राय: बासक उपयोगमे अछि, तँए ओकरा

बासभूमि सेहो कहै छिऐ। ओना, केतेको गाममे बालुक ढेरसँ टीलानुमा ऊँचगर भूमि सेहो अछि, मजबुरिये ओइठामक लोक ओहूपर घर बनैबते छैथ मुदा ओ घटिया[2] माटिक भूमिक बास भेल, से सीतापुरमे नहि अछि। सीतापुरक अधिकांश बासभूमि करिया माटिक अछि, तँए ओ नागभूमि सेहो कहाइत अछि। दोसर आकारक जे भूमि अछि ओ आकारक हिसाबसँ तँ बासे भूमि जकाँ अछि मुदा ओकर उपयोग ओना घरो बनबैमे भइये सकैए मुदा से नहि, ओइमे लोक गाछी-कलम लगबैक संग अन्न, तीमन, तरकारी लगबै छैथ। जेकरा चौमासो कहै छिऐ आ भीठ सेहो कहल जाइत अछि। तेसर अछि नीचरस भूमि, माने गहींर जमीन जेकरा धनहरो कहै छिऐ आ गोरहा सेहो कहै छिऐ। गोरहामे बरसातक समय पानिक बास भऽ जाइए जइ कारणे ओइमे तीमन-तरकारी आकि गाछ-बिरीछ लोक नइ लगबै छैथ। ओइमे खाली पनिसहू अन्न जेना-धान होइए।

ओना, बारह मासक सालमे मात्र तीनिए-चारि मास ओइमे पानि बसैक सम्भावना रहै छै, बाँकी समय ओहो सुखले रहैए। ओहूमे आन-आन अन्नो आ तीमनो-तरकारीक खेती होइते अछि। चारिम आकारक भूमि ओहन अछि जइमे बारहो मास पानिक बास रहैए। ओना, आन गाम जकाँ सीतापुरमे एहेन भूमि नहि अछि, मुदा छह मास पानिक बासबला भूमि नहि अछि सेहो तँ अछिए। खाएर जे अछि जेहेन अछि से अछिए, मुदा आठ साए परिवारक घरो आ भोजनो तँ ओही हजार बीघासँ प्राप्त होइत रहल अछि। ओना, किछु गोरे बाहरसँ अन्न खरीद कऽ सेहो अनै छैथ, तँ किछु गोरे बहरबैयाक हाथे बेचबो तँ करिते छैथ। तँए दुनूक जोड़-घटाव भेने बराबर भेल।

सीतापुर मिथिलांचलक अदौक गाम छी, नवघरिया वस्ती नहि। ओना, कोसी-कमला धारक भीरमे नवघरक वस्तियो अछिए, मुदा ओहो

नवघरिया गाम तँ नहियेँ भेल। ओना मनुखक पीढ़ी बदलने बुझिमे तेहेन आबिए सकैए। मुदा छी ओहो मिथिलांचलक प्राचीने गाम, जे कोसी-कमला धारक कटनियासँ कटि गेल आ धारकेँ घुसकने पुन: गाम बसि गेल। तँए, कोसी-कमलाक कटिनियाँ दुआरे गामक इतिहास हेरा जाएत सेहो तँ उचित नहियेँ भेल। भलेँ ओकरा 'नवघरिया गाम' नहि कहि 'पुनर्वास गाम' कहि सकै छिऐ। मुदा तहूमे एकटा बाधा उपस्थित भइये गेल अछि। ओ ई जे गामक नाउए बदैल दोसर-तेसर नाओं रखि देल गेल अछि। खास कऽ नवटोलक नाओंसँ कएटा नवटोल गामे भऽ भऽ गेल अछि। खाएर जे अछि, जेतए अछि से अछि तेतए अछि। मुदा सीतापुर अदौक गाम छी, जेकर रूप अखनो ओहिना झलैक रहल अछि। से दुनू दृष्टिये, घरक रंग-रूपक दृष्टिये सेहो आ मनुखक दृष्टिये सेहो। घरक दृष्टिये सीतापुरमे जहिना अदौमे गामक घर-दुआर घास-पात आ खरही-बाँससँ बनैत छल तहिना अखनो ओगरबाह-रखबारक संग गरीबक घर अछिए। अखनो ओहने घर बनैए, जइमे बरसातो आ शीतलहरियोमे लोक बास करिते छैथ। तँए कि गाममे पक्का मकानक दू-मंजिला, तीन मंजिला घर नहि अछि सेहो अछिए। सभ तरहक सुख सुविधा- पानि-बिजलीक संग हवा-ले पंखा, भोजन बनबैले गैस चुल्हि वा बिजली चुल्हिसँ सम्पन्न अछि। मुदा तँए कि सीतापुरमे लकड़ीक जारैन वा गोबरक गोरहा-गोइठा आकि गाछक-पातसँ भानस नइ होइए, सेहो होइते अछि। तहिना बिजली पंखाक जगह ताड़क पातक पंखा, डोमौआ बिअनि नइ अछि, सेहो अछिए। तेतबे नहि, बिजलीक इजोतक जगह लालटेन, लेम्प, डिबियाक उपयोग सेहो होइते अछि। तहिना पानिक इनार-पोखैर सेहो अछिए। भलेँ गाममे टंकी आ चापाकल सेहो अछि, मुदा सौंसे गाममे नहि। खण्डित गाममे जरूर अछि। जइसँ कखनो बिजलीसँ तँ कखनो गैस चुल्हिसँ गाम खण्डित होइते अछि। ओना, आरो-आरो बहुत एहेन चीज अछि जइसँ गामकेँ खण्डित रूपमे देखल जा सकैए जेना- शिक्षा,

स्वास्थ्य इत्यादि-इत्यादि, मुदा अखन से सभ नहि अखन मात्र एतबे।

एक दिस जहिना दू-तल्ला, तीन-तल्ला नमगर-चौड़गर पक्का मकान अछि तहिना दोसर दिस छोट-छोट एक-तल्ला मकानक संग भीतघर, टटघर सेहो अछिए। समुद्रे जकाँ ने गामो होइए। समुद्रमे जहिना नमहर-नमहर माछ-कौछु होइए तहिना ने नमहर-नमहर गोहि, नकार, सोंसक संग आनो-आन जल-जानवर सभ सेहो रहिते अछि, जे मनुखोकेँ खाइत अछि।

हजार बीघा जमीनबला सीतापुर गाममे आठ साए परिवारक बास अछि। आठो साए परिवारक बीच पाँच हजार लोक छैथ। माने सीतापुरक आबादी पाँच हजार अछि। ओना, आठो साए परिवारमे ने एके-रंगक[3] लोक अछि आ ने एके रंग खेत-पथार अछि। ओना, लूरि-बुइधिक हिसाबसँ सेहो अन्तर अछिए, मुदा से अखन नहि। अखन खाली जनसंख्या आ सम्पैतक[4] हिसाबसँ जे भेद अछि मात्र तेतबे।

सीतापुरमे जहिना अदौमे संयुक्त परिवार छल तहिना अखनो अछि मुदा से अछि मात्र पाँचेटा परिवारमे। ओना, ई कहब जे सभ दिनसँ पाँचेटा ओहन परिवार रहल से बात नहि अछि। पहिलुका हिसाबसँ ओइमे कमियो आएल आ बढ़ोत्तरियो भेल, जे अखन दस-बारह परिवारपर आबि अँटकल अछि। ओना, ओहू परिवारमे सभ तरहेँ एकरूपता नहियेँ अछि, किछु-किछु जहिना समता अछि तहिना विषमता सेहो अछिए, मुदा किछु अछि संयुक्त परिवार तँ अछिए।

सीतापुरमे पाँचटा ओहन संयुक्त परिवार अछि जइ परिवारमे गामक तीस प्रतिशत जमीन अछि। ओना, ओहू तीस प्रतिशत खेत-पथारमे पाँचो परिवारकेँ एकेरंग नहियेँ अछि, कम-बेस अछिए। सभ तरहेँ ओ पाँचो परिवार भरि गाममे नीक मानल जाइत अछि। जहिना घर-दुआर तहिना बास-अगवास आ तहिना गाछी-कलम, बाड़ी-फुलबाड़ीक

संग अन्न-तीमन, फल-फलहरी उपजक हिसाबसँ सेहो बेसियो अछि आ नीको अछि। बाँसक बीट जकाँ ओ परिवार सघन अछिए। सघनो केना ने रहत, आमक गाछ जकाँ बाँस थोड़े होइए जे सदिकाल असगरे रहए चाहत। आम-कटहर इत्यादिक गाछ एकपुरखिया होइए, तेकर कारणो अछि जे ओ माटिपर एकटा रहितो जेना-जेना निच्चासँ ऊपर जाइए, तेना-तेना डारि फुटैत सघन होइत मेघ डम्बर जकाँ चतैर जाइए, जइसँ दोसराक चतरब बाधित भऽ जाइ छइ। तैसंग नमहर भेने ओकर माटिक निच्चाँमे सिरो तेहेन भऽ जाइ छै जे दोसराक वृद्धिकेँ रोकि दइए। मुदा बाँस से नहि अछि, ओ तँ केरा-खरही जकाँ जहिना निच्चामे माटिपर रहैए तहिना अपना ऊपर चतरल पातकेँ सेहो ऊपर उठबैत जाइए, जइसँ ऐगला पीढ़ीकेँ अपन वृद्धिमे बाधा नइ भेने ओहो बढ़िते अछि। दोसर कारण ईहो अछि जे आम-कटहर ओहन नपुंसक सन्यासी जकाँ होइए जेकरा सन्तानोत्पत्तिक शक्ति रहितो ओकर रूपे बदैल जाइ छै। माने भेल जे आम-कटहरकेँ सन्तानोत्पत्तिक जे रस्ता छै तइमे पहिने फूल होइए, जेकरा बीच फड़ होइ छै आ ओइ फड़क बीच बीआ होइ छै, जइ बीआसँ गाछ होइए। तँए अपना शरीरमे, माने अपन गाछमे सन्तान उत्पत्तिक शक्ति रहितो शरीरसँ वंशक वृद्धि नइ कऽ पबैए। मुदा से अवगुण बाँसमे नहि अछि। ओना, केरे-खरही जकाँ बाँसोमे एहेन अवगुण अछिए जे फूल-फड़ होइतो ओकरा उत्पादित शक्ति नइ छइ। दोसर बात ईहो अछि जे जहिना आम-कटहरक औरुदा बेसी अछि तहिना बाँसोक छइ। जहिना बाँस साल भरिक पछाइत धिया-पुता जनमाबैए, माने कोंपर दइए, तहिना आमो-कटहर साल भरिमे तँ नहि, मुदा पान साल पुरैत-पुरैत ओकरोमे धिया-पुता जनमाबैक शक्ति आबिये जाइ छै, आबिये नइ जाइ छै, जनैमतो छइ। तैबीच एहेन अन्तरो तँ अछिए जे कौआ-मेना जकाँ बाँस अपन अण्डाकेँ सेबैत बच्चोक आँखि फोरि संग छोड़ैए, मुदा आम-कटहरक बीच लोकक प्रवेश भेने, माने ओकर बीआकेँ रोपैक क्रिया भेने,

बाँस जकाँ सम्बन्ध नहि रहैए। ओना, औरुदाक हिसाबसँ आमे-कटहर जकाँ बाँसोक औरुदा देखैमे नइ अबैए मुदा जैठाम आम-कटहरमे पाँच सालक पछातिये फूल-फड़ होइ छै तैठाम बाँस महान साधक जकाँ भऽ जाइए, किएक तँ बाँसमे चालीस बर्खक पछाइत फूल-फड़ होइए। खाएर जे होइए, जेकरामे होइए से होइए तेकरामे होइए। अनेरे बाँस-गाछक हिसाबमे लोक किए पड़त जे ओइ चालीस बर्खक बाँसक फूल-फड़सँ आम-कटहर जकाँ गाछो होइ छै की नहि होइ छइ।

पाँचो संयुक्त परिवारमे जनसंख्यो आ ओकर गुणोमे अन्तर अछिए। जनसंख्याक हिसाबसँ जहिना दू परिवार सघन बोन जकाँ बुझि पड़ैए, माने पचाससँ ऊपर जनसंख्या दुनूक परिवारक रहने, तहिना जे शेष तीन परिवार अछि ओहो तीन रंग अछि। दू परिवार ओहन अछि, जेकरा समाजमे एकपुरखिया परिवार कहल जाइए, ओ पाँच पुस्तसँ एकठाम संयुक्त रूपमे रहितो पाँचे पुरुख आ पाँचे नारीक बीच बनल अछि। ओना, बेटाक बाढ़िमे घटबी भेने असगरुआ होइत गेल, जखन कि बेटीक बाढ़ि तँ भेबे कएल। जे अपन पिताक परिवार छोड़ि-छोड़ि सासुर बसैत गेली जइसँ संयुक्त परिवार पतराएले रहल।

गुणक हिसाबसँ सेहो पाँचो परिवारजनक बीच अन्तर अछिए। दू परिवारक लोक ओहन अछि जे किसानी जिनगीसँ जुड़ल रहल, जइसँ किसानी लूरि-बुधि तँ जरूर भेलै मुदा से खेत उपजबैक लूरि धरि सीमित रहि गेल। बाँकी तीन परिवारमे दू परिवारक हिसाब-किताब एकरंगाह रहने एकरंगाहे रहल, मुदा एक परिवारक वृद्धि अगिया-बताल जकाँ भऽ गेल अछि। अगिया-बताल ई जे जहिना शास्त्र-पुराणकेँ धँगनिहार सभ छैथ तहिना ज्ञान-विज्ञानकेँ सेहो धाँगैत आबि रहला अछि, तँए गामक सभ परिवारसँ देखबोमे आ चालियो-ढालिमे अन्तर बुझि पड़िते अछि। गामोक लोक सभ आ अड़ोसी-पड़ोसी, ओइ पाँचो परिवारकेँ अगुआएल

बुझिये रहल छैन।

सीतापुर गामक दू साए परिवार ओहन अछि जेकरा बीच गामक पाँच साए बीघा जमीन अछि। ओना, ने सभ परिवारकेँ एके रंग जमीन छै आ ने परिवारे एकरंगक अछि। ओ दुनू साए परिवार किसान परिवारक रूपमे जानलो जाइए आ अपनो बुझैए। किछु परिवारकेँ पाँच बीघासँ दस बीघाक बीच जमीन छै जे जन-बोनिहारक हाथे अपन खेती करैए, बाँकी परिवारकेँ दस कट्ठासँ पाँच बीघाक बीच खेत छै जे बेर-बेगरतामे जनो-बोनिहारक उपयोग करैए आ अपनो हाथे खेती-बाड़ीक संग मालो-जाल पोसैए। शेष जे छह साए परिवार अछि ओकरा बीच मात्र दू-साए बीघा जमीन छइ। किछु परिवारकेँ अपन बासो भूमि नहि छै आ किछु परिवारकेँ बास भूमि छइहो तँ जोतसीम जमीन नइ छइ। तहिना किछुकेँ बास भूमिक संग दस कट्ठा-पाँच कट्ठा जोतो जमीन छइ। ओना, ओ सभ खेत-मजदूरक रूपमे जानल जाइए, जे गामोक किसानक खेतमे काज करैए आ मौका-कुमौका पूभर सेहो चलि जाइए। पूभरक माने भेल-आसाम, बंगाल। पूभर ओ सभ दू सिजिनमे जाइए। डेढ़ मास, दू मास ओतए रहैए आ ओमहरसँ कमा कऽ आनि परिवार चलबैए। अखन जे चर्च भऽ रहल अछि ओ देशक आजादीसँ पूर्वक, माने 1947 इस्वीसँ पहिने आ 1940 इस्वीक पछातिक। ओइ समैयक बोनिहार पंजाब नइ देखने छला।

जहिना रंग-रंगक जाति आन-आन गाममे अछि तहिना सीतापुरमे सेहो अछि। ओना, कोनो गाम एहेन नहियेँ अछि जइ गाममे सभ जाइतिक लोकक बास हुअए, आ ने कोनो गाम एहेन अछि जइमे खाली एक्के जाइतिक लोक बास करैत होथि। तँए जाइतिक आधारपर एक जाइतिक एक्कोटा गाम नहियेँ अछि। किछु जाति कोनो गाममे अछि आ कोनो गाममे नहियोँ अछि। खाएर जे जेतए अछि, मुदा सीतापुर गाममे पच्चीस-छब्बीस रंगक जाति अछि। जाइतिक हिसाब जेना सभ बुझिते

छी जे उच्च जाति, मध्यम जाति आ निम्न जाइतिक रूपमे जाति सभ अछि, तइ हिसाबसँ सीतोपुरमे सभ जाति छथिए।

आने गाम जकाँ सीतापुरक लोक सेहो छैथ जे खेती-पथारीक संग आनो-आन वृत्ति करै छैथ। किछु नोकरिहारा छैथ, तँ किछु पुरहित-पुजेगरी सेहो छैथ आ अधिकांश जाति ओहन छैथ जे अपन जातीय वृत्तिकेँ अपनौने छैथ। जेना केशकट्टीक काज नौआ करै छैथ, कपड़ा धोइक काज धोबी करै छैथ, लकड़ीक काज बरही, लोहाक काज लोहार, बाँसक बरतन बनबैक काज डोम करै छैथ आ माटिक बरतन बनबैक काज कुम्हार करै छैथ। इत्यादि-इत्यादि जातीय वृत्ति आने गाम जकाँ सीतापुरक लोक सेहो करिते आबि रहल छैथ।

आइसँ आठ साए बर्ख पूर्व सीतापुर गामक नामो-निशान नइ छल। शुरूमे माने आठ साए बर्ख पूर्व, मात्र दू गोरे अपन परिवारक संग सीतापुर गाम एला। एक-दोसरसँ दुनू अनठिया छला। गामक भूमि सोहनगर छेलैहे, तैसंग कटनियाँ धार-धुरसँ सेहो हटल रहबे करए। ओना, छोट-छोट दूटा धार तँ रहबे करइ। जइमे एकटा मरने जकाँ छल आ दोसर बहता छेलइ। ओही धारक महारपर दुनू परिवार अपन-अपन रहैक ठौर बनौलैन। दुनू परिवारकेँ एकठाम बसने चिन्हा-परिचय सेहो भेल। एक गोरे किछु विशेष होशियार छला आ दोसर परिवारक दोसर गोरे ओइ हिसाबे कम होशियार छल। जिनगी तँ दूनूक एकरंगाहे छेलैन। दुनू परिवार अपन-अपन जीविकोपार्जनक लेल किछु भूमिक उपयोग सेहो करए लगला। मोटा-मोटी हुनका सबहक जीविकाक साधन छेलैन साग-पातक संग छोट-छोट जानवरक मांस आ गाछक फल इत्यादि। पानि पीबैक साधन घरक आगूए-मे बहता धार छेलैहे। घास-फुसक घर बना दुनू परिवार रहए लगला। जेना-जेना समय बीतैत गेल तेना-तेना दुनू परिवारसँ सेहो परिवार बढ़ल आ देखा-देखा आन-आन ठामसँ सेहो

कएटा आरो परिवार आबि-आबि बसल। ताधैर गामक नामकरण सीतापुर नइ भेल छल। जखन एक-दोसर गामक परिचय भेल तखन आपसमे सबहक बीच सम्बन्धो बढ़ल। मोटा-मोटी जंगली जीवनसँ किसानी जीवन दिस उन्मुख भेल। गाममे लोक अबैत गेल आ अपन-अपन जीवनो-यापन आ रहैयो-सहैयोक ठौरक ओरियान करए लगल।

दरभंगा राजक द्वारा 1861 इस्वीक बाद राज्यक इलाकामे किछु विद्यालयक स्थापना भेल। एहेन विद्यालय करीब 26 टा बनल। ओही लाटमे एकटा विद्यालय सीतापुरमे सेहो बनल। जइमे किछु परिवारक धिया-पुताक प्रवेश लेलक। प्रवेश लेनिहारमे बेसी उच्च जाइतिक परिवारक धिया-पुता छल। तैसंग मध्यम श्रेणीक जाइतिक बच्चा सेहो प्रवेश केलक मुदा बहुत कम संख्यामे। मुदा निम्न जाइतिक, जेकरा हरिजन कहै छिऐ हुनका सबहक धिया-पुताक प्रवेश स्कूलमे नहि भेल। ओना, शताब्दीक अन्त होइत-होइत विद्यालय टुटि गेल। जे भेल से भेल मुदा किछु परिवारमे विद्याक आगमन तँ भइये गेल। जइसँ धीरे-धीरे पढ़ै-लिखैमे वृद्धि भेबे कएल।

सीतापुर गामक आठ साए परिवारमे डेढ़ साए परिवार उच्च जाइतिक अछि। उच्च जाइतिक माने भेल- ब्राह्मण, राजपुत, कायस्थ आ भूमिहार। ओहू उच्च जातिमे कायस्थ नहियेँ छैथ, बाँकी तीन जातिमे राजपुतक संख्या सभसँ कम आ भूमिहारक संख्या राजपुतसँ बेसी आ ब्राह्मणसँ कम अछि। तीनूमे सभसँ बेसी ब्राह्मण छैथ। शिक्षाक प्रचार-प्रसारमे अनुपातक हिसाबे तीनू एकरंगाहे भेला मुदा संख्याक हिसाबसँ ब्राह्मण बेसी भेला।

मध्यम श्रेणीक जे जाति अछि ओकर संख्या, जातियोक हिसाबसँ आ जनसंख्योक हिसाबसँ बेसी अछि। जहिना उच्च जातिमे तीन जाति अछि, तहिना मध्यम जाइतिक संख्या करीब बीस अछि आ निम्न

जाइतिक, माने- हरिजनक संख्या जहिना जाइतिक हिसाबसँ मात्र चारि अछि तहिना जनसंख्याक हिसाबसँ सेहो कम अछि। ओहूमे चारि जातिमे मुसहरक संख्या बेसी अछि बाँकी तीन जाइतिक संख्या कम अछि। ओहू चारूमे आर्थिक दृष्टिये दू जाति–दुसाध आ चमारक बीच अपन घर-घराड़ीक संग किछु जोतसीमो जमीन छै आ गाछियो-बिरछी छै मुदा दू जाइतिक बीच–डोम आ मुसहरक बीच, अपन जमीन नइ छइ। शुरूमे जखन दुनू जाइतिक प्रवेश सीतापुरमे भेल छल तखन गामक आधासँ बेसी जमीन परतिये-परात छेलै, जेकर कियो ने मालिक छल, ओहीमे ओ सभ बसल। ओना, वृत्तिक हिसाबसँ डोम मुसहरसँ अगुआ गेल। किएक तँ डोम मवेशी पालनकेँ[5] अपन जातीय वृत्ति बनौलक, तैसंग बाँसक वस्तु-जात सेहो बनबए लगल, जेकर जरूरत लोककेँ छेलैहे, मुदा से मुसहरकेँ नहि भेल। ने जातीय वृत्तिक हिसाबसँ कोनो निसचित काज मुसहरकेँ भेल आ ने खेतीए भेल। ओना, छोट-छीन कारोबार-पशुपालनक जरूर भेल से भेल बकरी पोसब। ओकरा सबहक सोल्होअना जीवन बोनिये-बुत्तापर रहल, जे अखनो अछिए।

आने गाम जकाँ सीतापुरक जमीनक अधिकार सम्बन्धी इतिहास सेहो अछि। ब्रिटिश राज[6] भारतमे जमीनक बन्दोवस्त 1793 इस्वीमे केलक। जइ प्रावधानक मुताबिक राजस्व[7] संग्राहककेँ[8] जमीनक मालिक बना देल गेल। अही तरहेँ जमीन्दारीक प्रथा शुरू भेल। ओना, तइसँ पहिनौं राज दरभंगा द्वारा जमीनक मालगुजारी ओसलल जाइ छल, तँए ओइ प्रावधानकेँ राज दरभंगा विरोध केलक। ओना, ई दीगर बात भेल जे मालगुजारीमे एकरूपता ने पहिनहि छल आ ने पछातिये रहल। उच्च जाइतिक ओहन जमीनक मालगुजारी कम छेलइ। जेहने जमीनक मालगुजारी मध्यम श्रेणीक जाइतिक लेल बेसी छल। तैसंग ईहो जे ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ आ मुसलमानकेँ विवाहदानी टेक्स नहि लगैत रहै, जे आन जातिकेँ लगैत रहइ। विवाहदानी टेक्सक माने भेल- लड़का-

लड़कीक बिआहक टेक्स। जिनकर बेटीक बिआह हेतैन हुनका सबा रूपैआ आ जिनकर बेटाक बिआह हेतैन हुनका दसअना टेक्स दिअ पड़ैन।

आने गाम जकाँ सीतापुरमे सेहो गामक आधारपर एक समाज बनल आबि रहल अछि, मुदा समाजक भीतर शुरूए-सँ बिखण्डनक रूप सेहो चलैत आबि रहल अछि। ओ बिखण्डनक रूप अछि- जाति-धर्मक बेवहार। ओना, जँ जातिकेँ मनुख जाति आ धर्मकेँ जिनगीक तृप्तिक हिसाबसँ देखल जाए तखन भेद-भावक कोनो बेवहारिक पक्ष नहि रहैत। मुदा से तँ अछि नहि, जाति-जाइतिक बीच निच्चाँ-ऊपर सीढ़ीनुमा खाँच बना देल गेल अछि, जइसँ एक-दोसरमे भेद अछि, ओ भेद सिर्फ वैचारिके क्षेत्रटा मे नहि अछि, बेवहारिक क्षेत्रमे सेहो अछिए। तहिना धर्मोक अछिए। रंग-रंगक देवी-देवताक सृजन कए जाइतिक बीच बँटवारा कऽ देल गेल अछि, जेकर परिणाम अछि जे एक-दोसरमे एतेक दूरी बनि गेल अछि जइसँ एक-दोसरमे जे सामाजिक सरोकार हेबा चाही ओ मेटा गेल अछि। तेतबे नहि, मनुखे जकाँ देवी-देवतामे सेहो छूत-अछूतक बेवहार बनि गेल अछि। फलस्वरूप जाति-धर्मक प्रभाव समाजपर एतेक पड़ि गेल अछि जे ऊपर-सँ-निच्चाँ तक खाधि बनि गेल अछि। तेकर फलाफल एक-दोसरकेँ निच्चाँ देखबैक खियालसँ अधिक काल गाम-गाममे झगड़ा-झंझट होइते रहैत अछि।

देश स्वतंत्र भेला पछातियो आ पहिनौं शासन क्रियाक ओहन रूप रहल जे सौंसे समाजक हिसाबसँ, माने समुच्चा गामक लेल ने कोनो योजना बनैए आ ने कोनो काज होइए। जइसँ समाजक किछु लोक सुविधा सम्पन्न छैथ, बाँकी सुविधा हीन। फलाफल गाम-गामक समाजमे विघटनक वातावरण बनैत रहल अछि। विघटनक वातावरण आने गाम जकाँ सीतापुरमे सेहो अछिए। मुदा किछु अछि तँए कि सीतापुरक सामाजिक सम्बन्ध नइ अछि, सेहो केना नइ कहल जाएत। किछु

मामलामे एकमुहरी सम्बन्ध अछिए। जँ केकरो घरमे आगि लगै छै तँ सौंसे गामक लोक मिझबैले जाइते अछि। तैठाम जातीय छूआ-छूत, भेद-भाव मेटाएल रहैत अछि। मुदा लगले जखन गाममे कोनो सामाजिक वा धार्मिक क्रिया-कलाप होइत अछि तखन ओ भेद-भाव नीक जकाँ जागि कऽ जगजिआर भऽ जाइए। तहिना बिआह-दान आ भोज-काजमे सेहो नीक जकाँ जातीय बन्धन जगले अछि। मुदा तँए कि कियो अपनाकेँ सीतापुरबला कहब छोड़ि देने अछि, सेहो बात नहियेँ अछि।

देशक आने भाग जकाँ मिथिलांचलमे सेहो अंगरेजी शासनक विरूद्ध आन्दोलन चलिये रहल छल। आन्दोलनकर्तामे दू रंगक विचार नीक जकाँ उजागर भेल। एक पक्षक विचार छेलैन जे अंगरेजी शासककेँ देशसँ भगाएब। जे रंग-रंगक शोषणो करैए आ जनताक बीच जोर-जुल्म सेहो करैए। ओना, अंगरेजी शासक दू रूपक हथियारक प्रयोग करैत छल। एक तँ शासन सूत्र ओ सभ अपना हाथमे रखने छल, तैसंग देशक भीतर जे राजा-रजबार छला तिनका सभकेँ शोषणक हथकण्डा बनौने छल। हिनके सबहक माध्यमसँ अनेको तरहक शोषण करैत छल। अनेको तरहक शोषणमे प्रमुख छल आर्थिक शोषण। तँए आन्दोलनकारीक दोसर पक्ष जे छला ओ अंगरेजक संग देशी राजा-रजबार आ जमीन्दारक विरोधमे सेहो ठाढ़ भेला।

1935 इस्वीक लखनऊ अधिवेशन–माने काँग्रेस अधिवेशनमे खुलि कऽ दू ग्रुपमे आन्दोलनकारी विभाजित भऽ गेला। गाँधीजी जे अखन तक आन्दोलकारीकेँ एक सूत्रमे बान्हि नेतृत्व करैत आबि रहल छला ओहो विभाजित भऽ दू ग्रुपमे बँटि गेल। दोसर ग्रुपक नेता सुभाष बाबू[9] भेला। अधिवेशनमे गाँधीजीक उम्मीदवार–सीता रमैयाकेँ सुभाष बाबू हरा देलैन। जइसँ आन्दोलनकारीक बीच जबरदस भूचाल जकाँ भऽ गेल। तइसँ पहिने केतेको क्रान्तिकारी सभ फाँसियोपर चढ़ि गेल छला आ कालापानी सेहो पहुँच गेल छला।

किसानक देश भारत, ऐठामक मूल उत्पादनक साधन जमीन छेलैहे। पच्छिमी देश जकाँ कल-कारखाना नहियेँ छल। गनल-गुथल किछु कारखाना छल, बाँकी लोक खेतीपर आश्रित छला। खेतो राजा-रजबारक संग जमीन्दार, महंथानाक बीच घेराएल छल। अधिकांश लोक या तँ भूमिहीन छला वा किछु-किछु जमीन छलैन। ओना, जिनका जे जमीन छेलैन तेकर मालगुजारी जमीन्दारोक माध्यमसँ आ राज्योक माध्यमसँ ओसुलल जाइ छल। मालगुजारी ओसुलैक ओहन हथकण्डा अपनौने छल जे जँ दू-साल मालगुजारी समयपर नइ देलिऐ तँ जमीने नीलाम करा लेल जाइत छल, जमीनक रैयती अधिकार समाप्त कऽ देल जाइत छल। माने ओ जमीन आब अहाँक नहि रहल। ओना, समयपर मालगुजारी नइ दइक कारण गरीबी छेलै, जेकर आधारो प्राकृतिक छल। बाढ़ि-रौदीक चलैत फसल नइ उपजने रैयत मालगुजारी नइ दऽ पबै छला। तैसंग शासन-तंत्रक भाषा सेहो बेवधान उपस्थित करिते छल। किएक तँ शासनक भाषा अरबी-फारसी छल। ओना, पैघ-पैघ भूपति आ महंथानाकेँ मालगुजारी नइ लगैत रहैन, किनको ब्रह्मोत्तरक नाओंपर, किनको शिवोत्तर वा अन्य देवी-देवताक नाओंपर छूट छेलैन। मुदा निम्न आ मध्यम श्रेणीक किसान (रैयत) प्राकृतिक आफदसँ सेहो त्रस्त होइते रहै छला।

ओना, गामो-समाजमे ब्राह्मण, राजपुत आ मुसलमानकेँ[10] जमीनक मालगुजारी नइ लगै छेलैन। जइसँ हुनका सबहक सम्पैत (जमीन-जयदाद)केँ कोनो राजा-दैव नहि छेलैन। तैसंग हुनका सभ लेल आरो सम्पैत एकत्रित करैक बाट सेहो खुजले छल। माने ई जे रैयतक नीलाम कएल जमीनकेँ ओ सभ किछु-किछु कीमत दए कीन लइ छला।

सर्वे-सेटलमेन्ट आ बंगाल टेनेंसी एक्टसँ पहिने तक जमीनक अधिकारक कोनो मजगूत आधार नहियेँ छल। 1885 इस्वीमे बंगाल टेनेंसी एक्ट कानूनक प्रावधान भेल। 1896 इस्वीसँ लऽ कऽ 1903 इस्वी

तक जमीनक सर्वे-सेटलमेन्ट भेल। सर्वे-सेटलमेन्टक ऑपरेशनक माध्यमसँ दरभंगा जिलामे सेहो सर्वे-कार्य आरम्भ भेल। जइमे दू पक्ष छल, सर्वे आ सेट्लमेन्ट। गाम-गाममे कैम्प लगा जमीनक बारेमे पुछल जाए लगल।

स्थायी बन्दोवस्त भेने एक दिस जमीनदारक जन्म भेल तँ दोसर दिस रैयतकेँ सेहो किछु कानूनी अधिकार भेटल। ओ भेटल ऐ रूपमे जे जे रैयत बारह बर्खसँ ऊपरसँ जइ जमीनकेँ जोति रहला अछि ओ ओइ जमीनक मालिक भेल। मुदा से भेल छल केवल कानूनीए प्रावधानक बीच। जइमे अनेको खामी सेहो छेलइ। जइसँ जमीन रैयतक हाथ नहि आबि जमीन्दारे, भूपतिक बीच बनल रहल। रैयत अपन जमीनसँ बे-दखले रहला। जँ खेत जोतितो छला तँ भूधारीकेँ उपज बाँटि कऽ दिअ पड़ै छेलैन।

1935 इस्वीक पछाइत जन-आन्दोलनक बीच मोड़ आएल। बकास्त जमीन आन्दोलनक मुद्दा बनल। ओना, वैचारिक रूपमे शान्तिसँ सेहो आन्दोलन सफल भऽ सकै छल, जँ इमानदारीसँ क्रियान्वित कएल जाइत। मुदा से भेल नहि। हेबो केना करैत, आने क्षेत्र जकाँ ने मिथिलावासी सेहो महाभारत पढ़ै छैथ। तँए, सूई अग्रे ने दातव्य, सूत्र बुझले छेलैन। जएह चेहरा सार्वजनिक मंचपर आन्दोलनक मुद्दा बनबै छला, वएह चेहरा जमीनपर बन्दूक उठा गोलियो चलबै छला। जएह भोजैतनी सएह चटैतनी..! अही बीचमे मिथिलांचलक समाज जबरदस फँसानमे फँसि गेल।

1939 इस्वीक पछाइत अंगरेजक खिलाफ आन्दोलनक रूप उग्र भेल। रेलक पटरी उखाड़ि रेल बाधित कएल गेल, डाकघर जरौल गेल, टेलीफोनक तार तोड़ि संचारतंत्रकेँ बाधित कएल गेल। इत्यादि-इत्यादि। ओना, आन्दोलन मात्र अपने देशटा मे नइ चलै छल, दुनियाँक आनो-आनो देशक बीच लड़ाइ फँसि गेल रहइ। दुनियाँ दू भागमे बँटा गेल

छल। दोसर विश्वयुद्ध अपन उग्र रूपमे फुटल। ओना, अपना देशमे जे पैघ-पैघ भूपति छला तइमे किछुकेँ छोड़ि बाँकी सभ भूपति अंगरेजक संग खुलि कऽ देलैन। गाम-गाममे आन्दोलनकारी देश-प्रेमी सबहक घरक सम्पैत लूटल गेलैन, गाम-गाममे आगि लगौल गेल। दमन बिराट रूपमे चलए लगल...।

अंगरेजक संरक्षक ऐठामक भूपति सभ तँ छेलाहे जे जासूसी सेहो करैत रहैथ आ गोरा-पल्टनकेँ खाइ-पीबैक संग रहैक बेवस्था सेहो करिते छला। मुदा तैयो जन-जागरण एहेन प्रवल रूप पकैड़ लेलक जे 1942 इस्वी अबैत-अबैत आन्दोलन निर्णायक मोड़क करीब पहुँच गेल।

गाम-गाममे अंगरेजक खिलाफ जबरदस आवाज उठि चुकल छल। बकास्त जमीनक लड़ाइ सेहो शुरू भऽ गेल। गाम-गाममे जमीन्दार, भूपतिक खिलाफ लड़ाइ जोर पकड़लक। ओना, छोट आ मध्यम किसान सभ अपन-अपन रैयती अधिकार लेल उठि कऽ ठाढ़ भइये गेल छला मुदा जातीय जाल आ भूपति सबहक अख्तियार कएल रंग-रंगक लोभ-प्रलोभन बीचमे बाधा रहबे करए। मुदा तैयो रैयतक बीच एहेन उत्साह बनि गेल छल जे अपन अधिकारक लेल जान दइले तैयार भेला। ओना, एकरंग लड़ाइ सभ गाममे नहि चलल। जैठाम भूपति अपन चालबाजीसँ रैयतक बीच फूट पैदा करैत अपन अस्त्र-शस्त्रक[11] प्रयोग केलक, तैठामक रैयत कमजोर पड़ल, जइसँ लड़ाइ सफल नइ भेल। मुदा तँए कि सभ गाममे अहिना भेल, सेहो बात नहियेँ अछि। शानदार जीत रैयत हाँसिल केलैन।

आने गाम जकाँ सीतापुरमे सेहो बकास्तक लड़ाइ जोर पकड़लक। तइमे आन गामसँ भिन्न रूपक लड़ाइ सीतापुरमे भेल। हँसेड़ा-हँसेड़ी आकि मारिये-पीट आकि केशे-मोकदमा आन गाम जकाँ नहि भेल। शान्तिपूर्ण ढंगसँ जहिना कोनो सरकारी आदेश लागू होइए, तहिना भेल।

रैयत सभकेँ अपन रैयती अधिकार भेटने अस्सी प्रतिशतसँ अधिक जमीन मध्यम आ निम्न किसानक हाथमे आबि गेल। बाँकी बीस प्रतिशत जमीन, जे पाँचटा पैघ किसान छला, हुनका सबहक हाथमे रहलैन। ओना, ओहो सभ अपनो हाथे खेती करै छला आ छिट-फुट रूपमे बटाइ सेहो लगौने छला। जे बटाइ लगौने छला ओ जमीन सर्वेमे बटेदारक नामे नामित नहि भेल छल, तँए ओइ जमीनक वैधानिक अधिकार नहि भेटने हुनके सबहक हाथमे रहलैन।

ओही सीतापुरमे देवचरण नामक एकटा रैयत सेहो छला। पाँच पुस्तसँ हुनका तीन बीघा जमीनक जोत रहलैन। ओना, चारिम पीढ़ीमे– माने पिताक अमलदारीमे जे तीन बीघा जमीन छेलैन ओ नीलाम भऽ गेलैन। गामेक एक गोरे ओ नीलामी जमीन कीनलैन। मुदा सामाजिक सम्बन्ध ओइ दुनू परिवारक बीच एहेन बनल रहलैन जे ने बटाइ रूपमे अधा-अधी उपज बाँटै छला आ ने सोल्होअना अपन बुझि खाइ छला। दुनूक बीच[12] आपसी विचारसँ, माने दुनू घर अबाद रहै तइ हिसाबसँ समझौता भेल छेलैन। जहिना एक दिस भूपतिक जमीनक कानूनी अधिकारक रक्षाकेँ धियानमे राखल गेल तहिना देवचरणक पूर्वजक उपार्जित सम्पैतसँ देवचरणक परिवारक भरण-पोषणकेँ सेहो धियानमे राखल गेलैन। जइसँ सालमे चौंथाइयोसँ कम उपज देवचरण भूपतिकेँ दैत रहथिन।

समय बीतल। 1948 इस्वीमे ओइ भूपतिकेँ तीनू बेटाक बीच खेतो-पथार आ धनो-सम्पैतक झगड़ा शुरू भेल। ओना, झगड़ाक कारण पारिवारिक छेलैन, मुदा गामक लोक बुझै छल जे हुनकर जेठका बेटा जे अपन पत्नी-बाल-बच्चाक अछैत एकटा वेश्यासँ बिआह कऽ लेलकैन से। ओना, सामाजिक रूपमे सेहो आ पारिवारिक विचारधाराक रूपमे सेहो ओकर विरोध भेबे कएल। तैसंग छोटका दुनू भाँइयो आ जेठका भाइक

पत्नियो आ बेटो सभ विरोध केनहि रहैन। जइसँ परिवारमे भिनौजीक वातावरण तैयार भेल। ओना, बीचमे जे गामो आ परोपट्टोक किछु लोक रहैथ ओ तीनू भाँइमे मेल-मिलान करैक भरि पोख परियास केलैन मुदा से सफल नइ भेल। परियासक क्रममे गाम-गामक महंथाना आ महंथक अनेको उदाहरण दैत रहलखिन मुदा एतेपर आबि कऽ परिवारक लोक गिरह दऽ देलकैन जे जँ अपना जातिमे दोसर बिआह केने रहितैथ तँ छोड़लो जा सकै छल, किएक तँ जैठाम अस्सी-अस्सी बर्खक बुढ़ सभ दोसर-तेसर बिआह करैए तैठाम ई साठि बर्खक बिआह कोनो अनसोंहाँत नहियेँ भेल। मुदा कोन-कहाँ जातिसँ बिआह केलक तँए नइ छोड़बैन, परिवारसँ फराक कइये देबैन। जमीन-जत्था छैन्हे, अपन फूटमे घर बना रहौथ। सएह भेल।

देश स्वतंत्र भेला पछाइत एक संग केतेको रंगक हवा वायुमण्डलमे उठल जइसँ भूपति सबहक करेज डोलए लगल। खास कऽ पुरना दरभंगा जिलाक मधुबनी-सब्डिवीजन आ अखुनका मधुबनी-जिलाक सौभाग्य रहल जे केरले आ बंगाल जकाँ अहुठाम जमीनक लड़ाइ सघन रूपमे उठि चुकल छल। जमीनक जोत-कोरक प्रतिबन्ध–माने जमीनपर 144 दफा लागब आम बात भऽ गेल। संग-संग कानूनक धज्जी सेहो उड़ौल गेल। मुदा से भेल दुनू दिससँ, भूपति दिससँ सेहो आ रैयत दिससँ सेहो। एक दिस भूपति सभ सरकारी तंत्रक संग मिलि 144 दफा लागल जमीनक फसल काटए लगला तँ दोसर दिस रैयतो सभ सरकारी कानूनकेँ अनदेख करैत फसल काटए लगल। दुनू दुनू दिस फसल हथियाबए लगला। तेतबे नहि, केतौ-केतौ थानामे जे फसल जमा भेल ओ थानेदार सभ हथियौलक। खाएर जे भेल, मुदा 1940 इस्वीक पछाइत मिथिलांचलक किसानो-बोनिहार आजादीक लड़ाइमे अपन-अपन उपस्थिति जबरदस रूपमे दर्ज करौने छला। बामपंथी राजनीति एक प्रवल शक्तिक रूपमे

सक्रिय छल।

1940 इस्वीक पछाइत खेती करैक काजमे कमी आएल। मुदा ओइ कमीकेँ ऐठामक किसान सहर्ष स्वीकार केलैन। पेट बान्हि-बान्हि लोक आजादीक लड़ाइमे अपन उपस्थिति दर्ज करौने रहला, आन्दोलनमे हाथ बटौने रहला, जहलक यात्रा करैत रहला। आइ धरि जे सामाजिक संस्कारमे जहलकेँ नर्क आ पापीक स्थान बुझल जाइ छल, तइ संस्कारमे जबरदस धक्का लगल। जमात करए करामात..! गाम-गामक अधिकांश मुड़हन लोक जहल जाइत-अबैत रहला, जइसँ ओ नर्कसँ बदैल स्वर्ग भऽ गेल, जे पापीक स्थान छल ओ धर्मात्माक स्थान भेल।

तीनू भाँइ- सिंहेश्वर, गौरीनाथ आ शिवशंकरक बीच जे वेश्यासँ बिआहक विवाद उठल ओ गामे नहि, परोपट्टाक महंथानो आ जमीन्दारोक शीलकेँ[13] हिला देलकैन। एक्के-दुइए दर्जनो महंथो आ जमीनदारो, जे अखन तक धर्मात्मा बनि धन-धरम पुजबै छला ओ सभ समाजक बीच देखार भऽ गेला। ओना, महंथानोक बीच जमीनक लड़ाइ उग्र रूपमे चलल। केते जमीनदारोसँ नमहर-नमहर महंथाना छेलैहे। लड़ाइ-लड़ाइ जकाँ भेल। लाठी उठल, केश-मोकदमा भेल, हँसेड़ा-हँसेड़ीमे खून सेहो भेल।

सिंहेश्वरक किरदानी–वेश्याक संग बिआह करबसँ–अस्सी बर्खक पिता- राम किशोरक मन टुटि गेलैन। टुटबे नहि केलैन, विक्षिप्त जकाँ अपन होश-हवास सेहो गमा चुकल छला। मुदा गौरीनाथो आ शिवशंकरो अपन-अपन परिवारकेँ असथिर करैत सामाजिक सम्बन्धमे नव रूप देलैन। नव रूप ई देलैन जे तीन साए बीघा जमीन नीलामपर बन्दोवस्त जे करौने छला, ओ कोसिकन्हा जकाँ रेन्ट फिक्स करैत सबहक जमीन आपस करैक विचार तय कऽ लेलैन। डेढ़ साए रूपैआमे देवचरणकेँ सेहो अपन जमीन आपस लइले कहलखिन। ओना, देवचरण अपन पूर्वजक

देल सम्पैत गमा चुकल रहैथ, मुदा ओकर जोत-कोर केने अपन परिवारक गाड़ीकेँ घीचैत आबि रहल छला। खेत जोतैले बरदक जरूरत होइ छइ। अपन समांगक संग जँ जोड़ भरि बरद भऽ गेल तँ किसानी जिनगीक एकटा मुख्य अंग भइये गेल, तँए देवचरण गाए सेहो पोसै छला। अपन बरद बेचैत रहला जे कीनैक खगता नइ भेलैन। ओना, जइ बरदसँ खेत जोतै छला ओ पुरनकन्ह भइये गेल छेलैन, मुदा जोड़ा भरि बच्छा-बरद सेहो भऽ गेल छेलैन। ओही बच्छा-बरदकेँ बेच देवचरण अपन पूर्वजक देल जमीन पुन: आपस लेलैन।

आजादीक तूफानी दौड़मे–माने 1940 इस्वीमे हरिचरणक जन्म भेल। ओ, ओ समय छल जइमे केतेको परिवारक बच्चा अन्न बेतरे मरल, केतेको माए अपन शक्तिसँ निरोग बच्चाक जन्म नइ दऽ सकली।

हरिचरणक छठिहारमे, जखन समाजक दाय-माय एकठाम बैस भाग्य-रेखा लिखए लगली तँ सर्वसम्मैत निर्णय केलैन जे बच्चाकेँ औरुदा भेटौ, जीबैत रहत तँ एक लोढ़ी बोनियोँ कए कऽ समाजमे परिवारकेँ ठाढ़ करबे करत।



शब्द संख्या : 6478, तिथि : 11 मई 2018

2.

14 जनवरी 1934 इस्वीक दिनक एक बजेमे जबरदस भुमकम भेल। अखुनका जकाँ भुमकमक नाप-जोख करैबला कोनो यंत्रक अविष्कार नहियेँ भेल छल जइसँ लोक बुझैत जे केहेन भुमकम भेल, मुदा एते तँ भेबे कएल जे बड़का-बड़का गाछो सभ खसल, भीतघर सेहो खसल आ खेत-पथारमे दारारि फटि-फटि जमीनक भीतरसँ बाउल ऊपर आबि-आबि बाधक-बाध जमीनमे पसरबो कएल। पानिक मोकर सभ सेहो फुटल। गाम-गामक शकल बदैल गेल। घर खसने लोको मरल।

आने गाम जकाँ क्षति सीतापुरमे सेहो भेल। ओना, सीतापुरमे एकोटा घर पजेबाक तँ नहियेँ छल खाली पान-सात परिवारकेँ कँचका पजेबाक घर छेलै, ओहो सभ खसल। सीतापुरमे अधिकांश घर टटघर छल जे लकड़ी-बाँसक खुट्टापर ठाढ़ छल, ओ हिल-डोलि जरूर गेल मुदा खसल नहि। ओना, सीतापुरमे लोअर प्राइमरी स्कूल सेहो छेलै मुदा सरकारी नहि, एकटा शिक्षक स्कूल चलबै छला। बीस-पच्चीसटा विद्यार्थी छल। सभ विद्यार्थी शनियेँ-शनि हुनका सनिचराक रूपमे पाभैर चाउर आ एक-एकटा पाइ सभ दैत रहैन। एक गोरे ऐठाम शिक्षक रहै छला जे खाइयो-पीबैले दइ छेलैन आ बदलामे परिवारक बच्चा सभकेँ दरबज्जेपर पढ़बैत रहथिन। गौंआँक सहयोगसँ पनरह हाथ नमती भीतघरक रूपमे स्कूल छल। भुमकममे ओहो खसि पड़ल। स्कूल खसला पछाइत बहरबैयाक[14] कचहरी[15]मे पढ़ाइ हुअ लगल। तीन-चारि सालक पछाइत स्कूलक जगह बदैल, माने जैठाम स्कूल छल ओइ जगहसँ हटि दोसरठाम

एकटा परतीपर गौंएक सहयोगसँ पुन: भीतघर बनल। स्कूलक जगह बदलैक कारण भेल जे ओइ जगहकेँ लोक अशुभ मानलक।

अंगरेजक विरोधमे एहेन माहौल बनि गेल छल जे स्कूलक जे शिक्षक छला, ओहो चोरा-नुका कऽ लोक सभकेँ देशक आजादीक विषयमे बुझबै छला। गाम-गाममे अंगरेजी शासनक समर्थक सेहो छेलाहे। वएह सभ चुगली करि देलकैन जइसँ 1942 इस्वीमे शिक्षक पकड़ा गेला। स्कूल बन्न भऽ गेल। ओना, साल भरिक पछाइत जहलसँ शिक्षक निकलला मुदा घुरि कऽ सीतापुर नहि एला। स्कूलक भीतघर ओहिना ठाढ़ भेल रहल। तीन सालक पछाइत दोसर शिक्षक एला। हरिचरणक नाओं सेहो पिता[16] स्कूलमे लिखा देलखिन।

देश स्वतंत्र भेल, मुदा अखन तक आमजन स्वतंत्र शब्दक अर्थ बुझबे ने करै छला। सीतापुर गाममे बेसी-बेसी जमीनबला सेहो छला मुदा मालगुजारी असुलनिहार जमीन्दार मालिक नइ छला। जइसँ पाहीपट्टीक मालिक अपन पटवारी, गुमस्ता आ बराहिलक माध्यमसँ कचहरियो चलबै छला आ मालगुजारी सेहो असुलै छला। कचहरी चलबैक माने भेल, गाममे जे झगड़ा होइ, तेकर पनचैती करब। ओना, तइ मानेमे जमीन्दार कमजोर छला। तँए गामक मुँहगर सभकेँ सेहो पनचैतीमे बजबै छला। कचहरीक कारोबारीकेँ कमजोर होइक कारण छल जे दू परिवार वा तीन परिवारक बीच जे झगड़ा होइ छल ओइमे जे मारि-पीट होइ छल, ओ टटका रहै छल तँए कनियोँ अनुचित भेने पार्टी मानबे ने करैत रहए। माने पनचैती स्वीकार नइ करैत छल। जइसँ कचहरीक आदेश टुटि जाइ छल।

देश की स्वतंत्र भेल की नइ भेल, से बुझनिहारक अभाव तँ रहबे करइ। मुदा रंग-रंगक भाषणो गाममे चलिते छल जइसँ किछु हेराएल-भोथियाएल मुद्दा सभ सेहो जगिते छल। जमीन्दारी टुटि गेल, जमीन्दारक

शासन सेहो टुटि गेल। आब मालगुजारी सरकार असुलत आ ओइ पाइक खर्च समाजक काजमे लागत इत्यादि...।

अखन तक गाममे ने एकोटा नीक सड़क छल, ने एकोटा पुल, आ ने स्कूल बनल। आम जनक नजैरमे सेहो नव-नव विचार जगबे कएल। पुलक नाओंपर दसटा ईटा रस्ता परहक कोनो-कोनो खाधिमे बिछा देल जाइत रहै, जैपर होइत लोक बरसातमे चलैत छल।

आम-कटहरक खुदरा गाछो आ गाछीमे सेहो जमीन्दारक ऐमला-फेमलाक संग लड़ाइ उठल। ओना, अखन धरिक[17] जे कचहरीक रूतबा छेलै ओ वौद्धिक रूपमे कमल मुदा बेवहारिक रूपमे ओहिना छल माने पूर्वते। माने ई जे देश स्वतंत्र भेला पछातियो गारि पढ़ब, मारब इत्यादि कचहरीक ऐमला-फेमलाक बेवहार रहबे कएल। आमक गाछीक लड़ाइ गाछक तड़ी-फड़ीक लेल भेल। तँए एकरा आन गाममे जे कहल जाइत होइ मुदा सीतापुरमे 'आमक गाछीक लड़ाइ' कहल जाइत अछि। से केबल आमक गाछीक लड़ाइये कहल जाइए से बात नइ अछि। आमक गाछीकेँ बिआहोक सभा-गाछी आ दोस्तियारीक धरम-गाछी सेहो कहले जाइए।

आमक गाछीक लड़ाइ कचहरीक पटवारी-गुमस्ता-बराहिलक संग गुलाबचनकेँ भेल। गुलाबचनकेँ तीन भाँइक भैयारी, तीनू भाँइ कातिक-सँ-फागुन धरि अपने गाछीमे अखड़ाहा खुनि कुश्ती लड़ैत छल। गुलाबचनक पिता गोपीचनकेँ अपन बुद्धि-अकिल छेलैन तँए अपन सोच-विचार सेहो छेलैन्हे। तेकर एकटा कारण ईहो छल जे दस कट्ठा खेतकेँ गोपीचन चारू बापूत मीलि कोदारीए-सँ उनटा लइ छला, माने तामि लइ छला। तैसंग अपन चारिटा महींस सेहो पोसने रहैथ, जेकर दूध-दही खाइते छला। तँए जिनगीमे ऐसँ बेसी आरो चाही की? कोनो कि गोपीचन शास्त्र-पुराण पढ़ने छला जे मनुखक देहपर हाथीक माथा आ बिनु

घटकैतिये राम-सीताक जोड़ी नगर बधू केना धनूष टुटैसँ पहिने लगा लेलैन, ऐ सभपर विचार करितैथ। ई तँ छी शास्त्र-पुरानक विचार। अपन विचार शास्त्र-पुरानमे रहअ। ऐसँ गोपीचन आ गोपीचनक तीनू बेटाकेँ कोन मतलब? मतलब छै अपन मेहनतक संग बापक देल सम्पैतकेँ सुरक्षित राखबसँ।

पैछला साल गोपीचन मरि गेला। गोपीचन जा जीबै छला ता मालिककेँ अपन जमीनमे अपन रोपल आम-कटहरक फड़ अपना हाथे बाँटि-बाँटि दइ छेलखिन। बेटा सभ एतबे करै छेलैन जे गाछक आधा-छिधा आमो आ कटहरो तोड़ि आगूमे आनि राखि दइ छेलैन आ महींस चरबए चलि जाइ छल। जइसँ मालिकक संग बँटबाराक महिरम बुझबे ने केने छल।

आम-कटहर तोड़बए कचहरीक बराहिल पहुँचल। गुलाबचनकेँ एतबे अनुमान छेलै जे अपन गाछी-कलम छी। आन गामक लोक सभ कचहरीमे रहैए, ओकरो खेनाइ-पीनाइ तँ गौंए ने देत। तँए पाँचटा दसटा आम हमहूँ देबइ।

तीनू भाँइ गुलाबचन मड़ुआ रोपि कऽ आएले छल। दुपहरक समय रहै, बराहिल आबि गुलाबचनकेँ आम तोड़ए कहलखिन। तैपर गुलाबचन बाजल-

“अखन मड़ुआ रोपि कऽ तीनू भाँइ एबे केलौं हेन, निचेनसँ गाछीक आम तोड़ब। पछाइत पाँचटा आम अहूँकेँ कचहरीमे पहुँचा देब।”

अखन धरि थाना-पुलिस जकाँ बराहिलो अपनाकेँ बुझिते छल। पटवारीक नाओं कहैत बाजल-

“सरकारक हुकुम छह, आम आइये तोड़बह।”

तहीकाल गुलाबचनक मझिला भाए- बालचन पहुँचल। तीनू

भाँइमे बालचन सभसँ बूफगर। जेहने छिपगर जबान तेहने हाथो-पएर। बराहिलक मुँहक बात ‘सरकारक हुकुम छह’ सुनिते बालचनकेँ देहमे देशी सरकार बनैक विचार जगि गेल। जगैक कारण ईहो रहै जे काल्हिये साँझमे सोराजीलालक मुहसँ सुनने छल जे देश-स्वतंत्र भेल, सबहक देश भेल तँए केकरो कियो मालिक नहि रहल। सबहक देश भेल, सबहक शासन भेल। बराहिलकेँ बालचन कहलक-

“हम अपना चीजक अपने मालिक छी की तोहर सरकार छह। जा, नइ देबह एकोटा आम।”

बालचनक बात सुनि बराहिल ठमकल, मुदा जहिना शासनक कुर्सीपर बैसल अफसर वा थानाक वर्दी पहिर एको लीबरक आदमीकेँ ढोड़ साँपक फुफकार होइत अछि तहिना बराहिलक सेहो भेल। तैबीच गुलाबचन अपन भाएकेँ चुप करैत कहलक-

“बालचन, दरबज्जापर आएल दुश्मनोकेँ लोक नीके बोल कहै छै, तूँ किए अनेरे झगड़ा बेसाहै छँह।”

ने गुलाबचने अपन विचारक भावार्थ बुझलक आ ने बालचने बुझलक मुदा बराहिल बुझि गेल। बुझबो केना ने करैत, जिनगी तँ बीतै छेलै शासकीय भाषा-शास्त्रीक बीच ने...। जँ गुलाबचनकेँ एतबो होश रहितै जे दरबज्जापर आबि बराहिल आँखि देखबैए आ हम ओकरा अभ्यागत बुझै छिऐ! जँ से बुझैक शक्ति रहितै तखन जेठ भाइक भाषा नै बजैत। ओना, बराहिल बालचनक धुआ-काया देख सहैम गेल छल, मुदा जमीन्दारीक मंत्र जे मनकेँ पकैड़ नेने छेलै, तइसँ फुफकार रहबे करइ। गुलाबचनक दरबज्जापर सँ बराहिल कचहरी दिस विदा होइत बाजल-

“आइ तोरा सभ भाँइकेँ देखा दइ छियौ। तीनू भाँइकेँ हथकड़ी लगा जेल जखन पठेबौ तखन अपने बुझि जेबही!”

बराहिल चलि गेल। गुलाबचन सेहो नहाइ-खाइ दिस बढ़ल।

कचहरी पहुँच बराहिल पटवारीकेँ सभ बात सुना देलकैन। ढहैत सामंती सोच आ उठैत जनवादी विचारक बीच पटवारीक मनमे द्वन्द्व पसैर गेल। मुदा सामाजिको सत्ता तँ सत्ता छीहे, ओहूमे केतेको भत्ता अछिए। समाजोमे तँ एहेन लोकक विचारक सत्ता रहले अछि जे राज-काजसँ या तँ जुड़ल रहल अछि वा ओइमे सटल रहने अपन सत्ता बनौने रहल अछि। स्कूली शिक्षा तँ पटवारीकेँ कम्मे रहैन मुदा जमीन्दारी सूत्रक नीक अनुभव रहबे करैन। बराहिलकेँ राजक हथियार बना लड़ाइयक सूमा बनौलैन। गाममे जेतेक मुँहगर-कन्हगर लोक छल, जेना- मैनजन, देबान इत्यादि जे सभ कचहरीसँ जुड़ल रहए–सबहक बैसार पटवारी केलक। अपनो गुमस्ता, बराहिलक संग गामक असेसर[18]केँ बजा एकठाम केलक। सर्वसम्मैतसँ काल्हि आम तोड़ैक निर्णय भेल। समयक हिसाबसँ सभ गुलाबचनक गाछी पहुँच बलजोरी आम तोड़ब शुरू केलक।

गुलाबचनकेँ बुकौर लगि गेल। मुदा बालचनक हिम्मतमे मिसियो भरि कमी नइ आएल। बालचनक हिम्मत देख गुलाबचन बाजल-

“बौआ! धन, धरम दुनू जेतह। आम तोड़ै छै ते तोड़ए दहक। छोड़ि दहक। भगवानकेँ दइक हेतैन ते ऐगला साल अहू बेरक साती आम दए देथुन।”

जहिना गर्म आगिमे पानि ढारने मिझा तँ जरूर जाइए मुदा ओकर परितापकेँ ठण्ढा होइमे किछु समय लगिते अछि तहिना बालचनक मनमे ईहो उठैत रहै कचहरीक झगड़ा गाममे पसैर जाएत। हेबो केना ने करितै गौंओ तँ संग छेलैहे। तेतबे नहि, वेचारा ने कहियो स्कूले देखने आ ने तेहेन पुरुखक सतसंगे भेल छेलै जइसँ पुरुखपनाक बोध होइतै। मुदा एकटा विचार बालचनक मनमे जरूर जगलै जे जखन गौंआँ सभ हँसेड़ीक रूपमे कचहरीक संग हमर सम्पैत लूटए आएल अछि तखन ओकरा संग हमर सामाजिक सम्बन्ध केहेन हएत? की हम ओइ समाजसँ ई नहि पुछि

सकै छी जे समाज जखन विचारसँ चलैए तखन हँसेड़ी बनबैक की प्रयोजन भेल? जरूर किछु-ने-किछु भीतरमे रहस्य अछि...।

संजोग बनल। जखन गुलाबचनक गाछीमे आम टुटब शुरू भेल, तखने जेठुआ बिहाड़ि जकाँ भरि गाममे बिर्ड़ो उठल। एकाएक नवतुरिया सभ सेहो गुलाबचन-ऐठाम पहुँचए लगल। गामक नवका पीढ़ी जे अखड़ाहापर खेलाइ छल ओ सभ बालचनकेँ गुरु कहै छेलैन। सोराजीलाल सेहो गुलाबचनक ऐठाम एला। अबिते सोराजीलाल सबहक बीचमे गुलाबचनकेँ कहलखिन-

"गुलाबचन, अहाँ संग अन्याय होइए, एकरा रोकू।"

सोराजीलालक विचारक प्रभाव जेते बालचनपर पड़ल तेते गुलाबचनपर नइ पड़ल। पड़बो केना करैत, जेकर विचार पहिनहि हारि मानि चुकल छल ओ केना लगले उठि कऽ ठाढ़ होएत। घरसँ कड़ुतेल पिऔलहा लाठी निकालि बालचन बाजल-

"भैया, तूँ घरेपर रहह। घर-दुआरक संग स्त्रीगणो आ बालो-बच्चाकेँ देखैत रहिहह। हम छोटका भैयाक संग जा कऽ आम तोड़बकेँ रोकबै।"

जहिना देशक ओइ सिमानपर जे शक्तिशाली देशक सीमा सेहो छी, जाइत सिपाहीकेँ परिवारक लोक अन्तिम विदाइ बुझैए तहिना गुलाबचनक मनमे उठए लगल। एक दिस समांगक जिनगी देख रहल छल आ दोसर दिस सम्पैत। रंग-बिरंगक विचार गुलाबचनक मनमे चकभौर लिअ लगल। जिनगी-ले सम्पैत अछि वा सम्पैत-ले जिनगी? मुदा अखन सोचै-विचारैक लेल ओते समयो नहियेँ अछि जे आनो-आनसँ बुझि विचारब। तहूमे जखन लड़ाइयक मोर्चा बनि रहल अछि तखन सभसँ बुझबो-विचारब केतेक नीक हएत? लड़ाइक मोर्चाक विचारक अनुभवो सभकेँ एक्केरंग नहियेँ होइ छइ। जे लड़ाइयक मोर्चापर

उतरनिहार अछि वा जे मोर्चापर कहियो गेबे ने कएल, दुनूक विचारोमे भिन्नता हेबे करत किने..!

सोचैत-विचारैत गुलाबचन अपन दुनू भाँइकेँ–माने ज्ञानचनो आ बालचनोकेँ कहलक-

“बौआ, आम अपन परिवारक तोड़ि रहल अछि, मुदा जखन समाजो पीठपोहु छैथ तखन पाछुओ हटब नीक नहि। तँए पहिने दरबज्जापर आएल सहयोगी सभकेँ पुछि लहुन जे आगू की करब।”

गुलाबचनक विचार सुनि जहिना दुनू भाँइ–ज्ञानचन आ बालचन–ठमकल तहिना समाजक नवतुरिया सभ सेहो ठमकल। मुदा सोराजीलाल, जे दर्जनो बेर जेल-यात्राक करैत गुलाम देशसँ मुक्ति पाबि चुकल छैथ, हुनका विचारमे मुक्तिक ओ रूप ओहिना झलैक रहल छेलैन जेना पौने छला। अगुआइ करैत सोराजीलाल बजला-

“गुलाबचन, जिनगीक बाटमे केहनो आफद-असमानी वा केहनो रोड़ा-पाथर किए ने आबि कऽ रोकए मुदा पाछू नइ हटी। किएक तँ ओ निर्णायक दौर होइत अछि। ओइठाम पाछू हटने लोक पछुआ जाइत अछि। ओना, तइमे थोड़ेक होशियारीक खगता जरूर अछि मुदा पाछू हटब किन्नहु नीक नहि।”

सोराजीलालक विचारमे गुलाबचनकेँ की भेटल से तँ गुलाबचने जानत, मुदा बिच्चेमे बालचन बाजल-

“सोराजी भैया, अहाँक विचार जँ संग रहत तँ सम्पैत बँचबैले हम अपन जानकेँ अराधि लेब। अहाँ जे कहब हम तइ हिसाबसँ करैले तैयार छी।”

बालचनक विचार सुनि सोराजीलाल बजला-

“बालचन, लड़ाइक मोर्चाक एक-एक क्षण ओ क्षण छी जे क्षणमे

छनाक कऽ सकैए। तँए एको क्षण गमौने बिना चलह आम तोड़बकेँ रोकैले।”

सोराजीलालक विचार सुनि बालचनक मनमे लहरैत आगि जकाँ एकेबेर धधरा उठल। अपन लाठी सम्हारि बालचन गाछी दिस आगूए-आगू दौड़ल। पाछू-पाछू समाजक नवतुरियो, सोराजियोलाल आ परिवारक बाल-बच्चा सहित जनिजातियो सभ गरियबैत विदा भेल।

आमक गाछीमे गुमस्ता, पटवारी, बराहिलक संग असेसरो आ समाजक पाँचटा मुँहगर-कन्हगर लोक सेहो छला। गामक हँसेड़ीकेँ दौड़ैत अबैत सभ कियो देखलैन। एक्के-दुइये गुमस्तो, पटबारियो, बराहिलो आ असेसरो आमक गाछीसँ भागल। मुदा गामक जे पाँचो गोरे छला ओ पूर्ववते गाछीमे रहला। ओना, हुनका सबहक मनमे मारिक डर नइ पैसल रहैन। डर नइ पैइसैक कारण हुनका सबहक मनमे रहैन जे हम तँ समाजक लोक भेलौं किने, बीच-बचाउ करैत रहब। मुदा ई विचार मनमे जगबे ने केलैन जे जे बात अखन मनमे उठि रहल अछि ओ तँ आम तोड़ैसँ पहिनौं उठि सकै छल। जँ से उठल रहैत तँ एहेन परिस्थितीए किए बनैत?

जमीन्दारक ऐमला-फमिलाकेँ भागैत देख सोराजीलालक मन अड़हुलक फूल जकाँ फुला गेलैन। गाछी पहुँच टुटल आमक ढेरीकेँ देखबैत सोराजीलाल बजला-

“गुलाबचन, अहाँक आम छी लऽ जाउ।”

तही बीच सिंहेश्वर–माने गामेक एक जातिक मैनजन, बाजल-

“गुलाबचन, अनेरे ने लाठी-लठौबैल करए चाहै छी। समझौता मानि लिअ।”

सिंहेश्वरक विचार सुनि गुलाबचन थकथकाएल मुदा सोराजीलाल बालचनकेँ कहलखिन- “बालचन! समाजक यएह लुच्चा-लम्पट सभ

गरीबक सम्पैत्तियो आ इज्जतो-आबरूकेँ सभ दिनसँ लूटैत आएल अछि। अखन ई समाज नहि राजक हँसेड़ी छी, तँए जे भागल से अपन जान बँचौलक, मुदा जे पकड़ा गेल तेकरा छोड़ब उचित नहियेँ हएत।”

सोराजीलालक विचार बालचन मानि लेलक। मुदा विचारमे कनी संशोधन जरूर केलक। संशोधन ई केलक जे कड़ुतेल पिऔल लाठी अछि, तँए ओइ लाठीसँ अवघात बेसी हएत। अवघात ई जे जहिना लोहाक तीर बनबैकाल करूतेल पिऔलासँ ओ विषाक्त भऽ जाइए तहिना बाँसक लाठियोमे होइए। जइसँ साधारण लाठीक अपेक्षा ओइसँ बेसी अवघात भऽ सकैए। लाठी रखि बालचन सिंहेश्वरक दुनू गालमे दू चाट मारलक।

सिंहेश्वरकेँ गालमे चाट लगिते जेतेक नवतुरिया छल, भुआ जकाँ बाँकी चारूपर लटैक हाँइ-हाँइ सभकेँ चोटियाबए लगल। दुनू हाथ उठा सोराजीलाल सभकेँ शान्त केलैन। मुदा एक दिस जहिना मारिक चोटसँ चोटाएल गहुमन साँप जकाँ पाँचो फुफकार काटि रहल छल तहिना दोसर दिस गनगुआरि-साँप जकाँ समाजोक सिपाही सभ सीटी बजाइये रहल छल। लड़ाइ जीतला पछाइत लड़ाइ लड़निहारक विचार सर्वोपरि भइये जाइए। सर्व-सम्मैतसँ निर्णय भेल जँ पाँचो गोरे साए-साए बेर कान पकैड़ समाजक बीच उठए-बैसए तँ जान छोड़ि देबइ।

आगू-पाछू पाँचोकेँ करैत देख सोराजीलाल पुन: विचारमे संशोधन करैत बजला-

“कान पकैड़ कऽ उठब-बैसब छोड़ि पाँचोकेँ थूक चटबाउ।”



शब्द संख्या : 2156, तिथि : 15 मई 2018

3.

1945 इस्वी अबैत-अबैत गाम-गामक जे स्कूलक शिक्षक सभ जहल चलि गेल छला जइसँ स्कूल सभ बन्न भऽ गेल, ओहो सभ जहलसँ निकलला आ स्कूलो सभ खुजल। ओना, ने सभ गाममे स्कूले छल आ ने सभ स्कूलक शिक्षक जहले गेल छला। हँ, ई बात जरूर छल जे अधिकांश स्कूलक शिक्षक जहल गेल छला, बाँकी डरे पड़ा कऽ घर धऽ नेने छला। घर धड़ैक कारण खाली अंगरेजी शासन द्वारा चलौल गेल दमन चक्रे नहि छल, ओहूमे दू रंगक विचारक छला। पहिल जे अंगरेजी शासनक समर्थक छला, तँए जनजागरणसँ डरि गेल छला आ दोसर ओहन विचारक लोक छला जे प्राचीन पद्धतिक विचारसँ प्रभावित छला। ओ सभ पुरान विचारसँ एतेक प्रभावित रहैथ जे अपनाकेँ मात्र एक निष्पक्ष गुरुतुल्य मानै छला, जइसँ देशक आजादीक आन्दोलनसँ ओ सभ अपनाकेँ सोल्हन्नी अलग रखने रहला। मुदा विषम परिस्थिति, माने लड़ाइ-दंगाक परिस्थिति देख अपन जिनगीक विचारकेँ समेट अपनाकेँ सुरक्षित रखैले स्कूल छोड़ि-छोड़ि घर धऽ चुकल छला।

स्कूल खुजिते दोसर-तेसर शिक्षक सभ आबि शिक्षण कार्य संचालित केलैन। सीतापुरक स्कूलमे सेहो पढ़ौनी शुरू भेल। पहिलुका स्कूलक सभ कागज-पत्तर जब्त भऽ चुकल छल। किएक तँ पहिलुका जे शिक्षक छला हुनकापर शासनद्रोहक अभियोग लगि चुकल छेलैन जइसँ साल भरिसँ ऊपरे जहलोमे रहला। स्कूल खुजला पछाइत पुन: विद्यार्थी

सबहक नामांकन भेल। देवचरण सेहो अपन पौत्र–हरिचरणक नाओं लिखा देलैन। ओना, बच्चाकेँ केतेक उमेरमे विद्यालय पठौल जाए, प्राचीन पद्धति की कहैए? मुदा तइ सभपर कोनो विचार नहि कएल गेल। बिना कोनो प्रमाण पत्रे, बिना कोनो जन्म-कुण्डलीए विद्यार्थी सबहक नामांकन भेल। पाँच बर्खक बच्चासँ पनरह-बीस बर्खक बच्चा, जेकरा वौद्धिक रूपमे अक्षर-बोध नहि छल, सबहक प्रवेश स्कूलमे भेल।

पढ़ल-लिखल, विचारवान शिक्षक भेने हुनका सबहक मन एतेक तँ मानिते रहैन जे समाजक प्रवुद्ध अंग होइक कारणे देशक सेवा हमरो कर्तव्य भेल। तँए बिना कोनो भेद-भाव केने अधिकांश शिक्षक विद्यालयमे पढ़बैत रहैथ। ओना, समाजक बीच विद्योपार्जनक लेल सामाजिक रोक-राक नहि छल एकरो नकारल नहियेँ जा सकैए। किछु शास्त्रीय ज्ञान एहेन तँ छेलैहे जेकरा महिला आ बच्चासँ परहेज मानल जाइ छल। ओना, भागवतकथा गाम-गाममे चलैत रहइ। जइ आसनपर बैस व्यासजी[19] ध्रुव-प्रहलादक कथा सुनबैत रहथिन ओही आसनपर ऋृषिकाक[20] कथा सेहो कहिते रहथिन मुदा समाजक बीच जे चलैन छल, माने समाजक जे गति-विधि रहै तइमे खोंच-खरोच नहि छल एकरो नकारल नहियेँ जा सकैए। शिक्षकक बीच सेहो जातीय बेवहारक प्रभाव रहैन जइसँ शिक्षक शिक्षकक बीच सेहो किछु-ने-किछु दूरी बनले छल।

1945 इस्वी बीतैत-बीतैत 1942 इस्वीक जे तूफानी आन्दोलन छल ओइमे किछु नरमी आएल। अंगरेजो बहादुर महसूस कइये चुकल छल, जे आब शासन सत्ता बँचाएब कठिन अछि। तँए सत्ताक हस्तांतरण करबे विकल्प अछि। जहलसँ आन्दोनकारी सभकेँ निकालल जाए लगल। गाम-गाममे जे गोरा-पल्टनक घोड़-दौड़ चलि रहल छल ओहो समटा कऽ केन्द्रित हुअ लगल। अपन देशक सत्ता अपन देशवासीक हाथ औत जे अपना ढंगे चलौत। अरवन धरिक जे देशक शासनक इतिहास

रहल ओ सिर्फ अंगरेजीए शासनटा नइ रहल, ओइसँ पहिनौं विदेशी शासन रहल। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे मुगल शासनक पछाइत अंगरेजी शासन आएल।

जहिना जेठ-अखाढ़मे रौदसँ जरल जमीनक जे धरतीसँ जुड़ल घास-पातक संग छोट-छोट जे गाछ-लत्ती छल ओहो सभ जरि-सुखि चुकल छल, मुदा वादलक बर्खासँ धरती तेना सिंचाएल जे जरल-मरल, मौलाएल-टटाएल सभ गाछ-लत्ती जगि-जगि कऽ ठाढ़ भेल।

देशक आजादीसँ पहिने देशक जे-जे समस्या छल ओ 1945 इस्वीक पछाइत जखन देशक जन-गणक बीच बिसवास जगल जे आब अंगरेजी शासन टुटबे करत अपन शासन हेबे करत। बिसवास जगिते सबहक नजैर अपन-अपन जिनगीक बाधा-रूकाबटपर पड़लैन। पहिने निज समस्याक निदान आवश्यक, लोकमे ऐ तरहक विचार जगिते हजारो समस्याक उदय गाम-गामक समाजमे हुअ लगल।

किसानक देश भारत, किसानक बेटा देशकेँ अंगरेजी शासनसँ मुक्त करा अपन कल्याणकारी रस्ता पकैड़ आगू मुहेँ चलता, तँए किसानी लेल माटि-पानि, बीआ-बाइलिक संग खेती करैक लूरि सेहो चाही, तखने खेती अपना गतिये संचालित हएत। दिनानुदिन नव लूरियो आ साधनो भेने उपार्जन बढ़बे करत, जइसँ देश शक्तिशाली बनत। जखने देश शक्तिशाली हएत तखने देशक लोक शक्तिवान हेता। सबहक मनमे यएह आशो आ बिसवासो छेलैन्हे।

बकास्त जमीनक आन्दोलन उठि चुकल छल। मुदा ओइमे एकरूपताक अभाव रहल। गाम-गामक समाज वैचारिक रूपमे सेहो आ बेवहारिक रूपमे सेहो बँटाएल रहला। खेतक मर्मकेँ बुझनिहार जे किसान छैथ ओ इंच-इंच भरि जमीनक उपार्जित शक्तिकेँ नीकसँ बुझै छैथ, तँए ओहन किसान नहि छैथ सेहो नइ नहियेँ कहल जाएत जे अपन खेतकेँ

हगनार बना रूआबसँ बजै छैथ- 'जँ हम हगनार नइ दिऐ तँ लोकक हगब बन्न भऽ जाएत।'

आजादीक अन्तिम दौड़ अबैत-अबैत देशक समस्या दर्जनो राजनीतिक दल सेहो बनौलक। समस्याकेँ कोन रूपे समाधान कएल जाए, अधिकांश वेद-वक्ता सभ विचार करिते रहैथ। जइसँ पोखरिक जाठि लगक माटि उखाड़ि पोखरिक पानिकेँ थाहि लेता, ईहो तँ विचारक क्षेत्रमे अछिए। बकास्त आन्दोलन कोनो-कोनो गाममे शत-प्रतिशत सफल भेल आ कोनो गाममे खिच्चड़ि नइ भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। भेल दुनू। खाएर जे भेल, किछु लोक अपना-अपना हाथे अपन-अपन भाग्य सेहो लिखलैन आ किछु गोरे या तँ लिखबे ने केलैन वा लिखि कऽ मेटा लेला। गाम-गामसँ जमीनबला किसानक बेटा गाम छोड़ि बजार दिस भागिये रहला अछि। अधिकांश लोक, चाहे ओ बुद्धिजीवी परिवारक हुअए वा मसिजीवी परिवारक, चाहे ओ किसान परिवारक हुअए वा औद्योगिक परिवारक वा खेतिहर-बोनिहारक परिवारक, गाम-घरसँ पड़ा कऽ किए बजारोन्मुख भेल अछि?

लाखो-करोड़ो जीव-जन्तुक बीच मनुख सभसँ ऊपर विवेकवान जीव मानल जाइत अछि, मानल नहि जाइत अछि वास्तवमे अछियो। कहैक क्रममे, जहिना मंचपर वक्ता बजै छैथ जे बरद बहैले[21] आ विवेकवान कहैले जन्मे नेने छैथ, तखन जँ से नइ हुअए तँ सेहो जुलुमे बात भेल। खाएर जे भेल, जहिना एक वक्ताक विचार ऊपर अछि तहिना दोसरो वक्ता तँ एहेन छथिए जिनक कहब छैन- 'जहाँ बसी तँह सुन्दर देशू। जहि प्रतिपालल सोइ नरेश।'

विचारणीय प्रश्न तुलसियो बाबाक छैन्हे, भलेँ ओ खिसिया कऽ कहने होथि वा भावसँ भवित होइत प्रेमाभावमे कहने होइथ।

साढ़े तीन हाथक मनुखकेँ दुनियाँ दिस देखैसँ पहिने अपन शकल-

सूरत आन-आन जीव-जन्तुक शकल-सूरतसँ भजाइर लेबा चाही। कहैकाल तँ कहिये सकै छिऐ जे हाथी हुअए कि बाघ, भलेँ जंगलमे अपना शक्तिये ओ राजा किए ने बनल अछि, मुदा अपना रहैक घर बनबैक लूरि ने हाथीकेँ छै आ ने बाघकेँ, मुदा माटिमे रहैबला मूसो आ खिखिरो-नढ़िया ओहने अछि सेहो केना कहल जाएत।

बजार दिस गाम-घरक लोककेँ पड़ाइन करैक जरूरत किए पड़लैन? चाहे ओ कोसीक कछेरक लोक होथि वा कमला-बागमतीक कछेरमे रहैबला, की ओ सभ ई नइ जानि रहला अछि जे दुनियाँक समृद्धिशाली शहर नदियेक कछेरेमे बसल अछि। दुनियाँक बात छोड़ू, अपने बिहारक जे प्रमुख शहर अछि ओ केतए अछि?

सभ कियो तँ यएह ने चाहै छी जे अधिक-सँ-अधिक शान्तचित्तसँ जीवन व्यतीत अपनो करी, परिवारो करए आ समाजोकेँ शान्ति भेटौ। मुदा तइले की खगता अछि आ केतए कोन रस्ता किए बाधित अछि, तैपर विचार के करत? विचारणीय विषय अछि जे केहेन जीवन चाही? जखने धरतीपर जन्म लेलौं, तखने भूख लगबे करत, जँ भूख नहि मेटाएब तँ शरीर खसैत-खसैत खसि पड़बे करब। ओना अन्नोसँ बेसी जरूरत पानिक अछि आ तहूसँ बेसी खगता हवाक अछि जे साँस लइ छी। मुदा ओ तँ प्रकृति अपन अकवालसँ सौंसे दुनियाँकेँ भरि देने अछि। ओना, अछि पीबैक पानियोँ आ भोजनो सामग्रीक पैदा करैक माटियो, मुदा ओइमे कनी मेहनतक जरूरी पड़िये जाइत अछि। धरतीसँ अन्न पैदा होइए आ निच्चाँ पताल आ ऊपर अकाससँ पानि टभकैए। तइमे मनुखक अपन तर्रदुत एते तँ बढ़िये जाइए जे तइले इनार, चापाकल इत्यादिक बेवस्था करए पड़ै छइ। ओना, अकासक पानि जहिना पवित्र बेसी अछि तहिना ओकर तर्रदुत सेहो कठिन अछि, मुदा असाधे अछि सेहो कहब उचित नहियेँ हएत। जखन कि तीनू साधन भरपुर अछिए। तखन अन्नक

अभाव किए होइए? पानि दूषित केना भऽ जाइए? वायु प्रदूषित किए भऽ जाइए..?

विवेकवान मनुख रहितो जिनगीक मूल-भूत ढाँचासँ ओझल भेल छी। ओना, ओझल होइमे सोल्हन्नी अपने दोख अछि सेहो नहियोँ कहल जा सकैए। सर्वविदित अछि जे कोनो बच्चाक जन्म अज्ञानावस्थामे होइते छै, जेकरा जीता-जीवनक सभ शक्तिक बीज रहितो ओहन शारीरिक अवस्था होइ छै जे कछुआक बच्चा जकाँ नहि जे पानिक ऊपर देने दौड़ैत गेलौं आ अण्डा खसबैत गेलौं। ओइ अण्डाक शक्ति ओहन छै जे माए-बापक खोज नहि करैए, खगतो नइ होइ छइ। लगले अपने फुटि बच्चा भऽ जाइए। बच्चा होइते दौड़ैक शक्ति ओकरामे आबि जाइ छइ। दौड़ैक शक्ति अबिते अपन जीवनक भार उठा लइए। मुदा केतबो कछुआक बच्चा पनिगर किए ने हुअए मुदा ओ अपन माइयो-बापकेँ कहाँ चीन्हि पबैए? मनुख तँ से नहि छी। एकरा माता-पिता परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिक सहारा छइहे। मनुखक जीवनक लेल भोजन मूल छी। भोजनक उपरान्त सभ्य समाजमे[22] जन्म नेने जुगानुकूल वस्त्रक आवश्यकता दोसर आवश्यकता भेल। जंगली जीव तँ मनुख आब रहल नहि, आबक मनुख तँ बहुत ऊपर उठि गेल अछि। जइ अनुपातमे जीवन अछि तही अनुपातक ने आवासो चाही, तहिना पढ़ाइ-लिखाइ, बर-बेमारीक इलाजक संग साहित्य-कला इत्यादि सेहो सभ चाहबे करी। यएह भेल मनुखक जिनगीक ढाँचा।

अखन धरि जे अन्धकार मनुख समाजक बीच व्याप्त अछि ओ प्रकृतिगत सेहो अछि आ कृत्रिमगत सेहो। समाजमे रूढ़वादी विचार, अन्ध-बिसवास जे पसरल अछि ओ कृत्रिमगत अन्धकारक भारी स्रोत छी। रंग-रंगक अन्ध-बिसवास पसरलो अछि आ नव-नव शिरासँ पसारलो जाइते अछि। अखन बेसी नहि, अखन एतबे जे मिथिलांचलक

मध्य जे दरभंगा-लहेरियासरायमे स्वास्थ्यक लेल अस्पताल बनल आ ओइमे आधुनिक ढंगक इलाजक जे बेवस्था भेल, की ओकर विरोध नइ भेल? खूब विरोध भेल। गाम-घरक जेतेक ठक-फुसियाह छल, सभ अपना-अपना ढंगे विरोध केलक। तँए की आइक मनुख ओकरा अधला बुझत। जीवनक एक मूल-भूत आवश्यकताक पूर्ति तँ भइये रहल अछि।

दुनियाँक बीच आजुक परिवेशक जिनगी केहेन बनए? ई तँ विचारणीय प्रश्न अछिए। अखन जेकरा शहर-बजार बुझै छी, ओइमे जिनगीक सभ मूल-भूत आवश्यकताक साधन बनि गेल अछि, जइसँ जिनगी असान भऽ गेल अछि। मुदा सीतापुर सन-सन गाम जे मिथिलांचलमे हजारो अछि, ओइमे किछु ने अछि! गामक जिनगी भारी बनि गेल अछि। तँए अपन मातृभूमिकेँ तियागि अपन शारीरिक मानसिक शक्तिकेँ जगा अपन-अपन परिवारक भरण-पोषण लेल एका-एकी सभ कियो दुनियाँक कोण-कोणमे जा बसि रहला अछि।

वैचारिक रूपमे अखनो हम मिथिलाक ओ रूप देखिये रहल छी, जे अदौक चिन्तनधाराक अनुकूल अछि। तँए हम सभ आजुक मिथिलाक चित्रांकन जँ नइ करब, तँ खाली जादू-टोना वा छू-मन्तर कहि देलासँ भए जाएत ई सम्भव नहि अछि। हजार-लाख बरख पहिलुका सतजुग-त्रेतासँ निकैल आइ हम सभ एकैसम सदीमे पहुँच चुकल छी।

बकास्त आन्दोलन सीतापुरमे शत-प्रतिशत सफल भेल। शत-प्रतिशत सफल होइक पाछू दू कारण भेल। ने आन गाम जकाँ सतरह रंगक राजनीतिक दल छल आ ने आजादीक आन्दोलनमे सतरह रंगक विचार। काँग्रेस आ वामपंथी–माने पूजीवादी आ समाजवादी–मात्र दुइये विचारधारा गाममे छल। जखने काँग्रेस महाधिवेशनसँ बकास्त जमीनक प्रस्ताव पास भेल तखने सीतापुरक दुनू दल मिलि आन्दोलन रूपमे आन्दोलित भेल। जइसँ सफल भेल। ओना काँग्रेसी कार्यकर्त्ता जे छला ओ स्वामी सहजानन्दजीक विचारसँ प्रभावित छला आ अपनाकेँ

स्वामीजीक भक्त सेहो बुझै छला।

सीतापुर गामक समाज सेहो देशकेँ कल्याणक दिशामे एक कदम बढ़ाएब बुझलैन। तँए आन गाम जकाँ ने सुदि-सवाइबला महाजन उठि कऽ ठाढ़ भेला आ ने भरना-बन्हकीबला भरनदार वा बन्हकीदार। तँए शान्तिपूर्ण ढंगसँ बकास्त आन्दोलन सीतापुरमे सफल भेल। मुदा बगलेक गाम रूक्मिणीपुरमे गधकिच्चैन भऽ गेल।

बीसमी शताब्दीक दोसर दशकमे[23] गाँधीजी बिहार आबि चुकल छला। जमीनक सिस्टम आ जमीन्दारी शोषण सुनला पछाइत आएल छला। तइसँ पहिने 1880 इस्वीमे काँग्रेस पार्टी विदेशी ह्यूम द्वारा बनि चुकल छल। जइक भीतर गाँधीजी अपन कार्य संचालन केलैन। 1925 इस्वीमे वामपंथी पार्टी सेहो देशमे बनि चुकल छल। 1927 इस्वीमे सोसलिस्ट पार्टी सेहो बनि गेल।

रूक्मिणीपुर गामक सौभाग्य बुझी वा दुर्भाग्य वामपंथी[24] पार्टी नइ बनल। वामपंथीक रूपमे समाजवादी[25] आ दच्छिनपंथीक रूपमे काँग्रेस बनल। दुनूक आधार बदैल जातीय आधार बनि गेल। सभ तरहक–माने ओकातिक हिसाब, सम्पैतिक हिसाब–लोक दुनू पार्टीमे विभाजित भऽ गेला। ओना रूक्मिणीपुरक आमजन सेहो अंगरेजी हुकूमतक विरोधमे ठाढ़ भेल, मुदा नेतृत्व रहल सम्पैतशाली लोकक हाथमे।

बकास्त आन्दोलन उठिते रूक्मिणीपुरमे जातीय उन्माद उठि कऽ ठाढ़ भेल। जइसँ जातीय सत्ता जोड़ पकड़लक। देश स्वतंत्र नइ भेल छल मुदा जातीय उन्मादक केतेक रंगक विवाद गाममे ठाढ़ भइये गेल छल। मालगुजारीक लेल बैशाख-जेठ मासक रौदमे ईंटापर ठाढ़ करब सदृश केतेको घटना भऽ चुकल छल। छोट-छोट गल्तीमे पानिमे नहा घोरनक छत्ता देहपर झाड़ि चुकल गेल छल। गोला-लाठी भरि, भरि-भरि दिन रौदमे सजाए देल जा चुकल छल, वएह गाम छी रूक्मिणीपुर।

बकास्त जमीनक आन्दोलनक हवा उठिते रूक्मिणीपुरक

सूदिखोर-महाजन उठि-उठि ठाढ़ भेल। जहिना काँग्रेस जातीय आधारपर भीतरे-भीतर विभाजित छल तहिना सोसलिस्ट पार्टी सेहो भइये गेल छल। नरमदल-गरमदल कऽ कऽ काँग्रेस आ सोसलिस्ट, प्रजासोसलिस्ट, संयुक्त सोसलिस्ट इत्यादि इत्यादि केतेको विभाजन दुनूक बीच भऽ चुकल छल। बकास्त जमीनक आन्दोलनसँ अगुआ गेल सूदिखोरी, महाजनी।

ओना, दुनू पार्टीक बीच एहेन सेहो भेबे कएल जे एक-दोसरकेँ अँखिया-अँखिया माने जातीय आधारपर बकास्त जमीनक आन्दोलन छिट-फुट रूपमे जरूर जागल। मुदा ओ सामुहिक नहि, राजनीतिक दलक अनुकूल जागल। जे मात्र विचारधाराक अनुकूल रहल, आन्दोलनक अनुकूल नहि। गामो तँ गाम छी। कोनो गाम एक जाइतिक तँ अछि नहि, जे किछु मुद्दापर एक भऽ चलबो करत। तहूमे रूक्मिणीपुर तँ आरो अजीव अछि। ऐ गाममे देवी-देवता, स्थान-धर्मशाला सभ किछु बँटाएल अछि।

रूक्मिणीपुरमे आठ कट्ठा जमीन दखल करैक प्रश्न उठल। गामक ई पहिल घटना छल। भेल ई जमीन दखल करैक प्रश्नपर एक जाइतिक शूमा बनल। काल्हि जमीनपर हर चढ़ौल जाएत। रातिये भरिमे रंग-रंगक योजना गाममे बनए लगल। आठ बजे भिनसरमे हर चढ़ैक समय जे निर्धारित छल, तइसँ पहिनहि, माने छबे बजेमे दू जाइतिक बीच एहेन मारि फँसि गेल जे दुनू दिससँ लहासे नइ खसल, एक दिससँ एकटा आ दोसर दिससँ दूटा मरबो कएल। अंगरेजक लड़ाइमे तँ रूक्मिणीपुरक एको गोरे जहल नहि देखने छला मुदा साल भरि दुनू जाइतिक लोक जहलेमे रहला, ईहो हिसाब तँ आजादीक आन्दोलनेक अंग ने भेल। आकि नइ?



शब्द संख्या : 2092, तिथि : 21 मई 2018

4.

सीतापुर गामसँ लऽ कऽ मिथिलांचल होइत सौंसे देशे स्वतंत्र भेल। देशक जन-जनमे स्वतंत्रताक जे खुशी होइ छै ओ खुशीक लहैर उठबे कएल। ओना, शासकक रूपमे अंगरेज सत्ता छोड़लक, मुदा देशक जे अपन समस्या हजारो बर्खसँ जनमैत आबि रहल छल ओ तँ आरो जटिल भइये गेल छल। जइसँ आगू बढ़ैक बदला पाछूए मुहेँ देश ससैर रहल छल। तैसंग अंगरेज बहादुर हिन्दु-मुसलमानक बीच भारत-पाकिस्तान बना नमहर झगड़ाक बीआ छीटिये देने छल। ओना, जँ देखल जाए तँ भारतक पच्छिमी सीमापर पच्छिमी पाकिस्तान भेल आ पूबसँ बंगाल कटि पूर्वी पाकिस्तान भेल, जे समुद्रसँ सेहो सटल अछिए। ओ भूभाग पाकिस्तान देशक रूपमे भेल, मुदा ऐठामक समाज माने मिथिलांचलक संग सीतापुरक समाज अदौसँ हिन्दू-मुसलमान, एक्के गाममे मन्दिरो आ मस्जिदो बना अपन पूजा-इबादत करैत आबिये रहल अछि। धर्मक नाओंपर जखन देशक विभाजनो भेल आ नव देशक रूपमे सेहो स्वतंत्र भऽ कऽ ठाढ़ भेल, तखन जातीय उन्माद नइ जगै सेहो तँ असम्भव नहियेँ अछि, सम्भव अछिए। एक-दोसरकेँ एक दोसर कहैत रहबसँ विवादक जड़ि मोटाइते छल। जइसँ दुनूक बीच जहाँ-तहाँ मारि-पीटि, खून-खच्चरसँ लऽ कऽ सम्पैतिक संग इज्जत-आवरूक लूट-पाट सेहो भेबो कएल आ अखन धरि होइतो आबिये रहल अछि।

देशक आजादीक लेल जे देशभक्त छला हुनका सबहक सोझामे

देश स्वतंत्र भेलासँ पूर्व जेतेक समस्या छेलैन तइसँ कतेको गुणा बेसी स्वतंत्रता प्राप्तिक पछाइत आगूमे एलैन। उजरल-उपटल, शोषित-पीड़ित देशक बागडोर देशवासीक हाथमे एलैन। जइसँ सबहक विचारमे द्वन्द्व उठबे कएल। ओना, आजादीसँ पूर्व वैचारिक चिन्तनधाराक ओ रूप नहि छल जइसँ समस्याक समाधान होएत। एकमुहरी कहियौ आकि एकसूत्री, सभ आन्दोलनीक उदेस अंगरेजी शासनक विरूद्ध छेलैन, तँए दोसर-तेसर समस्या गौण पड़ि गेल छल, जे स्वतंत्र भेला पछाइत प्रमुखतासँ आगू आएल। आइक जे देश भारत छी, वएह आजादीक समय 1947 इस्वीमे सेहो छल, किसानेक देश भारत तहियो कहबै छल आ आइयो कहबैए। भलेँ लोक अपन जमीन-जत्था, गाम-घर छोड़ि शहर-बजार किए ने पकैड़ रहला अछि। खाएर जे अछि, मुदा एते तँ हमरा सभकेँ बुझए पड़त किने जे औझुका जकाँ 1947 इस्वीमे देशक जनसंख्या नइ छल मुदा तैयो खाएब-पीब नइ घटै छल सेहो केना नइ कहल जाएत। आन-आन देशसँ अन्न, कर्जक रूपमे अबै छल आ हम सभ जनेर-गहुम खा-खा प्राण बँचबै छेलौं।

किसानक दशा-दिशा देखाएबो आ सुधारबोमे स्वामी सहजानन्दजीक जबरदस भूमिका रहलैन। किसानक समस्याकेँ ओ अति सुक्ष्म दृष्टिसँ देखै छला। सीतापुर गामक जे काँग्रेसी कार्यकर्त्ता सभ छला, ओ सभ स्वामीजीक भक्त रहथिन, जइसँ आन गामक अपेक्षा सीतापुरमे बकास्त जमीनक वापसी सफल रूपमे संचालित भेल। ओना, गाममे वामपंथी विचारधारा सेहो प्रवल रूपमे रहबे करइ। जेकर प्रमाण अखनो सद्यः सबहक सोझमे अछिए जे मिथिलांचलेक आन-आन गाममे अखनो बास भूमिक समस्या अछि, मुदा सीतापुरमे से नहि अछि। ओना किसानक जे निम्न-कोटि होइए माने सीमान्त किसान ओ सीतापुरमे बेसी अछि। किसान परिवारक जे नव पीढ़ीक लोक छैथ, ओ अपन-अपन खेतो-पथार आ घरो-दुआर छोड़ि शहर-बजारमे घर-दुआर बना रहए

लगला अछि। मुदा गामो तँ गाम छी, जहिना एक दिस जमीन छोड़निहार छैथ तहिना खेती केनिहारक अभाव सेहो भइये गेल अछि। सइयो रंगक ओझरी जमीनक बीच ठाढ़ अछिए।

एक दिस आजादीक किछुए दिनक पछाइत गाँधीजीक हत्या भेलैन तँ दोसर दिस देशक शासन-बेवस्था चलबैले संविधान सभ सेहो बनि, कार्यरत भेल। किसानी-ले जहिना माटिक जरूरत अछि तहिना पानियोंक अछिए। पानिक साधन बनबैले पच्छिमी-पूर्वी कोसी नहरक चर्च जोर-शोर चलिये रहल छल। तैसंग धार-धुरक बाढ़िक बचाउ-ले धारकेँ घेरबोक जरूरत छेलैहे। तैसंग सिंचाइक जरूरत सेहो छेलैहे। बोरिंगसँ पतालक पानि ऊपर आनि खेतकेँ पटौल जाइए, ई लोक मात्र सुनितेटा छल। वास्तविक रूपमे केतौ छल नहि। ओना, गाम-गाममे चरो-चाँचर आ पोखरियो-झाँखैर अछिए मुदा ओइसँ सिंचाइक समुचित बेवस्था हएब सम्भव नहि छल। एक तँ गाम-गामक पोखैर कोसी-कमला धारमे कटबो कएल आ भथानो भेल, मुदा जइ गाममे नहि भेल तहू गाममे छोट-छोट पोखैर रहने ओइमे ओते पानि जमा रहितो ने छल जइसँ सिंचाइक पूर्ति सम्भव होइत।

ओना, गाम-गाममे पोखैरबला, माने जिनकर पोखैर छिऐन ओ खेत पटबैक कोन बात जे लोककेँ नेहेबोमे रोक लगेने छल। किछु गामक पोखैरमे नहाइ-ले घाट फुटा-फुटा बनौल गेल छल तँ किछु गाममे किछु जाइतिक समुदायकेँ नहाइसँ रोकल जाइ छल। ओना, अठारह गण्डा पोखैरबला सीतापुर गाममे सिर्फ पाँचेटा पोखैर ओहन छल जइमे किछु जातिकेँ नहाएबसँ रोक छेलइ। ओना, सहजानन्द स्वामीजीक छत्रछायामे गाम-गामक किछु पोखैर सार्वजनिक भऽ गेल, मुदा अधिकांश गामक अधिकांश पोखैर बचले रहल। ओना, जहिना माटि उपजाक बखारी छी तहिना पानियोँ छीहे। मुदा से तँ समुचित बेवस्था

भेला पछाइत हएत।

गुलामीसँ आजादीक सीमापर तँ देश ठाढ़ भेल मुदा हजारो रंगक अन्ध-बिसवासो आ रूढ़िवादितो चिन्तन धाराकेँ जकैड़ कऽ पकड़नहि छल जइसँ नव चिन्तनधारा बनियेँ ने पेब रहल छल। हजारो बर्खक विदेशी शासनसँ त्रस्त समाज अखनो स्वतंत्रताक महत बुझिये ने पेब रहल छल। जइसँ मनुखक जिनगीक आधार मजगूत होएत। जहिना किसानी जिनगी अनबिसवासू छल तहिना आन-आन छोट-मोट धन्धोक छेलैहे। एक दिस जहिना गाम-समाजक किछु चुनल-चानल लोक समाजक आधारकेँ मजगूत बनबैक विचारक संग क्रियागत रूपमे सेहो दिन-राति एकबट्ट केने छला, तहिना अज्ञानक अन्धकारमे पसरल समाजकेँ अन्ध-बिसवासक अन्धकारे दिस समाज विरोधी शक्ति धकेल रहल छल, जइसँ देश आगू बढ़त आकि पाछू जाएत से निर्णय करब कठिन छेलैहे।

किसानक दुर्भाग्य छेलैहे जे जे पानि कृषि लेल अमृत छी ओ मौनसूनपर निर्भर छल। सालक मात्र तीन-चारि मास ओहन अछि जइमे बरखो होइए आ बर्खाक सम्भावित मास सेहो मानल जाइए, मुदा मौनसूनोक एहेन निसचित ठेकान नहियेँ अछि जे एते बरखा साले-साल हेबे करत। सम्भावित बर्खासँ कोनो साल बेसियो भऽ जाइए आ कोनो साल कम्मो होइए। तैबीच एहनो तँ होइते अछि जे कोनो साल नहियोँ भेल।

पैछला शताब्दीक सबहक ऐतिहासिक अनुभव लोककेँ छैन्हे जे जहिना उनैसमी शताब्दीमे पचीसटा रौदी भेल तहिना अठारमी शताब्दीमे सेहो भेबे कएल। रौदी तँ रौदी छी, ओकरो कि कोनो ठेकान अछि जे एत्ते हएत कि एतबे हएत? एक मौसमक सेहो होइए आ दू-तीन-चारि-पाँचक संग बारह बर्खक सेहो भेबे कएल अछि। बारह बर्खक रौदीक अनुभव

मिथिलांचलक मिथि मालिनिकेँ सेहो छैन्हे। बुझले अछि जे बारह बर्खक रौदीक पछाइत सीताक जन्म भेलैन सेहो जखन जनकजी अपने हाथे हर पकैड़ जोतलैन, तखन।

किसानक लेल जहिना माटि पूजनीय सम्पदा अछि, तहिना पानियोँ अछि। मुदा ओ तँ तखन पूज्य हएत जखन ओकर विधिवत् अराधना करब। मुदा ऐठाम से तँ छल नहि। मिथिलांचलमे अनिसचित जीवन सभ जीब रहल छला जइसँ कोनो साल समुचित बरखा भेने जहिना खुशहाली अबै छल तहिना समुचित बरखा नइ भेने ओकर विपरीत स्थिति सेहो होइते छल। तैसंग समाजमे पसरल रूढ़वादी चिन्तनधारा भाग्य-तकदीरकेँ अगुआ समाजक पछुआ पकैड़ सेहो पछुऐबते छल। माने नव चेतनाक उदयकेँ रोकिते छल। मनुखक जिनगीक एक-एक समस्याकेँ हजार-हजार रंगक विचार तेना ओझरा देने छल जे अपनो जीवन-मरण लोक अपनेसँ नइ बुझि रहल छला। बरखा नइ भेल तँए कियो जटा-जटीनक नाच नाचि-नाचि बेंगकेँ उखैरमे कुटि, ओहन लोकक आँगनमे फेकै छल, जेकर गिनती समाजमे झगड़ाउ लोकमे होइ छल।

रौतुका घटना भोर होइते झगड़ा-लड़ाइक रूप लइ छल। तहूमे सामुहिक रूपसँ फेकल बेंग, एकाकी परिवारक बीच विवाद ठाढ़ होइते छल। तेतबे नहि, बरखा नइ भेने पैघ-पैघ भगताइयो होइते छल आ जगो-जाप होइते छल। एक तँ उपजा नइ भेने लोकक घर खाली रहै छेलै जइसँ जीवन कठिन छेलै, तैपर सँ परियाप्त खर्च सेहो होइते छेलइ।

माटि-पानिक संग किसानी जिनगी-ले नीक-नीक बीजक संग नीक-नीक लूरि[26]क जरूरत सेहो अछिए। कोनो देशक, माटि-पानि-खान-पहाड़ मूल उत्पादित सम्पदा छी। ओना ऐ चारूक हिसाबे, माने माटि-पानि-खान-पहाड़सँ अप्पन देश बहुत सम्पन्न अछिए। तहूमे

मिथिलांचल तँ आरो बेसी सम्पन्न अछि। मिथिलांचलक जेहने माटि पवित्र[27] अछि तेहने पानि सेहो गुनगरक संग परियाप्त सेहो अछिए। दर्जनो नदी जहिना सालो भरि बहता अछि, तहिना मौसमक अनुसारे बरखा सेहो होइते अछि। दुनियाँक कोनो देश एहेन नहि अछि जेकर माटि एहेन उर्वर होइ। जँ कोनो देशक माटि एहेन उर्वर अछियो तँ ओकर दोसर साधन ओहन नइ अछि, जेहेन अपना सबहक अछि। कृषिक पैदावार मौसमक अनुकूल सेहो होइते अछि। तहूमे अपन देश आन-आन देशसँ बेसी नीक अछि। किएक तँ किछु देश एहेन अछि, जैठाम सालो भरि एकरंगाहे मौसम रहैए वा एकसँ आगू बढ़ि डेढ़-दू मौसमक होइए। माने ई जे कोनो देश सालो भरि ठण्ढे रहैए तँ कोनो देश सालो भरि गरमे रहैए। तहूसँ विचित्र ई अछि जे कोनो देशमे बरखा होइते ने छै, तँ कोनो देशमे सालो भरि बरखा होइए। जइ देशमे सभ साल, सालो भरि बरखे हएत तइ देशमे कृषि कार्य केना हएत? मुदा ओइठाम प्रकृतिक अनुकूले पैदावार होइए।

तथापि अखन धरि माने बीसमी सदीक पाँचम-छठम दशक धरिक बीच जे किसान देश भारतक किसानी जिनगी रहल ओ आन बहुतो देशसँ पछुआएल रहल, जइसँ जे उत्पादन[28] हेबा चाही, से नहि भऽ पबै छल। तेकर अनेको कारण छल। जहिना समुचित जानकारक[29] अभाव छल तहिना समुचित खेती करैक सम्बन्धित औजारक संग समुचित बेवस्थाक अभाव सेहो छेलैहे। जुग-जुगसँ अबैत जहिना कृषि औजार छल तहिना जुग-जुगसँ अबैत कृषि कार्यक तकनीको छेलइ। बेवस्था ओहन छल नहि जे समुचित ढंगसँ कृषि संचालित कएल जाइत। ओना, बेवस्थाक एक नहि दू दिशा अछि, मुदा दुनू दिशा अन्धकारपूर्ण छल।

जहिना नव सरकार गठित भेने साइयो-हजारो रंगक नव-नव समस्या उठैए, तहिना देशी सरकार गठित भेने, तहूमे अंगरेजी हुकुमतक

तुरन्त पछाइत देश भरिमे अनेकानेक समस्या आगूमे आएल। ओना, सरकारी तंत्रकेँ मजगूत आ कमजोर हेबाक सेहो कारण अछि मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे जैठाम पेटक[30] समस्या विकराल रूपमे मुँह बौने छल, तैठाम जिनगीक जे दोसर मूल आवश्यकता छल तैपर धियान केना जाएत? तहूमे अंगरेजी शासनक खिलाफ साधारण लड़ाइयो तँ नहियेँ भेल। कोनो दू देशक बीच लड़ाइ भेने जेकरा जमीनपर लड़ाइ होइए, ओकर अर्थबेवस्था कमजोर होइते अछि। तँए सरकारी बेवस्था कमजोर छेलैहे जइसँ कृषि पंगु बनले रहल। ई भेल एक दिशा, दोसर दिशा अछि सामाजिक बेवस्था। अपना देशक सामाजिक बेवस्था सेहो कृषि क्षेत्रक प्रतिकूले छल। सामाजिक रूपमे कहियो कृषिकेँ समुचित ढंगसँ बेवस्थित करैक विचार समाजक मनमे उठबे ने कएल। ओना, सोल्होअना नहि उठल, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। गामक-गाम बीच जखन रौदी पसरैत छल तखन ओइ गाम होइत जे बहता धार सभ छेलै, ओकरा सामाजिक रूपमे बान्हि[31] गामक खेत पटौल जाइ छल। मुदा तोहूमे जबरदस बाधा उपस्थित भेल। बाधा ई भेल जे जिनका जेतेक बेसी सिंचाइ होइतैन तिनकर सहयोग तेतेक कम भऽ जाइत छल। माने ई जे जिनकर खेत बेसी पटै छेलैन, जइसँ बेसी उपजा होइ छेलैन, ओ रौदी-दाहीक ताकमे रहै छला। ताकक कारण ई जे महगकेँ अन्नो बेचलौं आ सूदि-सबाइक संग बन्हकी-भरनाक लाभ सेहो उठेलौं। मुदा मध्यम किसानसँ लऽ कऽ सीमान्तो किसान आ खेतमे काज केनिहार मजदूरोक दशा कमजोरे होइ छल। जइसँ जहिना कृषि क्षेत्र पंगु बनल छल तहिना खेतीपर जीवन धारण करैबला किसानो-बोनिहार पंगु बनले छला। ओना, जएह साधन वा जएह सम्पदा छल ओकरो उपयोग समुचित ढंगसँ कएले जा सकै छल। कम्मो साधनसँ नीक काज होइए आ बेसियो साधन रहनौं जँ करैक इच्छा नहि रहल तँ किछु ने होइए।

नव सरकार गठित भेला पछातियो कृषि क्षेत्रकेँ अनदेखी कएल

गेल, जइसँ अछैते साधनक[32] रहने पेटक भूख रहबे कएल। यएह देश छी जे 1971 इस्वीक पछाइत भूखक[33] समस्या मेटौलक से तँ उन्नैस साए पचासो-बावनमे मेटाएल जा सकै छल। जे समस्या भूत बनि देशकेँ पछुएने रहल।

कृषि क्षेत्रमे विशाल साधन मौजूद अछि। जे ओहिना-क-ओहिना पंगु बनल रहल। ने पानिक उपयोग समुचित ढंगसँ भेल आ ने माटिक भेल। दुनियाँक अनेको छोट-पैघ देश ओहन अछि जे कृषि पैदाबारसँ सम्पन्न आइये नहि, बहुत पहिनहिसँ रहल अछि।

1952 इस्वीक चुनाव भेल। बहुत किछु अधिकार आमजनकेँ देल जा चुकल छल, मुदा सामाजिक ढाँचा ओइ अनुकूल नइ छल, तँए बेसी अधिकार-कर्तव्यक बोधो आ बेवहारो संविधानक पन्नेमे दबल रहि गेल। ओना, सौंसे देशमे चुनावक पद्धतिकेँ अपना चुनाव भेल, मुदा नेंगरा देशक नेंगरी आजादीक जे होइ छै, सएह भेल।

सीतापुर गाममे मात्र लोअरे प्राइमरी स्कूलटा छल, आगूक नहि छल। ओना, सीतापुरक बगलक गाम–रोहितपुरमे मिडिल तकक पढ़ाइ होइ छल। ओहू गाममे हाइ स्कूल नहि छल। सीतोपुर आ रोहितोपुरसँ दस कोस हटि नन्दपुरमे हाइ स्कूल छल, मुदा ओइठाम पढ़ैले छात्रावासमे रहब जरूरी छेलैहे।

1953 इस्वीमे हरिचरण मिडिल पास केलक। ओना, देवचरण सेहो साठि बर्खक उमेर पार कइये चुकल छला जइसँ जेना पहिने काज-उदम करै छला तेना आब नहियेँ कएल होइ छेलैन। जेहनो खेती पहिने होइ छेलैन, तेहनो आब नइ भेने उपजा-बाड़ी सेहो कमए लगलैन। देवचरणक बेटा- राधाचरण अकिंचन छला। खेती करैक अपना कोनो ऊहि नहि छेलैन आ जेहो छेलैन तहूमे देह चोरबै छला। देह चोराएब भेल काजसँ छाँह काटब, माने नइ करब। राधाचरणक बेटा- हरिचरण सेहो

तेरह-चौदह बर्खक भइये गेल छल। साधनक अभावमे हरिचरण हाइ स्कूलमे नाओं नहि लिखा सकल। अपन गिरैत शक्तिकेँ देखैत देवचरण हरिचरणकेँ कहलैन-

"बौआ, आब हमर कोनो आशा नइ करह। तखन तँ खेती करैक जे लूरि अछि, बेसी-सँ-बेसी ओ तोरा बुझा देबह।"

हरिचरणक मनमे अखन तक नोकरी करैक कोनो विचार नहि उठल छल। उठबो केना करैत, एक तँ बेसी पढ़ल-लिखल नहि, दोसर-गामक-गाम बेरोजगार युवकसँ भरल छल। बाबाक विचार हरिचरण मानि बाजल-

"बाबा, अपन काज हुअए आकि अनकर काज, केतौ तँ मेहनतेक फल भेटत। तहूमे जखन अपना खेत-पथार अछि तखन जँ नोकरी करए जाएब तँ अपन खेती-पथारी केना हएत?"

हरिचरणक नव उदित विचारकेँ देवचरण नीक जकाँ विचारलैन। जेते विचारमे गम्भीरता अबैत जानि तेते मन मुदितसँ प्रमुदित होइत वा फुलितसँ प्रफुलित वा फलित होइत बढ़ल जाइन। अपन परिवारसँ परिचित करबैत देवचरण बजला-

"बौआ हरि, पूर्वजक अरजल जे सम्पैत छह ओ बीचमे बोहा गेल छेलह, माने निलाम भऽ गेल छल, ओकरा हम पुन: जीवित करैत अपन बनेलौं। गामेमे नजैर उठा कऽ देखह जे केते परिवार अछि जेकरा तीन बीघा खेत छइ। से तँ अपना भइये गेलह।"

बिच्चेमे हरिचरण बाजल-

"हँ, से तँ भइये गेल बाबा।"

हरिचरणक स्थिर होइत विचारक वृक्षकेँ देवचरण आरो सिंचित करैत बजला- "बौआ हरि, अखन तूँ नव-उदित सूर्य जकाँ लौहित लाल तँ

नहि मुदा पीड़ित पिरौंछ लालीक रूपमे जरूर छह, जेना-जेना समय आगू बढ़ैत जाएत, तेना-तेना लालीपन धबैत जेतह। तँए, अखन बेसी नइ कहबह। एकेटा अन्तिम बात अछि से पुछि लइ छिअ।"

पिपाशु पक्षी जकाँ हरिचरण बाजल-

"की पुछए चाहै छी बाबा?"

देवचरण बजला-

"बौआ, मौखिक परीक्षा जकाँ पुछबेटा नइ करै छिअ। संकल्पित रूपमे पुछै छिअ। अपन समर्पण अपना-ले करबह आकि अनका-ले?"

बाबाक विचार सुनि हरिचरण बाजल-

"बाबा, अखन अहाँ जीबै छी तखन हमर संकल्प आकि विकल्पे की।"



शब्द संख्या : 2177, तिथि : 24 मई 2018

5.

पन्द्रह अगस्त 1947 इस्वीकए लालकिलापर स्वतंत्र देशक तिरंगा झण्डा फहरा गेल। 30 जनवरी 1948 इस्वीकए गाँधीजीक मृत्यु गोली लगलासँ भऽ गेलैन। 26 जनवरी 1950 इस्वीकए देशक अपन संविधान लागू भऽ गेल। 1952 इस्वीमे लोको सभा आ राज्यक विधान सभा-ले सेहो चुनाव भऽ गेल।

1952 इस्वीक आम चुनाव देशक ऐतिहासिक चुनाव छल। ऐतिहासिक ऐ मानेमे जे जेतेटा देश भारत आइ अछि ओतेटा भारत शासनक दृष्टिसँ पहिने नइ छल। राजा-रजबारसँ लऽ कऽ जमीन्दार, महंथानासँ देश भरल छल। किसानक देश भारत रहितो किसानक मूल पूजी[34] राजा-रजबारसँ लऽ कऽ महंथाना-जमीन्दार धरिक हाथमे घेराएल छल।

ओना, लोक सभाक चुनावमे जहिना देशक शासन (केन्द्र शासन) काँग्रेस सरकारक हाथ आएल तहिना राज्यक शासन सेहो काँग्रेसक हाथमे आएल। मुदा केन्द्रोमे आ राज्योमे एकछाहा काँग्रेसेक प्रतिनिधिटा नहि पहुँचला, अनेको राजनीतिक पार्टीक प्रतिनिधि सभ पहुँचल छला। दिल्लीक शासनमे जहिना पण्डित जवाहरलाल नेहरूक नेतृत्वमे काँग्रेसी सरकार बनल, तहिना अनेको पार्टीक बीच कम्युनिष्ट पार्टीक प्रतिनिधि सेहो विरोधी दलक नेतृत्वमे ठाढ़ भेला। काँग्रेस पार्टीक अलाबे आन सभ

पार्टीसँ बेसी कम्युनिष्ट पार्टीक प्रतिनिधि छला। चुनावसँ पूर्व सभ पार्टी अपन-अपन घोषणा पत्रक माध्यमसँ अपन-अपन कार्यक्रम निर्धारित कऽ नेने छल।

देशोक बीच आ राज्यो सभक बीच सामाजिक-आर्थिक विषमता तँ छेलैहे। कोनो-कोनो राज्य औद्योगिक क्षेत्रमे अगुआ जिनगीक मूल समस्याक समाधानमे सेहो अगुआ गेल छल, जइसँ ओइठाम रोजगारसँ लऽ कऽ स्वास्थ्य, शिक्षा आदि सभ किछु अगुआ गेल छेलइ। मुदा अधिकांश राज्य पछुआएल छल। पछुआएबो एक्के रंगक नहि छल, रंग-बिरंगक छल। कोनो राज्य अपन जमीनकेँ[35] प्रगतिक पटरीपर चढ़ा नेने छल, तँ कोनो राज्य पाछुए मुहेँ ससैर रहल छल। केरल-बंगालक संग आनो-आनो राज्य सभ अपन अर्थ बेवस्थाकेँ पटरीपर चढ़बए लगल छल। ओना, अपन बिहारो तइमे पाछू नहि छल। घराड़ीक जमीनकेँ[36] बेलगान करबा चुकल छल। बकास्त जमीनक आन्दोलन सेहो मिथिलांचलमे जमि कऽ भेल। मुदा बकास्त जमीन तँ ओ जमीन ने भेल जेकरा अंग्रेज बहादुर सर्वे-सेटलमेन्टसँ 1903 इस्वीमे फाइनल केने छल। मुदा तँए कि पुस्त-पुस्ताइनसँ लोक खेती करैत नइ आबि रहल छला, सेहो बात तँ नहियेँ छल। मुदा हुनका सबहक लेल जमीनक कोनो अधिकार पत्र नइ छेलैन, तँए ओ सभ बँटेदारक रूपमे अपनाकेँ बुझै छला। जमीन उपजबैत रहला, अगो-जनारसँ लऽ कऽ अधिया-बाँट बाँटैत खेतबलाकेँ अपन कर्जक सुदि-सबाइ चुकबैत खाली हाथे घर घुमैत रहला। तँए एहेन खेतिहर लेल नव सिरासँ बटाइ कानूनक जरूरत भेल। ओना, किछु परिवारकेँ बेलगान घराड़ी छेलैन मुदा हुनको सबहक घराड़ीक लूट-पाट होइते रहैन। ओना, बेलगान घराड़ीपर रहनिहार आ खेत उपजौनिहारक नाओंसँ 'सिकमी बँटाइ'क खतियान सर्वेमे बनि चुकल छल मुदा तेकर अतिरिक्तो आधासँ बेसीए बँटेदार छुटलो छलाहे। मिथिलांचलक साम्यवादी पार्टी अपन चुनावी घोषणा पत्रमे अपन

समस्या-समाधानक प्रस्ताव रखि चुकल छल, खेतीक लेल माटि मूल पूजी छीहे। लिखितसँ मौखिक धरि अपन मूल समस्या जेना- भूमिहीनकेँ बासभूमि, खेत उपजौनिहारकेँ सिकमीक बटाइक अधिकार, अधिक जमीन रखनिहार जमीन्दार-महंथानाकेँ भूमि हदबन्दीक[37] भीतर आनब आ ओकर शेष जमीन उपजौनिहारक हाथमे देब इत्यादि। तैसंग पीबैसँ लऽ कऽ खेत पटबै धरिक पानिक बेवस्था, अइले कोसी नहरिक संग गाम-गाममे पसरल पोखैरिक जे समस्या सभ छल तेकर समाधान सार्वजनिक रूपमे हुअए, इत्यादि-इत्यादि। ऐ सभ समस्याक समाधानक लेल साम्यवादी पार्टी उठि कऽ ठाढ़ भेल।

मिथिलांचलक सौभाग्य रहल जे ऐठाम महान-महान साधक लोकनिक आवाजाही सदिकाल होइत रहल। खाली आबाजाहिये टा नहि भेल, ओ सभ मिथिलांचलकेँ अपन कर्मभूमि बना जीवन भरि सेवा करैत रहला।

सन् 1955 मे विनोबा भावे झंझारपुर एला। नमहर सभा भेल छेलैन। अखन जे थानासँ पच्छिम औद्योगिक क्षेत्रक रूपमे देखै छी, ओइ समय ओ नमहर फिल्ड छल, जैपर फुटबॉल सेहो खेलल जाइत छल, ओही फिल्डपर सभा भेल छल। भूदान आन्दोलनक रूपमे जमीनक आन्दोलन विनोबाजी ठाढ़ केलैन। हुनक माँग रहैन अपन जमीनक छबम् हिस्सा जमीन दान करू।

एक दिस तेलांगनाक सशस्त्र लड़ाइ जारी छल आ दोसर दिस भूदानी आन्दोलन शुरू भेल। ऐ आन्दोलनमे प्रेम-पूर्वक स्वेच्छासँ अपन जमीन दान कएल जाइ छल। गाम-गाममे भूदान कमिटीक गठन भेल छल।

परिवारक रूपमे जहिना जीविकाक लेल खेत आ खेतीक समस्या छल तहिना गाम-समाजक रूपमे सेहो अनेको समस्या छल। एक दिस

नव स्वतंत्र देश, दोसर दिस धरतीसँ अकास धरि अनेको समस्या सबहक सोझामे उपस्थित भेल। गाममे एक दिस जहिना पेटक समस्या छल तहिना दोसर दिस वस्त्र, आवास, शिक्षा आ चिकित्साक समस्या सेहो छल। गाम-गाममे हैजा, चेचक, मलेरिया इत्यादि अनेको संक्रामक बेमारीक प्रकोप होइत रहै छल। जइसँ अनेको लोक मरै छला। ने पढ़ाइ-लिखाइक लेल विद्यालय छल आ ने बेमारीक लेल चिकित्सा सुविधा। तैबीच अन्ध-बिसवास तेना पसरल जे मनुखकेँ समुचित दिशा दिस बढ़ए नहि दैत छल। अन्हार घर साँपे-साँप सदृश वातावरण बनल छल।

राज्यो सरकार आ केन्द्रो सरकारक बीच अपन-अपन एहेन-एहेन समस्या सभ छल जे अर्थाभावमे किछु कइये नहि पेब रहल छल। ओना, अर्थाभाव सेहो छल मुदा मूल अभाव छल कुशल केनिहारक।

मिथिलांचल सभ दिनसँ धार-धुरक इलाका रहबे कएल अछि। दर्जनो धार मिथिलांचलक बीच अछिए। ओहू धार-धूरमे सभ धारक गति-विधि एक्के रंग सेहो नहियेँ अछि। किछु धार एहेन अछि जे बेसी काट-खोंट करैए आ किछु एहेन अछि जे बहैत तँ अछि सालो भरि मुदा समटल गतिये। तैसंग मरल धार सेहो अछिए। मरल धारक माने भेल, ओहन धार जे बरसातमे तँ किछु दिन बोहितो अछि मुदा रहैए सभ दिन सुखले। जइसँ ने ओइ जमीनमे उपजा-बाड़ी होइए आ ने उपयोगक कोनो दोसरे काज। तैसंग माटिक रूपमे सेहो दुर्भाग्य रहल अछि जे उपजाउ माटि माने उर्वर शक्तिबला खेतक माटि भँसि गेल आ ओकरा ऊपर दोखरा बाउल भरि गेल।

कोसी-कमला नदीक उपद्रव सबहक सोझमे छेलैहे। ओकरो रोक-थामक लेल मिथिलाक किसान उठि कऽ ठाढ़ भेला। कोसी नदीकेँ दुनू भागसँ बान्हि ओइ पानिक उपयोग सिंचाइ-ले करैक योजना बनल। बान्हक संग फाटकबला पुलो आ नहरोक योजना बनल। तैसंग बिजली

उत्पादन लेल डैम बनबैक आवाज सेहो उठले छल। ओना, देश नव-नव स्वतंत्र भेले छल। जइसँ देशवासीमे स्वतंत्रताक उत्साह सेहो बनले छेलैन। कोसी नदीक दुनू तटबन्ध बनबैले एकाएक जन-सैलाव उमैड़ गेल। माने जन-आन्दोलनक रूपमे सहयोग भेल। गाम-गामसँ लोक अपन श्रमदान करैले पहुँचल। बान्हो बनल, नेपाल सीमाक बीच फाटकबला पुलो बनल। सबहक मनमे बिसवास भेल जे दुनू देशक जमीनक सिंचाइ हएत। मुदा आइ लक-धक साठि बर्ख बीतलोपर कोसी नहरक योजनाक की गति अछि, ओ सबहक बीच अछिए। देशक आजादीक लड़ाइमे जे पीढ़ी बलिदान देलैन हुनकर आइ तेसर पीढ़ी गुजैर रहल अछि, गाम-घर छोड़ि-छोड़ि ओ सभ पड़ाइन कए रहला अछि।

जहिना अपना देशमे अंगरेजी शासनक विरूद्ध 1935 इस्वीक पछाइत जन-आन्दोलन उग्र भेल छल तहिना दुनियाँक बीच सेहो युद्ध जारी छल, जेकरा द्वितीय विश्व युद्धक रूपमे जनै छी। दू भागमे बँटि दुनियाँक बीच जबरदस लड़ाइ फँसि चुकल छल। पहिल विश्व युद्धक भुक्तभोगी जर्मनी भऽ चुकल छल। 1917 इस्वीमे रूसमे साम्यवादी पार्टीक बीच सत्ता आबि चुकल छल। दोसर विश्वयुद्धमे एक दिस साम्यवादी देश आ दोसर दिस साम्राज्यवादी देशक समूह आमने-सामने भऽ चुकल छल।

ओना, दुनियाँक इतिहास लड़ाइयेक घटनासँ भरल अछि, मुदा अखन धरिक जे लड़ाइ–दू देशक बीच–रहल ओ एक विचारक कहियौ आकि एकधाराक, बीच रहल। किएक तँ एक्के विचारधाराक शासन-तंत्र अपन-अपन बजार-ले लड़ल छल। मुदा द्वितीय विश्व युद्ध, जेकरा शीत युद्ध सेहो कहै छिऐ, ओ वैचारिक रूपमे लड़ाइ भेल।

द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त भेला पछाइत नव-नव केतेको देश साम्यवादी शासन अंगीकार कऽ लेलक। तीस सितम्बर 1949 इस्वीकए

माओत्से तुंगक नेतृत्वमे चीन सेहो साम्यवादी शासन अंगीकार कऽ लेलक। जे देश ओहू समयमे दुनियाँमे सभसँ अधिक जनसंख्याबला देश छल।

द्वितीय विश्व युद्धसँ पूर्व दुनियाँक अनेको देश साम्राज्यवादी देशक उपनिवेश छल। अपन देश[38] सेहो छेलैहे। ओइ सभ साम्राज्यवादी देशक एक्केटा मनसा छेलै जे उपनिवेश देशक लूट-खसोट कऽ अपने समृद्धशाली बनल रही। आम-जनक जीवनसँ कोनो मतलब नहि छल, मनुखक जिनगी जानवारोक जिनगीसँ बत्तर बनले छल। ओही बत्तर देशमे अपनो सभ छेलौं। द्वितीय विश्व युद्धमे किछु साम्राज्यवादी देश पस्त भेल आ साम्यवादी देश- सोवियत संघ सेहो सभ तरहेँ जर्जर भऽ गेल। मुदा किछु भेल, तैयो सोवियत संघक आम-अवाम अपन देशक सत्ता कायम रखलैन। दुनियाँक जन-गण अपन अस्तित्वकेँ[39] सेहो चिन्हलैन। जइसँ युद्ध समाप्त भेला पछातियो देश-देशक भीतर जन-आन्दोलन सेहो जोड़ पकड़लक। दुनियाँक बीच दुनू विचारधारा–माने पूजीवादी-साम्राज्यवादी आ समाजवादी-साम्यवादी–अपना-अपना गतिये बढ़ए लगल। एका-एकी केतेको देश साम्राज्यवादी जालसँ निकैल साम्यवादी विचारधाराक अनुकूल अपन प्रगतिक बाट स्वयं बनबए लगल। जइसँ दर्जनो देश साम्यवादी बेवस्था अपनौलक।

अपना सभ एशिया महादेशमे छी। जे आन सभ महादेशसँ सघन आबादीबला महादेश अछि। चीनमे साम्यवादी शासन स्थापित भेला पछाइत, वियतनाममे साम्यवादी आन्दोलन जोर पकड़लक। ओना, छोट-छीन देश वियतनामो अछि आ कोरिया सेहो अछि, मुदा दुनूमे जबरदस लड़ाइ साम्राज्यवादी देशक संग फँसल। कोरिया बँटा कऽ दू भाग भऽ दू देश बनि गेल। मुदा वियतनाम बँटाएल तँ नहि, मुदा आइ धरिक दुनियाँक ऐतिहासिक लड़ाइमे सभसँ अधिक दिन तक लड़ैबला

देशमे अपन प्रथम स्थान तँ बनौनहि अछि। वियतनाम लक-धक 34 बर्ख धरि लगातार लड़ैत रहल। हो-ची-मिन्हक नेतृत्वमे वियतनामक युद्ध भेल छल। बम-बारूदक प्रभाव वियतनामक एक-एक इंच जमीनक उर्वराशक्तिकेँ नष्ट कऽ देलक। मुदा साम्यवादी शासन बनिते ओइठामक जन-गण देशभक्त सभ अपन-अपन पूर्ण शक्ति लगा देशकेँ समृद्धशाली आ उन्नतशील बनेबे केलैन।

देवचरण जहिना अपना आँखिये देशक शासनक उतार-चढ़ाव देखने छला तहिना अपन परिवारक उतार-चढ़ाव सेहो देखते आबि रहल छला। 1920 इस्वीसँ पूर्व जे देशक आजादीक आन्दोलन छल ओ शुरूआती अवस्थामे छल, तँए आम जन-गण तक नहि पहुँचल छल। मुदा गाँधीजीक जे चम्पारण सत्याग्रह भेलैन, तइ दिनसँ देशक जन-गणक बीच नव शक्ति पैदा लेलक। 1917 इस्वीमे गाँधीजी चम्पारण आएल छला। स्पष्ट मुद्दा हुनकर छेलैन। मुद्दा छेलैन जमीन्दारक शोषण। केना जमीन आ जमीनक उपजाक लूटक संग आरो-आरो केतेको लूट धनीक वर्ग[40] गरीबक करै छल, से विचार सार्वजनिक मंचपर उठल। ओना, ओइसँ पूर्व अंगरेजी नीलहा वेपारी जमीनक छीना-झपटी केना करै छल से बात नीलक कोठीक इर्द-गिर्दक किसान खूब नीक जकाँ जनिते छला मुदा ओ शोषण सीमित दायरामे छल, तँए कम लोकक नजैर ओइ दिस बढ़ल।

नीलक उपजाक लेल अन्नक उपजसँ अधिक उर्वर शक्तिबला जमीन चाही। एक बेर जइ खेतमे नीलक खेती भऽ जाइ छल, ओ खेत चारि-पाँच बर्खक लेल उस्सर जकाँ भऽ जाइ छल। तेपटाक हिसाबसँ किसानक खेत नीलहा वेपारी लइ छल। तेपटाक माने भेल जे जँ छह कट्ठाक कोला अछि तँ ओइमे मात्र दू कट्ठामे पहिल साल नीलक खेती करबै छल। लक-धक दू बर्ख एक खेपक नीलक फसलमे समय लगै

छेलइ। मुदा से आन्दोलनसँ पूर्वहि, माने 1920 इस्वीसँ पूर्वहि समाप्त भऽ गेल छल।

नीलक खेतीसँ लऽ कऽ सिकमी, भाउली इत्यादि जमीनक निलामी तक देवचरण देख चुकल छला। अपनो पूर्वजक जमीन केना निलाम भेलैन सेहो पिताक मुहेँ सुननहि छला। तैसंग अपने केना पुन: अपन पूर्वजक जमीन आपस करौलैन सेहो बुझले छेलैन। अपन पारिवारिक अस्तित्वकेँ जीबैत देख देवचरणक मनमे जहिना खुशी होइत रहैन तहिना अपन ऐगला पीढ़ी- अकिंचन राधाचरणकेँ देख दुख सेहो होइते छेलैन। राधाचरणकेँ कमाइ-खटाइक कोनो ऊहि नहि छल। ओना, देवचरण अपना जनैत राधाचरणकेँ सुधारैक कम परियास नहि केलैन मुदा मनुखक सोभावो तँ सोभाव छी। जइ अनुकूल लोक अपन जिनगी सेहो बनैबते अछि। गाममे केतौ कीर्तन, अष्टयाम, नवाह होइत छल तँ माता-पिताकेँ बिनु कहनौं राधाचरण ओइठाम पहुँच जाइ छल। खाइ-पीबैक बेवस्था सेहो रहिते छेलइ। ओहीठाम रहि खेबो-पीबो करै छल। तहिना केतौ नाचे भेल आकि भोजे-भन्डारा भेल तँ राधाचरण चुपचाप, माने परिवारमे बिना केकरो किछु कहने ओतए चलि जाइ छल। भलेँ ओकरा अधला नजरिये सेहो देखल जा सकैए मुदा से तँ अछि नहि। देवचरणकेँ लाख कोशिश केलाक पछातियो राधाचरणमे कोनो सुधार नहि भेल। माने राधाचरणकेँ ने श्रम करैक बोध भेल आ ने श्रम-जीविक ज्ञाने भेल। ओना, देवचरण अपन परिवारो आ अपन कारोबारक संचालन अपना विचारे करिते छला जइसँ कोनो वैचारिक बेवधान नहियेँ होइ छेलैन मुदा परिवारक बीच मनुखक जिनगी तँ नदीक धारा सदृश प्रवाहित होइते रहैए, तइमे किछु बाधा तँ देवचरणक नजरिक सोझमे पड़िते छेलैन। पड़बो केना ने करितैन? मनुख धरतीपर बहैत धार थोड़े छी, ओ तँ चेतनशील जीवनक धार छी। जइसँ चेतनशील मनुखक चेतनापर प्रभाव पड़ब सोभाविके छल। ओहुना देखै छी जे धार सभमे जखन धाराक मध्य बाउल भरि

जाइए–माने पानिक बहावक बीच बाउल जमा भऽ जाइए–तखन पानिक धाराकेँ रोकिते अछि, जइसँ धाराक प्रवाह ठमैक दोसर-तेसर दिस मुँह बना बहए लगैए, तहिना ने मनुखोक वंशगत विचारक प्रवाहमे श्रमहीनता एलासँ दिशाहीनता अबिते अछि। तँए देवचरणकेँ चिन्तित हएब सोभाविके छेलैन।

संयोग बनल, जहिना एक दिस देशक शासन विदेशीसँ स्वदेशीक हाथ आएल तहिना अपन पूर्वजक अरजल जमीनक अधिकार सेहो दोसराक हाथसँ देवचरणक अपना हाथ एलैन। स्वतंत्र देशक स्वतंत्र किसानक रूपमे देवचरण अपनाकेँ देखए लगला। भलेँ राधाचरणक स्थितिसँ सेहो ऐगला पीढ़ीक भविसक चिन्ता सोभाविके रूपमे होइ छेलैन। ओना, हरिचरण सेहो तेरह-चौदह बर्खक भइये गेल छल, मुदा जइ परिवारमे पिता, बाबा, परबाबा जीवित रहै छैथ तइ परिवारमे तेरह-चौदह बर्खबलाकेँ लोक बच्चे बुझैए, जेकर अवस्थाकेँ खाइ-खेलाइबला सेहो मानले जाइए, मुदा से सभ परिवारमे नइ होइए। एहनो परिवार सभ अछिए जइमे पैछला पीढ़ीकेँ असमायिक मृत्यु भेलापर वा कोनो कारणे पिता-बाबाक छाया हटलापर परिवारक भार बच्चापर पड़िते अछि। जइसँ खाइ-खेलाइक स्थान परिवारक चिन्तो-फिकिर आ भारी-भारी काजक बोझ सेहो काँच उमेरबला बच्चाक सिरपर चढ़िते अछि। ओना, हरिचरणकेँ गात[41] देख देवचरणक मनमे एते आशा बनले छेलैन जे भीरो-कुभीरक भार पोता उठाइये सकैए मुदा से ओकरा संग अन्याय-अनुचित भेबे कएल। जैठाम विकल्प रहैए तैठाम तँ संकल्पक धरो सेहो गतिमान रहिते अछि, मुदा जैठाम विकल्पे नहि, तैठाम तँ धारामे थोड़-थाड़ रूकाबट होइते अछि। खाएर, ई मात्र एकटा देवचरणेक संग हएत सेहो बात नहियेँ अछि। ओना, देवचरणक जे समस्या छैन ओ आनसँ थोड़ेक सटलो छैन आ थोड़ेक हटलो छैन्हे। सटै-क माने भेल जे जइ परिवारमे बाबा, पिता आ पुत्र- तीनू पीढ़ीक तीनू जीवित छैथ। तहिना हटल ऐ

दुआरे छैन जे देवचरण अपने उमरदार भऽ गेला अछि, जइसँ समरथाइक सामर्थक ओ रूप दुर्बल भइये गेल छैन, जइमे कठिन शारीरिक श्रम करै छला। तहिना दोसर पीढ़ीमे राधाचरण जीवित रहितो श्रमचोर भेने श्रमहीन भइये गेल अछि। मुदा परिवार तँ परिवार छी। ओकर अपन नियमित क्रिया छै, जइ बलपर ओ ठाढ़ भऽ आगू मुहेँ बढ़ैए।

भिनसुरका उखड़ाहाक आठ बजेक समय। परिवारक पतराएल काज, माने खेती-बाड़ीक काज नइ रहने, देवचरणकेँ निसचिन्ती रहबे करैन। ओना, माल-जालक सेवा-काज आगूमे छेलैन्हे मुदा जे समय खेती-बाड़ीक छेलैन, ओइमे कमी ऐने काज पतराएले छेलैन। दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैस देवचरण चाह पीब नेने छला। तहीकाल हरिचरणकेँ आँगनसँ निकलैत देखलैन। देखते हरिचरणकेँ शोर पाड़ैत बजला- "बौआ, एमहर आबह।"

बाबाक बात सुनि हरिचरण लगमे आबि चौकीपर बैसैत बाजल-

"की कहलौं, बाबा?"

हरिचरणक बात सुनि देवचरणक मन जेना पतालसँ उड़ि अकासमे पहुँच गेल होनि तहिना भेलैन। मुदा उमेरो[42] तँ उमेर छी, ओकरो अपन गुण-धर्म अछिए। तहूमे देवचरण इमानदारीसँ अखन तक परिवारक गाड़ीक जुआ खिंचैत आएल छैथ, तँए असथिर चिते बजला-

"बौआ, अखन तक परिवारक भार अपन सिर सजि गाड़ीक जुआमे[43] कन्हा लगा खिंचैत एलौं, मुदा आब ओ सामर्थ नहि रहल जेकर खगता परिवारकेँ अछि। तँए... ।"

'तँए' कहि देवचरण चुप भऽ गेला। मुदा हरिचरणक मनमे जिज्ञासा उपैकिये गेल। हरिचरण बाजल- "बाबा?"

'बाबा'क अतिरिक्त हरिचरण किछु ने बाजल। मुदा हरिचरणक मनक छीपल विचार देवचरणक मनकेँ हौंर देलकैन। जइसँ रंग-रंगक

विचार, संकल्प-विकल्पक संग उठए लगलैन, जइसँ नवाकुंर पोताकेँ की कहितैथ आ की नइ कहितैथ, तइ बिच्चेमे देवचरणक मन फँसि गेलैन। मुदा लगले देवचरणक मनमे उपकलैन जे जिनगीक कोनो ठेकान थोड़े अछि, ओ तँ बेठेकान अछि। अखनो मरि सकै छी आ पचीस-पचास बर्ख जीवियो सकै छी। तखन तँ बीचमे एकटा समस्या उपस्थित भइये गेल अछि, जे जइ रूपे परिवारकेँ हमर श्रमक खगता छै तेकरा पुरबैमे आब अपन दैहिक शक्तिक अभावक कारणे किछु-किछु बाधा उपस्थित हेबे करत। मुदा हरिचरण सन नव शक्तिक[44] उदय तँ परिवारमे भइये गेल अछि, एकरा जँ सही ढंगसँ उपयोग करब तँ कोनो तरहक बाधा परिवारमे उपस्थित नहि हएत। देवचरण बजला- “बौआ, अखन तँ काजक बेर अछि तँए अखन एतबे राखह। साँझू पहर जखन दुनियाँदारीसँ निचेन हएब तखन सभ कियो- तोहूँ, तोहर माइयो आ दादियो एकठाम बैस विचारि लेब जे आगू केना चलैक अछि। जहिना हल्लुकसँ भारी[45] काज परिवारक मध्य अछि तहिना नव-पीढ़ीसँ पुरान पीढ़ी धरि सेहो सभ छीहे।”

हरिचरण बाजल- “से तँ छीहे। मुदा अहाँ किछु भेलिऐ तैयो तँ धान-गहुम दौन करैबला खोहक जोतल बरद जकाँ मेहौता छीहे। जेना-जेना खोहपर अहाँ घुमबै तेना-तेना ने अहींक लागल बीचलो आ पैटक बरद जकाँ हमहूँ सभ घुमबै।”

मुस्की दैत देवचरण बजला- “अखुनका विचारकेँ कानपर रखिहह। साँझूपहर सभ एकठाम बैस कोनो-ने-कोनो रस्ता निकालिये लेब।”



शब्द संख्या : 2492, तिथि : 27 मई 2018

6.

जखनसँ देवचरण अपन पोताकेँ कहलैन जे 'बौआ, साँझू पहर, परिवारक सभ एकठाम बैस आगूक विचार करब' तखनसँ हिनका मनमे बेर-बेर वएह प्रश्न घुरियाए रहल छैन जे परिवारमे जहिना अवोध-अनाड़ी[46] हरिचरण अछि, तहिना तँ आनो-आन अछिए, मुदा परिवारक भार तँ ओकरे सबहक ऊपर ने पड़त। तँए केतेक भार कोन रूपे केकरा देल जाए, तेकर निर्णय करब साधारण बात नहियेँ अछि। मुदा नइ रहितो भार तँ ओकरे देब अछि। ओना, अखन अपनो जीबै छी आ पिता-माताक संग दादी सेहो हरिचरणक सोझामे छइहे, जइसँ कोनो काज जँ गरुगर बुझियो पड़तै तँ दोसर-तेसरसँ पुछि ओइ काजकेँ सही ढंगसँ कएलो तँ जाइए सकैए। जैठाम से नहि रहैए तैठाम ने काजक सफलतामे किछु-ने-किछु गड़बड़ी होइक सम्भावना सेहो रहिते अछि। ओना, मनुखक सामाजिक जीवन ओहन अछिए जेकर जीवन धार[47] समाजक धार होइत प्रवाहित होइए जइसँ देखैक, जनैक आ करैक सम्भावना सेहो रहिते अछि। हँ, जैठाम सामाजिक जीवन नइ रहल, माने बेकतीगत जीवनधाराक धार ओइसँ भिन्न रहल तैठाम बेकती औआ-वौआ जाइते अछि। मुदा जैठाम बेकतीक जीवन धार सामाजिक जीवन्त धाराक संग प्रवाहित होइए, तैठाम तँ किछु-ने-किछु सिखबो आ सम्हैरयोक उपाय रहिते छइ।

जहिना देवचरणक मन अपन पोताक भविसक दिशा निर्धारित

करैमे ओझराएल छेलैन तहिना हरिचरणक मनमे सेहो बेर-बेर प्रश्न उठि रहल छल जे बाबा की कहता, की पुछता आकि की करैले कहता। खाएर जे कहता मुदा बुझब तँ सुनला पछातिये ने आ बुझला पछातिये ने ओकरा सम्हारबोक कोशिश करब। बिनु बुझल आकि बिनु विचारल काज करैमे किछु-ने-किछु ओहन विघ्न-बाधा एलापर समस्यामे लोक पड़िते अछि। जहिना नव जगह, माने बिनु देखल-जानल जगह वा बिनु बुझल-जानल काज, नव लोकक लेल अन्हराएल जकाँ रहिते अछि, मुदा वएह काज सफलतापूर्वक केलाक पछाइत जीवन-शक्तिमे तीव्रतो तँ अबिते अछि।

दिन बीतल। ओना, देवचरण अपन पत्नीसँ आ पुतोहक बीच पारिवारिक आन-आन गप-सप्प करैथ, मुदा सौंझुका बात-विचार करैक योजना अखन तक दुनूमे सँ किनको ने देवचरणे कहने छेलखिन आ ने हरिचरणे कहने छेलैन। तँए हरिचरणक दादियो आ माइयोक मनमे कोनो विचारक बिन्दु उठबे ने कएल छेलैन। ओना, जखन सभ एक्के परिवारमे छी आ परिवारेक जिनगीक बातो अछि, जे किछु-ने-किछु सभकेँ बुझलो छैन्हे, तैबीच सौंझुका बैसारक जानकारियो देब ओते महत् नहियेँ रखैए, जेते आनक संग रहैए। जिनगीक नीक-बेजाए बातो आ काजोक तँ किछु-ने-किछु जानकारी रहने सुगमसँ विचारोकेँ बिकछाएब आ काजोकेँ फरिछाएब सहायक होइते अछि। मुदा ऐठाम तँ से नहि अछि। ऐठाम तँ पारिवारिके विचारो छी आ काजो छीहे। हँ, जँ कोनो नव काजे आकि नव विचारे रहैत तखन सामान्य जिनगीसँ[48] हटलो रहैत जइसँ किछु-ने-किछु नीक-बेजाइक सम्भावना रहबो करैत, मुदा सेहो तँ नहियेँ अछि।

साँझक आगमन भेला पछातियो, ने देवचरणेक मनमे कोनो तरहक उथल-पुथल छेलैन आ ने परिवारक आने-आन जनक बीच। सासु-पुतोहुकेँ बुझले ने छेलैन तँए हुनका दुनूक मनमे उथल-पुथलक कोनो सम्भावनो किए रहितैन। देवचरण तँ सहजे परिवारमे सहयोगीक

रूपमे पोतापर नजैर गड़ौनहि छला तँए हिनका मनमे कोनो तरहक मलिनता किए रहितैन। हँ, हरिचरणक मनमे किछु-ने-किछु उथल-पुथल जरूर छल। बाबा की कहता की नहि..! बर्खाक पानिक बुलबुला जकाँ हरिचरणक मनमे विचार उठबो करै छेलै आ अपने फुटि-फुटि मेटेबो करै छेलइ।

अपन निर्धारित समयक हिसाबसँ किछु पहिनहि देवचरण दरबज्जापर बैस मने-मन विचारए लगला जे कोन रूपे हरिचरणकेँ बुझौल जाए। ओना, परिवार सभमे एहनो होइते अछि जे जे परिवारक सिरजन[49] रहला ओ सबहक काजकेँ आँकि-आँकि फुटा-फुटा सभकेँ करैले कहिते छैथ, जइसँ परिवारक सम्मिलित काज रहितो एक-दोसराक बीच दूरी रहिते अछि, माने ई जे सभकेँ सभ काज नहियोँ बुझल रहल। ओना, एहेन भेलासँ एकटा एहेन विचार जगिते अछि जे आनक काज नहि बुझल रहने दोसरक मनमे उठि जाइए जे हमहींटा काज करै छी आ दोसर-तेसर बैसले रहैए, तँए परिवारक जँ सभकेँ सबहक काजक जानकारी रहल तँ सबहक मनमे एहेन विचारक आगमन भइये जाइए जे सभ अपन-अपन काजक पाछू लागल छैथ, जइसँ किनको मनमे काज नइ करैक शंकाक आगमन नहियेँ होइए। तैसंग ईहो लाभ तँ होइते अछि जे परिवारक सभ काज सबहक नजरियोपर रहल आ केकरो बैसल रहैक शंका नइ रहने सबहक प्रति सबहक मनमे प्रेमो बढ़ल।

देवचरण ई सोचि काजक निर्धारित समयसँ पहिने काजक पाछू लगि गेला जे जँ कोनो काज करैसँ पहिने ओइ काजक भूत-भविसपर नजैर दौड़ा देब तँ ओइ काजकेँ सफल होइक बेसी सम्भावना बनियेँ जाइए। जँ से नइ भेल तँ काजक बहुतो बिन्दु गप-सप्पक क्रममे नजैरपर नहियोँ चढ़ैए, जइसँ विचार केलाक पछातियो किछु-ने-किछु बिन्दु छुटल रहि गेने काजमे कमी होइते अछि।

देवचरणकेँ दरबज्जापर बैसल देख हरिचरण सेहो आबि कऽ बैसल। मुदा बाजल किछु ने।

हरिचरणकेँ चुपचाप बैसल देख देवचरणक मनमे जगलैन जे जखन दुनू गोरे काज करैक क्रममे उपस्थित भइये गेल छी, तखन जँ चुपचाप समयकेँ निकलए दिऐ सेहो नीक नहियेँ हएत। देवचरण बजला-

"बौआ, जखन दुनू गोरे काजक विचार करैले एकठाम बैस गेलौं तखन माइयो आ दादियोकेँ बजा लहुन।"

बाबाक आदेशमे बिना किछु जोड़-घटाउ केने हरिचरण आँगन जा दादियो आ माइयोकेँ कहलक। ओना, ओहो दुनू गोरे बिना किछु बजने-भुकने हरिचरणक संगे दरबज्जापर पहुँचली। राधाचरण सेहो परिवारक प्रमुखजनक सीढ़ीपर छल तँए ओकरो रहब अनिवार्य होइतै मुदा ऊहि नइ रहने परिवारक गौण-पात्र बनि गेल अछि। होइतो अहिना छै जे जइ परिवारमे जे जन जेहेन ऊहिगर रहल ओ अपन ऊहिक हिसाबसँ परिवारक क्रियामे ओत्ते संलग्न भइये जाइए।

तीनू गोरेकेँ देख देवचरण बजला-

"बौआ, जइ परिवारमे अपना सभ छी ओ परिवार एक्के गोरेक नहि, सबहक छी। तँए सभकेँ अपना-अपना उकितिये ऐ विचारकेँ नीक जकाँ मनमे रोपि अपना-अपनाकेँ ओइमे संलग्न रखबाके चाही। जँ से नइ हएत तँ किछु गोरेकेँ काजो आ जवाबदेहियोमे उदासीनता औत आ किछु गोरे जे अपन परिवारकेँ अपन बुझि सेवा करत ओ दोसरसँ अपनाकेँ महत्पूर्ण बुझबे करत। तँए सबहक बीच सबहक काजक जानकारी रहब जरूरी अछि।"

ओना, हरिचरण अछि तेरहे-चौदह बर्खक, मुदा देवचरणक विचारकेँ नीक जकाँ बुझि गेल। बाजल-

"बाबा, ई तँ भेल वैचारिक क्षेत्रक बात, मुदा बेवहारिक क्षेत्र तँ ऐसँ

अलगो भऽ सकैए किने?”

हरिचरणक विचार सुनि अपन सहमत जतबैत देवचरण मुड़ी डोलबैत बजला-

“बेस बात बौआ कहलह। परिवार तँ काजक धुरी बना कऽ ने चलैए। तेही सबहक विचार करैले ने कहने छेलियह जे सभ कियो एकठाम बैस एक मतक रस्तासँ परिवारकेँ आगू दिस बढ़ाएब।”

देवचरणक विचार सुनि हुनक पत्नी–सिंहेसरी बजली-

“हम दुनू सासु-पुतोहु स्त्रीगणे भेलौं, केतबो हएब तँ अपन घरे-अँगना आ खेते-पथार धरि हएब। तहिना हरिचरण सेहो बाले-बोध भेल। राधाचरणक कोनो ठेकाने ने अछि जे ओ की अछि आ की करत।”

पत्नीक विचार सुनि देवचरण मुस्की भरैत मुड़ी डोला-डोला मने-मन विचारए लगला। पत्नीक विचार सेल्होअना सत् अछि, मुदा सत् रहितो सोल्होअना उचित केना कहल जाएत? हँ, जइ परिवारमे पुरुख जीवित रहला, माने पुरुख प्रधान परिवारमे एहेन विचार सम्भव भइयो सकैए, मुदा जइ परिवारमे पुरुख नइ रहला तइ परिवारमे तँ महिलेक ने प्रधानता हएत। तैठाम हिनक विचार केना सम्भव भऽ सकत। मुदा अखन तँ गाम-समाजक विचार करए नहि बैसल छी, अखन तँ मात्र अपन परिवारक विचार करए बैसल छी, तँए अखन तँ पुरुखे प्रधान परिवार भेल। नीक हएत जे पहिने अपन परिवारक भूतक जानकारी संक्षेपमे सभकेँ दिऐ। जहिना कोनो धारक उद्गम स्थलसँ बीचक प्रवाहित होइत धाराक धार अन्तिम कोनो अगम धारे वा समुद्रेमे समाहित होइए तहिना ने परिवारोक अछि। ओना, पहाड़क दोसर रूप अछि। ओ धरतीपर उठल रहैए, जेकरा चोटीपर चढ़ैमे बहुत अघिक भीरो होइए, मुदा ओइठामसँ पुन: निच्चाँ उतरैमे, माने धरतीपर अबैमे, चढ़ाइ काल जेहेन मेहनत भेल रहत तेहेन ढलानपर ढलकैत उतरैमे भीर नहियेँ होइए।

जखन कि रस्ता दुनूक चढ़ैयो आ उतरैयोक एक्के रहैए। मुदा ऐठाम तँ परिवारक विचार करैक अछि। परिवारक रस्ता धारो आ पहाड़ोसँ भिन्न अछिए। किए तँ धारे-पहाड़ जकाँ परिवारोक गति-विधि तँ अछि नहि। ऐठाम मनुखक बीचक रस्ता अछि। जइमे सामाजिक परिवेशक संग शासकीय परिवेश सेहो अछि। शासन तंत्रक अनुकूल परिवारक परिवेश बनैए। जँ शासन-तंत्र परिवार पक्षी रहल तँ सुगम रहल आ जँ शासन-तंत्र प्रतिकूल रहल तँ विपरीत परिवेश बनिते अछि। खाएर जे अछि जेतए अछि से तेतए रहह। ऐठाम तँ अपन बाप-दादाक निरमौल परिवार अछि, जेकर अपन इतिहास अछि। मुस्कियाइत देवचरण पत्नी दिस देखैत बजला-

"अहाँक विचार तँ नीक अछिए मुदा जखन सभ कियो मनुखवंशक मनुख छी, तखन देह-हाथ छीपलासँ थोड़े हएत।"

बजैक क्रममे देवचरण बाजि तँ गेला मुदा लगले मनमे उठए लगलैन जे अनेरे कोन विचार दिस भँसि गेलौं। अखन तँ हरिचरणकेँ परिवारक प्रमुख कर्त्ताक रूपमे ठाढ़ करैक अछि...।

बिच्चेमे हरिचरण बाजल-

"बाबा, अखन जइ विचारे सभ कियो एकठाम बैसलौं हेन, पहिने ओकर विचार करू, पछाइत समय रहलापर आरो-आरो बात-विचार करब। ने कियो आन छी आ ने आइये भरि समयो अछि।"

ओना, हरिचरणक विचारसँ दादीक मनमे कनी कुवाथ जरूर भेलैन। कुवाथक कारण छेलैन अपन विचारपर सँ नजैर हटाएब, मुदा बाल-बोध हरिचरणकेँ बुझि मुँह बन्ने रखली। जे बात देवचरण बुझि गेला। मुदा ओइ विचारकेँ पुन: जागृत नहि करैत अपन परिवारक विचार उठबैत बजला-

"बौआ हरि, साठि बर्खक पारिवारिको जिनगीक आ शासनोक

चढ़ाव-उतारक अनुभव अछि, जे तोरा नइ छह। तँए, संक्षेपमे पहिने ओ विचार भूमिका रूपमे जानि लेब बेसी नीक हेतह।”

जहिना असथिर भेल पोखैरक पानिमे आ प्रवाहित होइत धारक पानिमे हेलैक अलग-अलग लूरिक जरूरत होइ छै, माने पोखैरक हेलब जकाँ धारमे हेलब तँ डुमिये जाएब। किएक तँ प्रवाहित होइत धारक धारामे हेल कऽ पार करैमे दोहरी सावधानीक जरूरत होइ छइ। पहिल, धारक धारेमे ने भँसि जाए, आ दोसर पार करब तँ अछिए। जे पोखैरमे नइ होइए। पोखैरमे मात्र एकटा सावधानीक खगता रहैए, एक महारसँ दोसर महारपर जाएब। हरिचरण बाजल-

“बाबा, परिवारक जे पैछला धारा रहल माने इतिहास, ओ तँ आब भूत बनि चुकल अछि, ओकरा तँ वर्तमानक नजैरसँ नहियेँ देखल जा सकैए, मुदा जहिना वर्तमान भूतपर ठाढ़ अछि आ भविस दिस बढ़ैले हियासि रहल अछि, तहिना ने ओकरा मजगूतीक संग पकड़ैयोक अछिए।”

ओना, परिवारमे हरिचरण बाले-बोधक श्रेणीमे अछि मुदा यएह बाल-बोध ने भविसमे परिवारक मेह रूपमे ठाढ़ हएत। जहिना भिनसुरका सुरुज देख लोक अनुमान करैए जे आजुक दिन केहेन हएत तहिना हरिचरणक बातकेँ सीमांकित करैत देवचरण बजला-

“बौआ हरि, परिवारमे दू रंगक सदस्य होइए, पहिल पुरुख आ दोसर महिला। अखन तक जे अपना सबहक परिवारक धारा रहल, ओइमे जहिना पुरुखक लेल घर-बहार जाइ-अबैले, करै-धड़ैले सगतैर खुजल रहैए तहिना महिलाक लेल सगतैर तँ बन्धन लगले अछि। पुरुखक अछैत जँ महिला परिवारसँ निकैल पारिवारिक क्रिया-कलाप करैयो चाहती तँ परिवारक संग समाजोक लोक आँगुर बतेबे करतैन।”

बिच्चेमे हरिचरण बाजल- “एकरा के काटत! एहेन तँ सभ दिन

होइते आबि रहल अछि!”

पैछला विचारकेँ देवचरण सोल्होअना कबुल लेलैन, मुदा भूतक कबुल कएल विचारकेँ भविसमे केना कबुलनामा बनौल जाए, ऐठाम आबि अँटैक गेला। देवचरण एक दिस जखन पाछू दिस हिया कऽ देखए लगैथ तँ साफ देखा पड़ैन जे परिवारक जे पैत्रिक सम्पैत अछि ओ तँ नष्ट भऽ गेल छल, मुदा परिवेश एहेन बनल जे ओ पैछला पीढ़िक अरजल सम्पैत पुन: परिवारमे जुड़ि गेल। तहिना आइ धरिक जे सामाजिक राज-सत्ता रहल ओ गुलामीक रहल, माने विदेशी शासनक, जे मटियामेट भऽ पुन: स्वतंत्र रूपमे जीवित भऽ गेल। मुदा अपन जे जिनगी रहल तइमे आ आगूक जे हरिचरणक जिनगी हएत ऐमे विपरीत सम्बन्ध अछिए। तँए, पैछला जिनगीकेँ इतिहासक पन्नामे समैट ऐगला जिनगीक ने दिशा बोध करब जरूरी अछि...।

देवचरण बजला-

“बौआ हरि, अखन धरिक जे परिवारक इतिहास रहल ओ पंगुक रूपमे रहल। माने जेहेन जिनगीमे लोक स्वच्छन्द साँस लैत बिचड़ैए से तँ नहियेँ रहल। तैयो अपन साठि सालक जिनगी कटि गेल। मुदा आब जखन अपना दिस तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे देहमे ओहन शक्ति नहि अछि जेकर उपयोग करैत परिवारक गाड़ीकेँ आगू मुहेँ ससारब, तँए जाबे जीबै छी ताबे जहाँ धरि सम्भव हएत से तँ करबे करब, मुदा...।”

‘मुदा’ कहि देवचरणकेँ चुप होइत देख हरिचरण उत्सुक होइत बाजल-

“तखन?”

देवचरण बजला-

“तखन यएह जे परिवारक जे पंगुपन रहल ओकरा पूर्ति करैत, ओइ पंगुपनकेँ मेटबैत जहिना चिड़ै अकासमे स्वच्छन्द जीवनक साँस लैत

उड़ैए तहिना परिवारोकेँ बनाएब छह।”

देवचरणक विचार सुनि जेना सभकियो[50] पंगुपनक गम्भीरताकेँ बुझि गेल तहिना सभ सभ दिस नजैर दौड़बैत, गम्भीर होइत चुपचाप उठि-उठि अपन-अपन जीवन-क्रिया दिस बढ़ए लगल।



शब्द संख्या : 1853, तिथि : 30 मई 2018

7.

देश स्वतंत्र भेला पछाइत, जमीनक लड़ाइ सौंसे देशमे पसैर गेल। 1947 इस्वीसँ पूर्व जहिना एकमुरही लड़ाइ अंगरेजी शासनक खिलाफ उठल छल तहिना स्वतंत्र भेला पछाइत देशमे जमीनक लड़ाइ पसैर गेल। लड़ाइ केना ने पसरैत, आखिर कृषि प्रधान देशो तँ छीहे किने। बिनोवा भावेक नेतृत्वमे भूदानी आन्दोलन शुरू भेल। आन्दोलनक नारा छल- जमीनबला अपन कुल जमीनक छठम हिस्सा स्वेच्छासँ दान करैथ। ओ जमीन खेतीपर जीवन बसर करैबला भूमिहीनक बीच देल जाए।

ओना, जमीनक लड़ाइ दू रूपमे चलल। पहिल, जमीनबलासँ बकास्त जमीन खेती करैबला बँटेदारकेँ देल जाए, आ दोसर भूदानमे प्राप्त जमीनक बँटबारा सेहो हुअए। भूदानकेँ यज्ञ रूपमे स्थापित कएल गेल।

खेत ओहन सम्पैत छी, जइमे एक धुर-आध-धुर लेल खून-खराबी, मारि-पीट गामे-गाम होइते आबि रहल छल। हजारो मुकदमा जहिना कोर्टमे फँसल छल तहिना हजारो भूमिहीन सेहो कानूनी शिकंजामे फँसि जहल जाइत-अबैत रहला।

ओना, गाम-गामक संग जिला आ राज्य स्तरपर सेहो भूदान कमिटी बनल छल, तैसंग सरकारी कार्यालय सेहो बनल, मुदा जइ ढंगसँ भूदानी नारा छल तेकर ठीक विपरीत ओकर कार्यान्वयन हुअ लगल।

लेन-देनक अड्डा सरकारियो कार्यालय आ भूदानियो कमिटी बनि गेल। जेकर परिणाम हुअ लगल जे एक-एक जमीनक सबूत[51] तीन-तीन, चारि-चारि आदमीकेँ भेटए लगल। एक दिस जमीन देनिहार दाता अपन जमीन छोड़ए नहि चाहै छल, तँ दोसर दिस प्राप्तकर्ताक बीच सबूत लऽ कऽ तेहेन ओझरी लागि गेल जे गामे-गाम लड़ाइ फँसि गेल।

भूदान कमिटीक जे सदस्य लोकैन छला ओहो आगिमे घी दइक काज करबे केलैन। ओना, गामे-गाम किछु एहेन दाता सेहो छेलाहे जे अपन देल जमीन, अपना विचारसँ भूमिहीनकेँ सुपुर्दो केलैन आ अपने हाथे दखल-कब्जा सेहो करबा देलखिन। मुदा एहेन लोक एक्की-दुक्की भेला। गाम-समाजक जेहेन समस्या जमीनक छल ओइ अनुपातमे पाँच-दस प्रतिशत एहेन भेल।

छठम हिस्सा, जमीनदान करैमे सेहो एकरूपता नहि रहल। हथ-उठाइ भीख जकाँ छठम हिस्साक जगह मात्र किछु जमीनक नाम-पत्रटा दऽ देलखिन। सेहो ओहन जमीन देलखिन जे उपजाउ भूमि नहि छल। चौर-चाँचर, परती-पराँत जमीन छल। ओना, गाम-गाममे गरीबकेँ मात्र जमीन उपजबैयेक समस्या नहि, बसो-बासक समस्या सेहो छल। गामक चौथाइ आवादी ओहन छल, जेकरा घर बन्हैक अपन घरारियो ने छेलइ।

गामे-गाम तँ नहि, मुदा किछु गाम मिला-मिला खादी भण्डार सेहो बनल। गाम-गामक समाजक किछु जाति विशेष ओहन छल जे खादी कपड़ा बुनै छल। खादी भण्डार ओकरा कच्चा माल[52] दइ छेलै आ ओकरासँ बुनल कपड़ा कीनै छल। ओना, कपड़ा बुनैक लूरि मात्र किछु जाति-विशेषकेँ छल, एकर[53] समाजीकरण नइ भेल छल, जइसँ किछु जाति-विशेषक बीच उद्योग सीमित भऽ गेल। कपड़ा बनबैक जे कच्चा माल छेलै ओ जातिक बन्धन तोड़ि अधिकांश जातिक बेवसाय जरूर बनल छल, मुदा वएह बेवसाय आगू बढ़िते कपड़ा बुनब सामाजिक बन्धनमे फँसि गेल छल। तहूमे खास कऽ मुस्लिम जातिक बीच ‘जोलहा

आ धुनिया'क बेवसाय बुझए जाए लगल। हिन्दू-मुसलमानक बीच समाज बनले अछि। हिन्दू ऐ बेवसायकेँ नहि अपनौलक। मुसलमानोक बीच सैयो जाति अछि। ओइ सैयो जातिमे मात्र दू जाति- जोलहा-धुनियाक रोजगार मात्र बनि कऽ रहि गेल। जोलहा-धुनिया सभ गाममे अछि सेहो बात नहियेँ अछि। किछु-किछु खास गाममे अछि। तहूमे परिवारक संख्याक हिसाबसँ सेहो ठेकान नहियेँ अछि। जइसँ सभ गामक जोलहा-धुनियाक बेवसायो नहियेँ बनल। जइ-जइ गामक जोलहा-धुनियाक रोजगार कपड़ा बुनब नहि छल, ओ सभ अपन-अपन आन-आन रोजगार जीवकोपार्जन लेल करबे करै छल।

गाम-गामक खादी भण्डार भूदानी सबहक अड्डा बनि गेल। माने ई जे भूदान कमिटीक जे सदस्य सभ छला, ओ सभ खादिये भण्डारमे खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ अपन डेरा रखै छला आ खादिये भण्डारक वस्त्र सेहो प्राप्त करै छला। जइसँ एकाएकी खादी भण्डार टुटए लगल, अन्तो-अन्त सभ टुटि गेल। गाम-गामक एकटा बेवसाय मरि गेल। खादी भण्डारकेँ टुटने जहिना कपड़ा बुनकरक रोजगार गेल तहिना सूत कटनिहारक रोजगार सेहो मरबे कएल। एक तँ ओहिना गाम-गाममे बेरोजगारी पसरल छल, तैपर एकटा आरो बढ़ि गेल। ओना, मिथिलांचलमे अनेको साधन कल-कारखानाक लेल मौजूद अछि मुदा साधन रहितो कल-कारखानाक अभाव रहबे कएल। ठाम-ठीम चीनीक मिल आ धानसँ चाउर बनबैक मिलटा मात्र छल। ओना, लघु उद्योगक रूपमे सेरसो-तोरीसँ तेल बनबैक संग कुशियारसँ गुड़ बनबैक हथकर्घा[54] रूपमे सेहो छल, मुदा ओहो वृहत् रूपमे नहि छल। चीनी मिल सेहो सालो भरि नहियेँ चलै छल, सालक मात्र छह मास चलै छल। छह मास बन्न रहै छल, जइसँ मिलमे काज करैबला श्रमिक सबहक बीच ईहो समस्या[55] छेलैहे। ओना, कहैले बैसारीक समय श्रमिककेँ आधा वेतन देल जाइ छेलै, मुदा ओहूमे अनेको रूकाबट छेलइ। ओहो नियमित रूपसँ नहियेँ

चलै छल।

गाम-गाममे नगदी खेतीक रूपमे कुशियारक फसिल छल, मुदा कुशियारो तँ सभ खेतमे नहियेँ उपजैए। नीचरस खेत, जइमे पानि बसैए तइमे कुशियारक खेती नहियेँ होइए। कुशियारक खेती-ले ऊँचरस जमीन चाही। जे सभ गाममे नहियेँ अछि। ओना, जैठाम-जैठाम चीनी मिल बैसौल गेल ओ कुशियार उपजैबला जमीन देख-देख बैसौल गेल, मुदा मिलसँ दूर-दूर हटलो गाम सबहक किसान, नगदी खेती बुझि कुशियारक खेती थोड़-थाड़ करबे करै छला। गामक खेतसँ मिल तक कुशियार पहुँचबैक साधन रेलोक माल गाड़ी छल आ बैल गाड़ी सेहो छल। रेलक स्टेशने-स्टेशन मिलक राटन बनल छेलइ। जैठाम इलाकाक किसान बैलगाड़ीसँ कुशियार पहुँचबै छला। ओना, कुशियारक रेट मिलक जेते रहै छल तइमे ढुलाइ खर्च सेहो ओही मूल्यमे कटौती होइ छेलै, जइसँ स्थानीय किसान आ दूरक किसानक दरमे अन्तर होइते छल। तहूमे नगद कारोबार सेहो नहियेँ होइत छल।

कुशियारोक खेती करैमे किसानकेँ अनेको समस्या छेलैन्हे। एक तँ सीजनल फसिल रहने एकेबेर सभ किसानक कुशियार तैयार होइ छेलैन, जे समयपर नहि कटने वजनमे कमी अबै छल, तैसंग मिलक जेतेक क्षमता, कुशियार पेरैक छल तेही अनुकूल कुशियारक पुर्जा[56] भेटै छेलै जइसँ किसानकेँ अबै-जाइक समस्या छेलैन्हे। तेकर पछातियो नगदा-नगदी कारोबार नहियेँ छल। मासक-मास, सालक-साल किसानक कुशियारक दाम पछुआइत छल, जइसँ कुशियार उपजौला पछातियो समयपर किसान अपन पाइसँ काज नहि कऽ पबै छला। ओना, जइ मिलकेँ जेतेक कुशियारसँ चीनी बनबैक क्षमता छल, ओ ओतबे ने पेरत। जँ किसान बेसी खेती केलैन तँ ओहिना खेतमे रहि जाइ छेलैन, जइसँ खेती अनबिसबासू बनैत गेल आ मिलो बन्न हुअ लगल।

❑ शब्द संख्या : 911, तिथि : 02 जून 2018

8.

बीसम शदीक छठम दशकक अन्तिम समयमे, माने करीब 1958 इस्वीमे कोसी नदीमे फाटकबला पुल नेपालक सीमामे भारत सरकार बनौलक। कोसीक दुनू कात, माने उत्तरे-दच्छिने कोसी बहैए, पूबो आ पच्छिमो बान्ह सेहो बनल। कोसी पुलक संग-संग, पच्छिमी आ पूर्वी मुख्य नहर बनबैमे सेहो हाथ लगौल गेल। तैबीच 1958 इस्वीमे कोसीमे बाढ़ि आएल। ओना, बरखो बेसी भेल छेलै जइसँ कोसीक बान्ह कतेकोठाम टुटि गेल। इलाकाक फसल जे दहाएल से तँ दहेबे कएल जे गाम-गामक घरो-दुआर खसल आ इनार-पोखैर सेहो भराएल-भोथाएल। तेतबे नहि, धारो जैठाम बहै छल तइसँ थोड़ेक पच्छिम घुसकल। केते गाम ओहन छल जइमे कोसीक बाढ़ि नइ अबै छल, तोहू सभ गाममे बाढ़ि आबए लगल। तैसंग ईहो भेल जे ओ बान्ह साले-साल केतौ-ने-केतौ टुटौ लगल आ ओ इलाका दहाइत रहल। कोसीक जे पूर्वी आ पच्छिमी मुख्य नहर छल, जइसँ शाखा नहर सभ बनैक योजना छेलै, ओइ सभ जमीनक सर्वेक काज सेहो हुअ लगल। माने नहर बनैक, नापी-जोखी शुरू भेल। मुदा ने अखन तक मुख्य नहरे पूर्ण रूपेण बनि सकल छल आ ने शाखा नहर सभमे हाथे लागि सकल।

बीसमी शदीक सातम दशक चढ़िते, माने 1962 इस्वीमे चीनक संग भारतक सीमा-विवाद लऽ कऽ लड़ाइ भऽ गेल। जे देशक अर्थ बेवस्थाकेँ आरो चरमरा देलक। तैसंग गाम-गाममे अफवाह पसरल जे

अनेको ग्रह एकठाम भऽ गेल, जइसँ जबरदस हानि मनुखो आ मालो-जालकेँ हएत। गाम-गामक देवालयमे अष्टयाम, कीर्तन, नवाहक संग सबा मास, अढ़ाइ मासक कीर्तनक संग यज्ञ-जाप सेहो हुअ लगल। सीतापुरमे सेहो सबा मासक कीर्तन ठकुरबाड़ीमे भेल। मुदा समय बीतैत गेल कोनो तरहक दैवी प्रकोप तेहेन नहियेँ भेल।

1967 इस्वीमे जबरदस रौदी भेल। अखन तक देश अन्नक मामलामे आत्म-निर्भर नहि बनल छल। आन-आन देशसँ अन्नक आयात होइत रहइ। 1967 इस्वीक रौदी चारि सालक भेल। जइसँ केतेको पोखैरक संग इनारोक पानि सुखि गेल। जइसँ खेतीक संग पीबैक पानिक समस्या सेहो उपस्थित भऽ गेल। सीतापुरमे एकटा बड़की पोखैर अछि, जेकर पनिझाउसँ लऽ कऽ भिण्डा सहित बाबन बीघाक अछि। किंवदन्ति अछि जे ओ पोखैर दैंतक खुनल छी। गामक जे आन पोखैर आ इनार छल, ओ तँ सुखिये गेल जे ओइ बड़की पोखैरक पानि सेहो सटैक कऽ पाँच कट्ठापर चलि गेल, जइमे मात्र भरि ठेहुन पानि बँचल। तहूमे तेतेक गादि छल जे पानि तक पहुँचब कठिन छेलइ। अन्न-पानिक बेतरे केतेको मालो-जाल मरल आ लोको मरबे कएल। गाम-गामक जमीन ओहिना परती-पराँत बनि गेल। उपजा-बाड़ीक कोनो ठेकान नहि रहल। अन्तमे गामक लोक ओइ बड़की पोखैरसँ बिसाँढ़ खुनि-खुनि आनि-आनि उसैन-उसैन खा-खा कऽ प्राण बँचौलक।

सरकारक दोसर पंचवर्षीय योजनामे दरभंगा-लहेरियासरायमे अस्पताल बनल। जइसँ दुनू तरहक लाभ आमजनकेँ भेल। जहिना बिमारीक इलाजक सुविधा भेल तहिना डॉक्टरी पढ़ाइ भेने नव-नव डॉक्टरक निर्माण सेहो हुअ लगल। ओना, जइ हिसाबसँ दुनूक जरूरत छल, माने डॉक्टरो आ बिमारीक इलाजोक, तेतेक पूर्ति तँ नहियेँ भेल मुदा किछु तँ भेबे कएल।

1942 इस्वीमे जे देशक जन-आन्दोलन अंगरेजी शासनक खिलाफ

उठल ओ अपन चरम सीमापर पहुँच गेल। अंगरेजी शासनक खिलाफक संग-संग अंगरेजी वस्तुक[57] सेहो वहिष्कार भेल। ओइ समय इंगलैंडक मेनचेष्टरक कपड़ा उद्योग दुनियाँमे बहुत आगू छल। भारत सन विशाल देशक विरोध भेने इंगलैंडक कपड़ा उद्योगकेँ जबरदस धक्का लगल। ठीक ओकर विपरीत देशक हथकर्घाकेँ अवसर भेटल, जइसँ गाम-गाममे सूत काटैक संग-संग कपड़ा बुनैक रोजगारकेँ नीक मौका भेटल।

जमीन्दारी उन्मूलनसँ खेतक मालगुजारी जमीन्दारक हाथसँ निकैल बिहार सरकारक हाथ आएल। अपन-अपन जमीन्दारीक चार्ज दइमे जमीन्दार सभ सेहो रंग-रंगक अरंगा लगा-लगा देरी करबे केलैन। मुदा जे भेल से भेल, जमीनक मालगुजारी बिहार सरकारक हाथ एबे कएल। ओना, गाम-गामक सभ जमीनक मालगुजारी एकरंग नहियेँ छल, मुदा कम कि बेसी तँ छेलैहे। कम-बेसीक माने भेल जे जे जमीन ब्रह्मोत्तर, शिवोत्तर वा अन्य कोनो कारणे मालगुजारीसँ मुक्त छल, ओहू जमीनक मालगुजारी टैक्स रूपमे तँ नहि मुदा 'शेष' रूपमे लागए लगल। ओना, 'शेष' नाम-मात्रे रूपमे छल। टैक्सक अतिरिक्त जे टैक्स लगैत रहै, शेष मात्र ओतबे छल।

बिहार सरकारक कर्मचारीक माध्यमसँ मालगुजारी असुलल जाए लगल। गामक किसान सभ जमीनक निलामीसँ बँचैक नमहर साँस लेलक।

ओना, अंगरेजक समयमे–1888 इस्वीसँ 1903 इस्वीक बीच–जमीनक सर्वे भेल छल, जइ आधारपर अखन तक जमीनक हिसाब-किताब चलैत आबि रहल छल, ओइमे अनेको रंगक ओझरी लगले जा रहल छल। माने ई जे किछु ओझरी[58] सर्वेक पहिनेसँ आबिये रहल छल तेकर अतिरिक्तो अनेको रंगक नव-नव ओझरी उठि-उठि ठाढ़ भेल। तँए, सर्वेक जरूरत भेल।

बीसम शदीक सातम दशकमे जमीनक सर्वेक काज शुरू भेल।

गाम-गाममे सर्वेक पहिल सीढ़ीक काज किश्तवार रूपमे शुरू भेल। मुदा किश्तवार करैबला कर्मचारी जे आएल ओ भीतरे-भीतर तेहेन हवा बनौलक जे गामक लोक, जमीनबला सभ आँखि मुइन कऽ अपन-अपन खेतक नक्शा बढ़बैले ओकरा घूस दिअ लगल। जइसँ सर्वे की हएत जे पैसाक खेल शुरू भेल, जइसँ गाम-गाममे आरो विवाद फँसि गेल।

1967 इस्वीक रौदी आमजनसँ लऽ कऽ सरकारोकेँ कृषिक लेल पानिक की जरूरत अछि, तइ दिस धियान खिंचलक। ओना, अखन धरिक किसानक संस्कारमे सिंचाइक कृत्रिम बेवस्थाक प्रति ओ आकर्षण नहि आएल छल, जेकर जरूरत छेलइ। मुदा रौदी से अनलक। ओना, कोसी नहरक चर्च किसानक कान तक जरूर पहुँच गेल छेलै मुदा ओइ रूपमे नहि, जइ रूपक खगता छेलइ। कोसीक पच्छिमी मुख्य नहर जे छल, ओकर खुनाइयो समुचित ढंगसँ नइ भेने, अखनो धरि ओहिना लटकले छल।

तैबीच विदेशी[59] सहायतासँ स्टेट बोरिंग गाड़ैक योजना बनल। ओइ बोरिंगक ओहन पाइप आ इंजिन अछि जे हजारो बीघा खेतक सिंचाइ कइये सकैए। ओना, बोरिंग तेहेन इंजिनसँ गाड़ल जाइ छेलै जे एक्के दिनमे माने आठसँ दस घन्टामे बोरिंग गड़ा जाइत रहइ। मुदा जइ इंजिनसँ पानि निकालल जाइत ओ बिजली चालित छल। जे बिजली केतौ छेलैहे नहि, आ कनी-मनी जँ छेलैहो, से बहुत कम मात्रामे छल, जइसँ बोरिंगक इंजिन चलब कठिन छेलइ। तेकर अतिरिक्त बोरिंगक पानिक लेल नाला चाहै छल, से केतौ बनबे ने कएल। जँ केतौ-केतौ कनी-मनी बनबो कएल तँ तेहेन घटिया काज भेल जे ढहि-ढुहि गेल। एक तँ ओहुना लोक बुझैए जे सरकारी काज आ जेठुआ गरेक[60] कोनो भरोस नहि। से भेबो कएल। दर्जनो बोरिंग गामे-गाम गड़ाएल मुदा सिंचाइ केतौ ने भेल।

सरकारोक नजैर जखन रौदीपर पड़ल तँ ओहो बोरिंग गड़बैक

योजना बनौलक। बैंकक माध्यमसँ एक-तिहाइ, एक-चौथाइ सब्सिडीपर बोरिंगक पाइपो आ पानि निकालैबला पम्पसेटोक बेवस्था करौलक। केतौ-केतौ गोटि-पंगरा गड़ेबो कएल, मुदा जेते जरूरत छल से नहियेँ भेल।

1967 इस्वीमे आम चुनाव भेल। ई चारिम आम चुनाव छल। पहिल 1952 इस्वीमे, दोसर 1957 इस्वीमे, तेसर 1962 इस्वीमे भेल छेलै आ चारिम 1967 इस्वीमे। क्रमश: केन्द्रमे सरकार बनल पहिल प्रधानमंत्री पण्डित जवारलाल नेहरू, दोसर- लाल बहादुर शास्त्री, ओना, किछु दिनक लेल गुलजारीलाल नन्दा सेहो प्रधानमंत्री बनला, आ तेकर बादक प्रधानमंत्री पदपर आसिन भेली इन्दिरा गाँधी।

चारिम आम चुनावमे बिहारक शासन बदलल। ओना, केन्द्रमे काँग्रेसी शासन रहबे कएल मुदा बिहारमे काँग्रेस विराधी सरकार बनल। ओना, कएटा आनो-आनो राज्यमे काँग्रेसी सरकार बदलबे कएल। काँग्रेस छोड़ि सभ पार्टी मिलि बिहारो सरकार बनौलक। नव सरकार बनिते बिहार सरकारक 33 सूत्री कार्यक्रम बनल। मैट्रिकमे अंगरेजी विषयकेँ उठौल गेल। मैट्रिक तकक शिक्षा सेहो फ्री कएल गेल। तेकर अतिरिक्तो कार्यक्रम सभ छल मुदा सरकारमे जहिना एक दिस वामपंथी शामिल छल तहिना दोसर दिस दच्छिणपंथी सेहो रहबे कएल। दुनूक बीच तेना विवाद फँसल जे अठारह मास बीतैत-बीतैत सरकार टुटि मध्यावधि चुनाव भेल।

1971 इस्वीमे पाकिस्तानमे सेहो चुनाव भेल। ओइ चुनावमे पूर्वीयो आ पच्छिमियो पाकिस्तानक बीच लड़ाइ फँसल। पच्छिमी पाकिस्तान कश्मीर, पंजाब आ राजस्थान कटि कऽ बनल छल, आ बंगालसँ कटि कऽ पूर्वी पाकिस्तान बनल रहइ। ओना, आजादीसँ पूर्व 1947 इस्वी तक भारत देश जेतेटा छल तइमे पाकिस्तान कटने कमी एबे कएल। जे एकटा

देश छल ओ दूटा बनि तीन टुकड़ी भऽ गेल। ओना, 1931 इस्वीमे, अंगरेजीए शासनमे बर्मा सेहो अलग भेल, जे भारतेक पूर्वी भाग छल। पछाइत सिक्किम जे कि एकटा छोट देश छल ओ भारतमे मिलबो केबे कएल।

इन्दिराजीक नेतृत्वमे केन्द्र सरकार छल, ओ पूर्वी पाकिस्तानकेँ संग देलैन। ओना, चारि सालसँ जे रौदी आबि रहल छल ओ 1971 इस्वीमे सालो भरि बरखा भेने समाप्त सेहो भेल। जहिना भारत पूर्वी पाकिस्तानकेँ मदैत केलक तहिना अमेरिका पच्छिमी पाकिस्तानकेँ केलक। अमेरिका शक्तिशाली देश छेलैहे। जेकरासँ मुकाबला करब कठिन छेलइ। सोवियत संघ सेहो सैन्य-शक्तिमे शक्तिशाली भइये गेल छल। इन्दिराजी सोवियत संघसँ सैन्य-सन्धि केलैन। सोवियत संघक सहायतासँ लड़ाइ जमगर भेल। अन्तो-अन्त बंगला देश स्वतंत्र देशक रूपमे जन्म लेलक। पाकिस्तान दू टुकड़ीमे विभाजित भऽ पाकिस्तान, बंगलादेशक नाओंसँ दू देश बनि गेल।

अरवन तक, माने 1971 इस्वी तक भारत जे अमेरिकासँ अन्नक[61] आयात करैत आबि रहल छल, तेकरा अमेरिका रोकि देलक। जइसँ पेटक समस्या अपना देशमे उठबे कएल। जइ सभ देशमे अमेरिका अन्नक निर्यात करै छल ओ सभ देश अमेरिकाक प्रभावमे रहै, तँए ऐगला मुँहरा बनि कोनो देशसँ अन्नक आयात करब कठिन छेलैहे। सोवियत संघ सेहो अन्नक उपजमे ओतेक सशक्त नहियेँ छल जेते आन-आन शक्तिमे छल। ओना, सोवियत संघ ठण्ढ देश अछि, तहू कारणे ओइठाम अन्नक उपज कम होइ छल। खास कऽ साइबेरियाक जे भाग सोवियत संघमे छल ओइ भागमे तीन माससँ नअ मास तक जमीन बर्फमे डुमल रहै छल, जइसँ ओइठाम कृषि कार्यमे बाधा छेलैहे।

भारतमे अनेको राज्य अछि आ सभ राज्यक अपन-अपन समस्या

अछि। किछु राज्य एहेन अछि जइमे बरखो कम होइ छै आ माटियो उपजाउ नहियेँ अछि। तहिना किछु राज्य एहनो अछि जैठाम अधिक बरखो भेने ओइठामक पैदावार सीमित भऽ गेल अछि। तैसंग किछु राज्यमे खाइबला अन्नक उपज तँ कम होइए मुदा तेलहन, कपास इत्यादिक उपज अधिक होइए। सभ किछु होइतो किछु राज्य एहनो तँ छेलैहे जे अपन भरण-पोषण करैत आनो-आन राज्यकेँ अन्न दइ छल। पंजाब राज्य, जैठाम माटियो ओहन उर्वर शक्तिबला नहि अछि आ बरखो कम होइ छै, मुदा ओइठाम एहेन कृत्रिम बेवस्था[62] केने छल जइसँ अपेक्षाकृत नीक पैदावार छेलइ।

आजुक बिहारक नक्शा तँ बदैल गेल अछि मुदा जखन उत्तर बिहार आ दच्छिन बिहार छल, माने बिहार आ झारखण्ड मिला कऽ जखन एक राज्य छल तखन उत्तर बिहार जहिना धार-धुरसँ भरल छल, जइसँ दाहियो होइते अछि, तहिना दच्छिन बिहार पहाड़, खानसँ सेहो भरल छल जइसँ कृषि क्षेत्र कम रहने कृषिक पैदावार कम रहबे करए।

मिथिलांचल सहित उत्तर बिहारमे धार-धुर तँ अछिए मुदा कृत्रिम बेवस्था–नहर, बोरिंग–क तँ अभाव अछिए, जइसँ ऐठामक कृषि-कार्य अनबिसवासू बनले अछि। रौदी-दाहीक खेल साले-साल चलिते अछि। जइसँ अपना ऐठाम कृषि कार्य पंगु बनल अछि। अखन धरिक जे कृषि बेवस्था अपना ऐठाम रहल ओ प्राचीन पद्धतिक अनुकूल रहल। जइसँ उपजक मात्रा निम्नसँ निम्नतर स्तरमे रहल।

देशक सोझा जखन अन्नक समस्या उठि कऽ ठाढ़ भेल तखन केन्द्रो सरकार आ राज्यो सरकारक नजैर कृषि दिस उठल। ओना, अनेको रंगक अन्नक खेती-बाड़ीक लेल अनुकूल क्षेत्र बिहार छीहे मुदा उपजाक जे रेशियो हेबा चाही से नहियेँ छल। सरकारक नजैर उठने किसानकेँ रंग-रंगक सहायताक सुविधा भेटल। पूसा, ढोली, सबौर इत्यादि जगहमे कृषि

फार्म सेहो बनल, जैठाम कृषिक पढ़ाइक संग-संग अनुसन्धान सेहो हुअ लगल। जइसँ अन्नक नीक-नीक बीजक अनुसन्धान भेल, जे परम्परासँ अबैत पैदावारमे धक्का मारलक। माने डेढ़िया-दोबर-तेबर उपजाक बढ़ोत्तरी भेल। जइ खेतमे कच्ची मन कट्ठा उपजै छल, तइमे तीन-तीन, चरि-चरि पक्की मनक उपज हुअ लगल।

तैसंग कोसी नहरक लाटमे आनो-आन नहरक खुनाइ हुअ लगल जइसँ खेतक सिंचाइ होइत। बैंकक माध्यमसँ एक-तिहाइ, चौथाइ अनुदानित रूपमे बोरिंग-पम्पसेट लॉनक माध्यमसँ किसानकेँ भेटए लगल। जइसँ गाम-गाममे किछु बोरिंग भेने उपजमे किछु-ने-किछु बढ़ोत्तरी सेहो भेबे कएल। अखन धरि जइ खेतमे मात्र छाउर-गोबर देल जाइत छल, रसायनिक खादक प्रयोग नहि भेल छल, तइ सभ खेतमे रसायनिक खादक संग-संग गोबर-घास-पातसँ निर्मित जैविक खाद सेहो पड़ए लगल। तेतबे नहि, किसानकेँ जैविक खाद बनाएबो सिखौल गेल।

अखन धरि जे सरकारी विभागमे कृषि विभाग मृतप्राय छल ओइमे जान फूकल गेल। ब्लॉकमे कृषि विभागक अलग कार्यालय बनल। गाम-गाममे कृषि विभागक कर्मचारीक[63] बहाली भेल, जेकरा माध्यमसँ गामक किसानकेँ नव तकनीकक जानकारी देल जाए लगल। ब्लॉक स्तरपर सरकारी कृषि फार्म सेहो स्थापित भेल।

सरकारी माध्यमसँ किसानकेँ खाद-बीज, कृषि-यंत्र अनुदानित दरपर कर्ज रूपमे सेहो भेटए लगल। पूसा, ढोली, सबौर फार्मक माध्यमसँ अन्नक संग तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरीक बीजक संग गाछ सेहो उपलब्ध करौल जाए लगल।

‘जय-जवान, जय किसान’क नारा देशमे बहल। अखन धरिक जइ किसानक शकल-सूरत बिगैर गेल छल ओइ किसानमे नव उत्साह जगल, कृषि पैदावार बढ़ल, देश अन्नक मामलामे आत्म-निर्भर भेल। आत्म-

निर्भर भोजनक मामलामे जरूर भेल मुदा कृषि पैदावारमे पंगुपन बनले रहल। जैठाम कृषि आधारित माने कृषि पैदावारसँ पैंतालीस प्रतिशतसँ अधिक कच्चा माल कारखानाकैं भेटै छै, ओ उपज ठमकले रहि गेल। जइसँ कल-कारखानाक विकास बिहारमे नइ भेल।

ओना, जहिना एक दिस प्रगतिक दिशामे देशक शक्ति बढ़ल तहिना समाजक किछु लोक ओकर विरोध नहि केलैन सेहो बात नहियेँ अछि। रंग-रंगक अफवाह सभ उठबे कएल जइसँ प्रगतिमे बाधा नइ भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अन्ध-बिसवास आ रूढ़िवादी विचार सेहो जमि कऽ विरोध करबे केलक।



शब्द संख्या : 1945, तिथि : 4 जून 2018

9.

उमेरक चलैत अपन गिरैत दैहिक शक्तिकेँ अँकैत देवचरण हरिचरणक बिआह करब अनिवार्य बुझलैन। अनिवार्यक दू कारण भेलैन, पहिल- अपन आगू बढ़ैत परिवारकेँ अपना आँखिये देखब, जइसँ मनमे तृप्ति जगैत अछि। दोसर कारण मनमे ईहो भेलैन जे ओना हरिचरणकेँ पढ़ाएब-लिखाएबसँ लऽ कऽ ओकर बिआह-दान करब धरिक काज राधाचरणक कर्तव्यक सीमामे अछि मुदा ऊहिगर बेटाकेँ नहि रहने आ तैसंग हरिचरणक जीवनचर्याकेँ देख देवचरणक मनमे ईहो भेलैन जे जेहेन पोता क्रियाशील अछि, ओहने क्रियाशील लड़कीक संग जँ बिआह कए देबै तँ ऐगला पीढ़ीक जीवन-यापन संतोषप्रद हेबे करत। यएह इच्छा ने सभ परिवारमे वृद्धजनक होइ छैन जे अखुनका जे पारिवारिक जिनगी अछि ओ दिनानुदिन अगुआइत चलए।

ओना, मिथिलांचलो तँ मिथिलांचले ने छी। जहिना कुशाग्र बुधिक लोक अनुकूल परिस्थिति भेटने नीक-सँ-नीक विद्वता, नीक-सँ-नीक कलाकारिता, नीक-सँ-नीक टेकनोलॉजी आ नीक-सँ-नीक जिनगीक पारखी बनैए तहिना ने नीक-सँ-नीक भोगवादियो आ नीक-सँ-नीक जोगवादियो बनिते अछि। अपना सबहक मिथिला वएह ने छी जे जइ पत्नीकेँ सहयोगी-संगी बुझै छी ओइ पत्नीकेँ पारिवारिक कोनो क्रिया-कलापक भार नइ पड़ैन, तँए भानस करैले भनसिया, पानि भरैले पनिभरनी, कपड़ा-लत्तासँ लऽ कऽ घरक निपाइ-पोताइ तक अनके[64]

सिरे-हाथे होइ। मुदा से नहि, ओहनो मिथिलांचल तँ अछिए जैठाम बेटा-पुतोहु अपन पाछूसँ अबैत खनदानी परिवारमे पिताक अनुसरण करैत सहयोगी बनि तिल-तिल, कण-कणक अनुभवक अभ्यास करैत तिले-तिल, कणे-कण अबैबला काल्हुक अनुकूल बनबैत अपन भविसकेँ अनुकूलतामे पीअबैत, निर्माण करैत आगू बढ़ैए।

मिथिलांचलक ओइ हिस्सामे देवचरण हरिचरणक बिआह करब मनमे रोपि लेलैन जेतए अपने सन सीमान्त किसान[65] परिवार हुअए। जइ परिवारक जन-जन अपन भविसक पाछू लगि श्रम-संस्कृतिकेँ अंगीकार करैत श्रमशील-शिलाक क्रमगतिसँ निर्माण-कार्यमे लागल हुअए। ओना, ई इच्छा तँ अपन मनक भेल, मुदा जैठाम बरपक्ष छी तैठाम अपने उपकैर कऽ केना कन्यागतकेँ कहब जे अहाँ अपन कन्याक बिआह हमरा परिवारमे करू। एक तँ अनेरे लोकक मनमे उठत जे जाबे लड़का खोमाह नइ छै ताबे एहेन चर्च किए करै छैथ। तैसंग ईहो तँ अछिए जे मनोनुकूल कन्या नइ रहने एकटा-दूटा कन्यागतकेँ तँ बहटारि सकै छी, मुदा जँ तइसँ बेसीकेँ बहटारए चाहब तँ अनेरे ने सभ कहबे करत जे फल्लाँ लड़काक सिरे तेहेन बौगली[66] सिया कऽ रखने छैथ जे कन्यागत जँ अपन डीहो-डाबर बेच कऽ लगा देत तैयो ने भरतैन...!

संजोग बनल, हरिचणक बिआह समस्तीपुर जिलाक ओहन गामक किसान परिवारमे भेल, जे परिवार अपन कृषि क्षेत्रकेँ ओहन बिसवासू रूपमे बना कऽ ठाढ़ केने अछि, जइसँ इंजीनियर, डॉक्टर तकक समावेश परिवारेमे होइक सम्भावना बनल अछि। जेहने देवचरण खेतिहर पुतोहु चाहै छला तेहने पुतोहु भेटने अपन सोलह सालक पोताक बिआह सोलह सालक कन्या- परमेसरीक संग केलैन। भुखाएल-दहेजियाएल मन देवचरणकेँ रहबे ने करैन, तँए हरिचरणक बिआहसँ सोल्होअना तृप्ति देवचरणकेँ भेलैन।

समयक अनुकूल तँ राधाचरणक सुधार नहियेँ भेलैन मुदा

बेवहारिक रूपमे दूटा महींसिक सेवा करैक भार सिरचढ़ भेने धीरे-धीरे सुधरए लगलैन। सुधार देख देवचरण समयक अनुकूल महींसिक सेवाक संग आरो-आरो काज करैले राधाचरणकेँ चरिया-चरिया चरैबेति बना लेलैन। ओना, उमेर पाबि सेहो राधाचरणक मनमे परिवारक प्रति प्रेम जागल, जइसँ बकलेल-ढहलेल जकाँ जे वौआइत रहै छल तइमे सुधार भेल। ओना, परिवारमे परिवारजनक बीच जे सम्बन्धसूत्र अछि, माने पैछला पीढ़ीक बेटा-भातीज, नाइत-पोतासँ लऽ कऽ वर्तमान पीढ़ीक भाए-भौजाइ आ तहिना ऐगला पीढ़ीक काका, पिता, बाबा-नाना इत्यादि, सेहो अछिए। जहिना भक्त आ भगवानक बीच अभक्त रूप अछि तहिना ज्ञान आ कर्मक बीच सेहो अछिए। जखने दुनूक बीचक अभक्त रूप मेटा भक्त रूपमे परिणत होइए तखने जिनगीक सार्थकता सफल हुअ लगै छइ। जे हरिचरण आ देवचरणक बीच भेल। ओना, देवचरण किसानी जिनगीक मर्मभेदी रहनौं अपन जिनगीमे पंगु बनल रहला, मुदा अपन पंगुपनक कारणकेँ बुझि देवचरण अपनाकेँ ओही जिनगीमे समावेश करैत परिवारक गाड़ीक जुआकेँ कन्हेठ आगू मुहेँ खिंचते रहला, जइसँ अभावोकेँ कुभाव नहि बुझि सुभाव बना जीवन-बसर करबे केलाह, जे अपन सभ गुण-शील हरिचरणकेँ दान-दैछनामे दैत ऐ दुनियासँ विदा भेला।

देवचरणकेँ चौदह बर्ख मृत्यु भेना भऽ गेलैन। हरिचरण बतीस-तैंतीस बर्खक भऽ गेल। तीनटा सन्तानो भेलइ। राधारचरण सेहो चारिमपनमे पहुँच गेला। देशमे हरित क्रान्तिक रूपमे नव जागरण भेल। परम्परासँ अबैत कृषि-कार्यमे बदलाउ आएल। जेतए सिंचाइक करीन छल ओ बदैल पम्पसेट आएल। खेत जोतैक जे जनकजीक समैयक तीनबित्ता हर छल ओइक जगह ट्रेक्टर आएल। तेतबे नहि, धान कुटैक ढेकी बदलल, चूरा कुटैक उक्खैर बदलल, पाथरक जत्ता बदलल, तेल पेड़ैक कौल्हु बदलल इत्यादि-इत्यादि किसान परिवारसँ लोप भेल आ

नव-नव तकनीकसँ सिरजल लोहाक इंजिन लोकक हाथमे आएल, जेकर रफ्तार दसगुणासँ लऽ कऽ हजारगुणा धरिक अछि। ओना, जइ गतिये किसानी तकनीक आगूसँ उतरल तइ हिसाबे किसान नहि उतैर सकल मुदा साफे नहियेँ उतरल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। कियो उतरल वा नहि उतरल, चढ़ल वा नहि चढ़ल मुदा हरिचरण, जे बतीस-तैंतीस बर्खक जवान किसानक रूपमे उतरबे कएल। से ओइ भाव-रूपमे उतरल जहिना एक जवान हाथमे बन्दूक उठा अपन मातृभूमिक रक्षार्थ सीमापर माघक शीतलहरीक पाला, जेठक रौद आ भावदक बर्खाक अट्ठा-बज्जर सहैत अपन दायित्वक निर्वहन करै छैथ, तहिना ने जवान किसान सेहो अपन मातृभूमिक सेवार्थ भूख-पियास मेटबैले माघक पाला, जेठक रौद आ भादवक गर्जन-तर्जनकेँ अङ्गेजैत अपन दायित्वक निर्वहन करै छैथ।

हरिचरण अपन तीनू बीघा जमीनकेँ सामाजिक रूपमे अदैल-बदैल, रकबाक हिसाबसँ दस कट्ठा घाटा उठबैत अढ़ाइ बीघा खेत एकठाम केलक। अपन जिनगीक सूत्रकेँ पकैड़ चारि इंचबला बोरिंग आ पाँच हॉर्स पावरबला इंजिनक साधन बना अपन फसिल सिंचाइक बेवस्था सेहो केलक। तैसंग अढ़ाइयो बीघा खेतमे ओतेक काज ठाढ़ केलक जइमे भरि दिन दुनू परानी अपन दुनियाँ बुझि अपनाकेँ सोल्होअना समर्पित केलक। तेतबे नहि, अस्पतालक डॉक्टर आ कृषि फार्मक कुशल किसान जकाँ अपन बाल-बच्चाकेँ सेहो देखा-सुनी कराइये रहल अछि। तैसंग सालो भरिक खेतीपर दैत सुअन्न, सुफल आ सुसाग-सब्जीक केतेक जरूरत मनुखकेँ अछि, तहूक उपार्जन कइये रहल अछि।

मिथिलांचलक बीच अपन मिथिला बना फलक नाओंपर खाली आमेक गाछी-कलम नहि, सालो भरिक जे फलक क्रम अछि तइ हिसाबक फल, तहिना ओइ हिसाबक तीमन-तरकारीक संग अन्नो उपजाइये रहल अछि।

अपन साधक जे क्रिया अछि तइमे तँ हरिचरण अपन सफल स्वरूप देख रहल अछि, मुदा आगूक जिनगीकेँ देखैत हरिचरण जखन अपन वृहद् स्वरूप देखए लगैए तखन पंगुपन आगूमे नचिते छइ। ओना, केतबो पंगुपन हरिचरणक आगूमे किए ने नाच करए, मुदा किसानक समाजमे किसान वृन्द कहेबाक अधिकारी तँ अछिए।



शब्द संख्या : 935, तिथि : 6 जून 2018

उपन्यासकार

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे 5 जुलाई 1947 इस्वीमे भेलैन। मण्डलजी हिन्दी एवं राजनीति शास्त्रमे एम.ए.क अहर्ता पाबि जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यमे संलग्न भऽ रूचि पूर्वक समाज सेवामे लागि गेला। समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी एवं सामन्ती व्यवहार सामाजिक विकासमे हिनका वाधक बुझि पड़लैन। फलत: जमीन्दार, सामन्तक संग गाममे पुरजोर लड़ाइ ठाढ़ भऽ गेलैन। फलत: मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे व्यतीत केलाह। 2001 इस्वीक पछाइत साहित्य लेखन-क्षेत्रमे एला। 2008 इस्वीसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे हिनक रचना प्रकाशित हुअ लगलैन। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक मौलिक विधामे हिनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़े आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन।

मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। ई अपन सतत क्रियाशीलता ओ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह

सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादेमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साक्षर दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल सेमिनरी द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक क्षेत्रमे अमूल्य योगदान हेतु ज्योत्स्ना-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. बाबू साहेव चौधरी सम्मान- 2018', चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार- 2021' तथा साहित्य ओ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022'

रचना संसार : *1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-*

विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. मोड़पर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम क्षण, 37. कुण्ठा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सतमाए, 41. समझौता, 42. तामक तमघैल, 43. बीरांगना- एकांकी। 44. तरेगन, 45. बजन्ता-बुझन्ता-बीहैन कथा संग्रह। 46. शंभुदास, 47. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सतभैंया पोखैर, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समरथाइक भूत, 54. अप्पन-बीरान, 55. बाल गोपाल, 56. भकमोड़, 57. उलबा चाउर, 58. पतझाड़, 59. गढ़ैनगर हाथ, 60. लजबिजी, 61. उकड़ू समय, 62. मधुमाछी, 63. पसेनाक धरम, 64. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 65. फलहार, 66. खसैत गाछ, 67. एगच्छा आमक गाछ, 68. शुभचिन्तक, 69. गाछपर सँ खसला, 70. डभियाएल गाम, 71. गुलेती दास, 72. मुड़ियाएल घर, 73. बीरांगना, 74. स्मृति शेष, 75. बेटीक पैरुख, 76. क्रान्तियोग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 79. दोहरी हाक, 80. सुभिमानी जिनगी, 81. देखल दिन, 82. गपक पियाहुल लोक, 83. दिवालीक दीप, 84. अप्पन गाम, 85. खिलतोड़ भूमि, 86. चितवनक शिकार, 87. चौरस खेतक चौरस उपज, 88. समयसँ पहिने चेत किसान, 89. भौक, 90. गामक आशा टुटि गेल, 91. पसेनाक मोल, 92. कृषियोग, 93. हारल चेहरा जीतल रूप, 94. रहै जोकर परिवार, 95. कर्ताक रंग कर्मक संग, 96. गामक सूरत बदैल गेल, 97. अन्तिम परीक्षा, 98. घरक खर्च, 99. नीक ठकान ठकेलौं, 100. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 101. संचरण, 102. भरि मन काज, 103. आएल आशा चलि गेल, 104. जीवन दान तथा 105. अप्पन साती- लघु कथा संग्रह।

Endnote

---

[1] पुरनी गाछक कमल फूलक फल

[2] कमजोर, अधला

[3] जनसंख्याक हिसाबसँ

[4] खेत-पथार

[5] सुगर पोसबकेँ

[6] अंगरेज शासन

[7] भूमिक मालगुजारी

[8] असुलनिहारकेँ

[9] सुभाष चन्द्र बसु

[10] पैघ मुसलमान माने भूपतिकेँ

[11] अस्त्र-शस्त्रक माने भेल अपन बन्दूक-गोलीक संग कोर्ट-कचहरीमे कानूनी उलझन।

[12] भूपति (पैघ किसान) आ देवचरणक बीच

[13] चरित्रकेँ

[14] पाहीपट्टीक

[15] कामत

[16] देवचरण

[17] बीतल समयक

[18] चौकारी टेक्स असुलनिहार

[19] भागवत बचनिहार

[20] वैदिक विदुषीक

[21] हर जोतैले

[22] विकसित समाजमे

[23] 1917 इस्वी

[24] कम्युनिष्ट

[25] सोसलिस्ट

[26] तकनीक

[27] उर्वर

[28] उपज

[29] कृषि कार्यक जानकार

[30] भूखक

[31] धारक पानिकेँ घेरि

[32] कृषि सम्पदाक

[33] पेटक

[34] जमीन

[35] खेतकेँ

[36] बासभूमिकेँ

[37] बीस बीघाक भीतर

[38] भारत

[39] मनुखक जिनगीकेँ

[40] जमीन्दार वर्ग

[41] शरीरक रंग-रूप

[42] मनुखक अवस्था

[43] ऐगला भागमे

[44] दैहिक शक्ति

[45] शारीरिक श्रमक खियालसँ

[46] पारिवारिक जिनगी-ले

[47] मनुखक जिनगीक क्रिया

[48] गतिशी जिनगीसँ

[49] श्रेष्ठजन

[50] पत्नी, पुतोहु, आ पोता

[51] कानूनी अधिकार

[52] सूत

[53] कपड़ा बनबैकेँ

[54] बिनु इंजिनक

[55] माने छह मास बैसारीक समस्या

[56] राटनपर कुशियार आबैक आदेश पत्र

[57] इंगलैंडक समानक

[58] जमीनक बीच समस्या

[59] चेकोस्लोवाकिया

[60] जेठक बर्खाक मेघक

[61] गहुम, बाजरा

[62] नहर, बोरिंग आ भखड़ा-नांगल डैमसँ सिचाइक बेवस्था

[63] भी.एल.डब्ल्यू.क

[64] नोकरे-चाकरेक

[65] तीन बीघा जमीनबला किसान

[66] रूपैआ रखैबला